एक सी बी टी प्रकाशन

अपहरण



अपहरण

लेखिका : मारग्रेट आर. भट्टी
चित्रकार : सुबीर राय
अनुवाद : मनमोहिनी पुरी



चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा सन् 1983 में आयोजित बाल-साहित्य लेखक प्रतियोगिता में "किडनैपिंग एट बीरपुर" नामक पुस्तक को प्रथम पुरस्कार मिला था। "अपहरण" उसी का हिन्दी रूपान्तर है।

लेखिका मारग्रेट आर. भट्टी नागपुर में रहती हैं औ. स्वतन्त्र रूप से लेखन कार्य करती हैं। उन्हें बी बी सी प्रतियोगिता में पुरस्कार भी मिल चुका है एवं उनके लेख व कहानियां अक्सर समाचार पत्र और पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

प्रथम संस्करण 1986
पुनर्मुद्रण 1990

APAHARAN

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

ISBN 81-7011-310-5

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नेहरु हाउस, ४ बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित और ट्रस्ट के मुद्रणालय इन्द्रप्रस्थ प्रेस, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित।

बड़े बंगले में सड़कू

बीरपुर कागज़ मिल के मालिक के बंगले पर एक सुबह एक दस वर्ष का लड़का पहुंचा और बोला, "मैं सड़कू हूं। मुझे पता चला है कि बगीचे में माली की मदद के लिये आप को एक आदमी की ज़रूरत है। मैं यह काम कर सकता हूं। मैं बड़े—बड़े पत्थर उठा सकता हूं। गहरी खाइयां खोद सकता हूं।

वह शानदार बड़े बंगले के सामने धूप में खड़ा होकर बोलता हुआ उन लोगों की ओर देख रहा था जो बरामदे की ठंडी छाया में बैठे थे। बरामदे में एक छोटा लड़का और सफेद बालों वाली एक महिला बैठी थी। पत्थर के खम्भे के सहारे खड़ा माली चिलम पी रहा था।

नौ वर्षीय भरत मनमोहन दुबे का इकलौता बेटा था। मनमोहन दुबे बीरपुर शहर के सबसे धनी व्यक्ति थे। भरत देखने में दुबला—पतला और गम्भीर चेहरे का था। पोलियो से दोनों पैर खराब होने से वह व्हील चेयर में ही कैद हो गया था।

भरत की दादी उसके पास बैठी सन्तरा छीलकर उसे खिला रही थीं। उस छोटे और गन्दे उम्मीदवार को देखकर जो माली का सहायक बनना चाहता था उनकी आंखें चमक उठी थीं। उन्हें उसका बात करने का तरीका और अपने दुबले बाजू मोड़ कर मांसपेशियां दिखाना कि वह बड़े-बड़े पत्थर उठा सकता है और गहरी खाइयां खोद सकता है, अच्छा लगा था।

उन्होंने पूछा, "तुमने अपना नाम क्या बताया था ?"

उसने फिर दोहराया, "सड़कू।"

"क्या कहा तुमने --सड़कू ?" रामबचन ने ऐसे दोहराया मानो साफ सुना न हो। "भई, यंह कैसा जानवर है ? "

सड़कू दांत दिखाकर हंसा। उसके अण्डाकार सिर पर छोटे-छोटे बाल थे और वह उसके शरीर की तुलना में बहुत बड़ा था। नाक छोटी और बड़े-बड़े नुकीले कान थे। घुटने और कोहनी के जोड़ गांठदार थे। वह लमछड़ जैसा व ढीला-ढाला लगता था।

रामबचन काम के बीच थोड़ा आराम कर रहा था और मज़ा लेने के अवसर का उसने स्वागत किया। उसने कश खींच कर धुंआ बाहर निकालते हुए कहा, "कौन से खेत में पैदा हुआ था यह शलजम? कौन जात है सड़कू।"

"मानुष जात।" सड़कू ने जोश में अपनी छाती ठोकते हुए कहा। उसकी कमीज छाती पर से खुली थी और उसकी पसलियां साफ नज़र आ रही थीं। उसकी बदरंग निकर के किनारे फटे हुए थे और उसमें धागे लटक रहे थे। निकर के पेंदे में हुए छेद को उसने उसी सुबह तारकोल लगे कागज़ से बन्द कर दिया था। फिर उसने कागज़ और कपड़े को मिट्टी भरी सड़क पर ऐसे घिसा था कि दोनों एक रंग के हो गये थे।

"मानुष जात।" उसने फिर दोहराया और यह प्रमाणित करने को

तैयार हो गया कि वह वास्तव में ही मनुष्य जाति का है। वह बरामदे के ज़रा और निकट आ गया और धीमी आवाज़ में गम्भीरता से बोला, "सड़कू हमारे परिवार का नाम है। मुझ से पहले मेरे पिता का यही नाम था। उनसे पहले उनके पिता का, उससे पहले उनके पिता के पिता का....."

भरत और उसकी दादी उसके गम्भीर होने की कोशिश पर हंस पड़े। वृद्ध माली भी दांत निकाल रहा था। कश खींचने के लिये उसका मुंह आधा खुला था।

"अब आप यह कहानी सुनिये," सड़कू ने एकदम विषय बदलते हुए कहा और बड़ी अच्छी हिन्दी बोलने लगा। वे सब आश्चर्यचकित हो उसकी बात सुनने लगे।

"दक्षिण पथ कहते थे उसको— एक मुख्य सड़क जो दक्षिण की ओर जाती हुई उन पहाड़ियों में से गुज़रती थी जहां बहादुर और योद्धा लोग रहते थे। वे लोग उन यात्रियों से जो इस सड़क से जाते थे कर वसूल करते थे। इसलिये लोग इन्हें सड़कू राजा कहते थे। जो लोग कर नहीं देते थे उन्हें ये लोग सबसे ऊंचे पेड़ से लटका देते थे। लटकती लाशें हवा में चक्कर खाती रहतीं। गिद्ध और चीलें उनका मांस नोच कर खा जाते। फिर कंकाल नीचे गिर पड़ते और उस रास्ते से जाने वाले यात्रियों के लिये चेतावनी का कार्य करते....."
करते....."

सड़कू को तलवारों की आवाज़ अच्छी लगती थी और वह उन आवाज़ों को जबान घुमा कर बोल रहा था। उसे सब कुछ मुंह ज़बानी याद था। वह जल्दी-जल्दी कहानी सुनाते हुए अपनी बात को वजन देने के लिये रुक जाता और चेतावनी के लिये धीरे-धीरे बोलता। जब वह फांसी के फंदे की बात सुना रहा था तो उसकी आवाज़ ऊंची हो गई और हड्डियां नीचे गिरने की बात कहते समय बहुत धीमी।

पीपलगढ़ का राजा दक्षिण पथ पर एक बड़ी सेना के साथ दक्षिण

की ओर जा रहा था। सड़कू राजाओं ने कहा, "रुक जाओ, कर दो या मरो।"

"मैं पीपलगढ़ का राज गजेन्द्र सिंह हूं। अपने नाम की तरह हाथी सा मजबूत और चीते जैसा भयानक। क्या मैं वृद्ध महिलाओं को डरा-धमका कर सोना—जवाहरात छीनने वाले बदमाशों से डर जाऊंगा। कभी नहीं।"

सड़कू ने अपनी दुबली-पतली बांहें ऊपर उठाईं। "एक तरफ था पीपलगढ़ का राजा और दूसरी तरफ थे दक्षिण पथ के सड़कू राजा।" फिर उसने अपनी दूसरी बांह हिलाई।

इस लड़ाई का विवरण जो उसने सुनाया उसे पूरी तरह समझना कठिन था। कथक्कड़ कभी तलवार चलाता, चीखता, उछलता—कूदता और लड़ाई की ऐसी आवाज़ें निकालता कि छत पर बैठे कबूतर तुरन्त उड़ गये।

लेकिन खूनखराबा हुआ था, तबाही मची थी, जब सड़कू लड़ाके पीपलगढ़ की सेना को काटते-रौंदते हुए आगे बढ़े थे। सड़कू वंश का अंतिम व्यक्ति तभी सांस लेने के लिए रुका, जब विरोधी पक्ष का अंतिम आदमी भी मारा गया।

"यह दक्षिण पथ के सड़कू राजाओं की कहानी है," उसने शान से कहा। "और मैं उसी सड़कू वंश का हूं।"

भरत ने सिर को पीछे झटका दिया और ठट्ठा मार कर हंस पड़ा। "शाबाश, सड़कू।" वृद्ध महिला ने कहा, "तुम्हारी कहानी बहुत अच्छी थी।"

रामबचन चुप ही रहा। उसने अपनी चिलम बुझा दी। शायद उसे घास में छिपा पत्थर नहीं दिखाई दिया था या वह फूहड़पने से उतरा था। एकाएक वह डगमगा कर आगे की ओर झुक गया। एक मोटा बाजू हवा में लहराया और उसने सड़कू राजाओं के अंतिम वंशधर को वहीं ढेर कर दिया।

"अरे दैया। अरे दैया रे।" वृद्ध माली बुरी तरह हंसते हुए चिल्लाया और बोला, "अरे, यह कैसे हो गया दक्षिण पथ के बहादुर और विजयी राजा?"

भरत हंसने लगा। लेकिन दादी मां के चेहरे पर चिन्ता के भाव थे। वह झट उठीं और बोलीं, "अरे रामबचन, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था।" फिर पूछा, "सड़कू तुम्हें चोट तो नहीं लगी?"

सड़कू ने उनकी बात का उत्तर नहीं दिया। उसने एक लम्बीं सांस ली, अपनी टांगें सिर से ऊपर उठाकर कलाबाजी लगाई और झुकते हुए वह आसानी से हाथों के बल खड़ा हो गया। फिर एक खिंचे हुए धनुष की तरह वह धीरे–धीरे पीछे की ओर झुकने लगा और तब तक झुकता गया जब तक उसके पैर फिर से जमीन पर नहीं जा लगे। वह सीधा खड़ा हो गया। पतले–ताजे बांस की तरह उसका शरीर बहुत लचकदार था। जिस आसानी से उसने अपनी देह को झुकाया, हिलाया, मोड़ा, धनुषाकार बनाया और कूदा था उसे रामबचन भी देखकर अवाक् खड़ा घूरता रह गया।

जब वह अपने पहले मालिक नामदेव भट्ट कठपुतली वाले के पास काम करता था तो उसने यह सब कुछ बहुत बार किया था। वह सड़कू पुतली वाले की पुतलियां एवं साजोसामान उठाता, ढोल बजाता, कलाबाजियां दिखाता और मजमा लगाता था।

उसने वे कहानियां भी याद कर लीं थीं जो नामदेव कठपुतली का नाच दिखाते हुए सुनाता था। कभी सड़कू उनकी बातचीत में भी भाग लेता था। वास्तव में जो कहानी उसने अभी-अभी सुनाई थी उसका कुछ हिस्सा नामदेव के कथा भंडार से लिया गया था। यह कहानी सुनाने में ज्यादा अच्छी लगती थी बजाए यह कहने कि उसका जन्म सड़क के किनारे हुआ था और शायद उसकी मां को उसके लिए इससे अच्छा नाम नहीं सूझा था।

अपने प्रदर्शन को समाप्त करने के लिये सड़कू लॉन में जाकर

कलाबाजियां खाने लगा। उसकी कलाबाजियां इतनी अच्छी, फुर्तीली और संतुलित थीं कि भरत ने तालियां बजा कर उसकी सराहना की।

"सड़कू बेटा, हम सभी यह मान गए कि तुम बड़े होशियार हो," रामबचन बोला, "लेकिन राजा साहब, अब मेरे पीछे आइये जिससे मैं आपको कुछ काम की चीज़ें सिखाऊं।"

वह अपने भारी जूतों से खट-खट चलता हुआ, आगे जाकर मुड़ा और आंखों से ओझल हो गया।

"क्या मुझे काम मिल गया?" सड़कू ने उत्सुकता से पूछा। "माताजी, क्या मुझे नौकरी मिल गई?"

"हां," उन्होंने हंस कर कहा, "देखो, तुम ठीक से काम करना और रामबचन का कहना मानना।"

खुशी भरी आवाज़ें निकालते हुए सड़कू फिर पहिए की तरह कलाबाजियां खाता हुआ माली के पीछे-पीछे चल दिया।

सड़कू का रामबचन से बदला

बंगले के पीछे जाकर रामबचन ने अपनी पगड़ी उतार कर घास पर फेंक दी, कुरता उतारा और धोती घुटने तक ऊपर कर, कमर में खोंस ली। वह एक सूखा कुआं गहरा कर रहा था जिससे वर्षा का पानी बगीचे के लिये जमा किया जा सके। माली ने जीवन भर यहीं बड़े बंगले पर ही काम किया था। अब वह बूढ़ा हो रहा था। उसकी दृष्टि भी कमज़ोर हो गई थी लेकिन वह रिटायर नहीं होना चाहता था। माताजी के बहुत कहने से ही वह एक सहायक रखने को तैयार हुआ था। "लेकिन अस्थायी तौर पर कुछ दिनों के लिए ही रखिएगा," उसने कहा था।

"सड़कू, तुम्हारा काम है कूड़ा—कर्कट और गिरे हुए पत्तों को कुएं में से निकाल कर आम के उन पेड़ों के नीचे डालना," उसने लड़के को बताया था।

सड़कू ने उस तरफ देखा जिस ओर माली ने संकेत किया था "जहां वह गाय चर रही है?" उसने सही तौर से जानने के लिये उत्सुक स्वर में पूछा।

"हां," रामबचन ने कहा और स्वयं बड़ी सावधानी से चर्खी और रस्सी की मदद से नीचे कुएं में उतर गया।

यह काम सड़कू को बहुत सख्त लगा। उस दिन उसने पेट भर खाया भी नहीं था। हीरो होटल का बचाखुचा खाना उसका पेट भरने के लिए काफी नहीं था। होटल का मालिक रात को होटल धोने, रसोई घर से कचरा उठा कर पिछवाड़े डालने और मेज—कुर्सियों को करीने से एक दूसरे पर रखने के बदले में यह खाना देता था।

"खींचो, खींचो, ओह दक्षिण पथ के राजा," रामबचन नीचे से चिल्लाया। सड़कू को कूड़े से भरी प्लास्टिक की बाल्टी को निकालते समय हांफते सुन कर वह हंसा।

सड़कू हांफते—हांफते तेज़ी से आम के पेड़ों की तरफ चल पड़ा। वह अभी आधे ही रास्ते गया था कि बूढ़ा माली चिल्लाने लगा, "अरे, अरे सड़कू, गधे की दुम। क्या तुम सारा दिन मुझे यहीं इन्तज़ार करवाते रहोगे?"

जब सड़कू ने बाल्टी फिर से नीचे उतारी तो माली ने मिट्टी के ढेले उस पर फेंके। एक घंटे के परिश्रम से सारे पत्ते साफ हो गये। अब रामबचन का फावड़ा मिट्टी और पत्थरों से टकराने लगा और बाल्टी अधिक भारी हो गई।

"क्या बूढ़ी गाय अभी भी वहां है?" माली ने पूछा।

सड़कू ने ऊपर से कुएं में झांका तो रामबचन द्वारा फेंके गए ढेलों से अपने को बड़ी फुर्ती से बचाया।

"हां, वहीं है। लेकिन चर नहीं रही है?" उसने उत्तर दिया।

"तो उसे खुले खेत की ओर ले जाओ। उसे हांकना मत। पकड़ कर ले जाना, क्योंकि वह अंधी है। इसी कारण माताजी उसे अहाते में चरने देती हैं। मैंने उसके गले में घंटी बांध दी है जिससे मुझे पता चलता रहे कि वह कहां है। वह मेरी फूलों या सब्जी की क्यारियों में चली जाये यह बरदाश्त नहीं मुझे।"

सड़कू ने गाय की रस्सी पकड़ी और उसे हरे घास के टुकड़े की ओर ले गया। वह उसके गले में बंधी पीतल की घंटी देख रहा था जब माली का चिल्लाना सुन कर वह वापस कुएं पर आ गया। उसने घर की ओर देखा, भरत पिछले बरामदे में मास्टर साहब से पढ़ रहा था। उसकी दादी आराम कुर्सी में पास बैठी सिर झुकाये सिलाई कर रही थीं।

सड़कू के बाजू दर्द करने लगे थे। उसे लग रहा था कि उसके कधों के जोड़ खुल गये हैं और उसके बाजू किसी समय भी नीचे गिर पड़ेंगे। उसे लगा कि रामबचन जानबूझ कर बाल्टी को भारी से भारी ईंट–पत्थरों से भर रहा था और फिर चिल्लाता था, "खींचो, महाराजा साहब खींचो।"

जब सड़कू अगली बार आम के पेड़ों के नीचे बाल्टी खाली करने गया तो उसने गाय की घंटी उतार ली। वह उसे इस तरह पकड़ कर कुएं के पास लाया कि घंटी बजे नहीं। काम करते माली की बड़बड़ाहट नीचे से सुनाई दे रही थी।

रामबचन कुछ देर व्यस्त हो काम करता रहा और जब किसी कारणवश उसने ऊपर देखा तो उसे लगा कि यह तो गाय की घंटी की आवाज़ है। टिन-टिन-टिन। 'अरे तो सड़कू उसे दूर नहीं ले गया। वह ज़रूर बंगले की तरफ चली गई है।'

लेकिन कोई उत्तर नहीं आया। घंटी बजनी बन्द हो गई। लगता था कि उसकी आवाज़ सुन कर सुन्दरी रुक गई थी। लेकिन उसे

गलतफहमी हुई थी क्योंकि गाय के भारी पदचाप सुनाई दे रहे थे। वह सीधी खुले कुएं की ओर आ रही थी।

टिन। टिन।टिन। उसकी घंटी बज रही थी। "अरे, सड़कू उसे मोड़ दे। उसे पेड़ों की ओर ले जा।" वह नीचे से चिल्लाया। उसका चिल्लाना सुन कर भरत, उसकी दादी और मास्टर साहब ने मुंह उठा कर उस ओर देखा। उन्होंने देखा कि सड़कू हाथ में घंटी लिये कुएं के पास खड़ा है। वह पैर उठा-उठा कर ज़ोर से पटकता है तो घंटी टिन-टिन-टिन बज उठती है। वह पैर कभी कुएं के बाईं ओर पटकता है तो कभी कभी दाईं ओर।

"सड़कू ... सड़कू। अरे, यह लड़का कहां गया? शू—सुन्दरी हट।" माली चिल्लाया। अब ऐसे लग रहा था कि वह कुछ घबराया हुआ है। जिस रस्सी से वह नीचे उतरा था जब उसने वह पकड़ी तो वह उसके हाथ में ही आ गई क्योंकि किसी ने उसे चर्खी से खोल दिया था। अब बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था। वह कुएं में फंस गया था। अन्धी गाय अब किनारे पर पैर रखेगी तो उसके ऊपर ही आ गिरेगी।

"माताजी, माताजी, मुझे बचाओ," वह गिड़गिड़ाकर बोला। उसकी पुकार सुन कर भी कोई नहीं आया। क्या उन्होंने उसकी पुकार नहीं सुनी। बंगले या नौकरों के क्वार्टर से वह जगह इतनी दूर तो नहीं है कि उसकी आवाज़ न सुनाई दे। "बचाओ। बचाओ।" वह फिर चिल्लाया।

कई नौकर उसका चिल्लाना सुन कर बाहर निकले तो सही लेकिन उसको बचाने को इसलिये नहीं आये क्योंकि उन्हें ऐसा नहीं लगा कि वह किसी खास खतरे में है। वे खड़े होकर उसे देखते हुए मज़ा लेने लगे।

रामबचन अन्धी गाय को वहां से दूर भगाने के लिये मिट्टी के ढेले ऊपर फेंकता रहा। लेकिन गाय के खुरों की आवाज़ ऊपर से



अभी भी आ रही थी और अब ऊपर से मिट्टी और कंकर-पत्थर भी गिरने लगे थे। उसे पक्का विश्वास हो गया था कि गाय किसी भी क्षण उस के ऊपर आ गिरेगी। वह दीवार के साथ लग गया और अपनी आंखें बन्द कर उस बुरी घड़ी का इन्तज़ार करने लगा। टिन... टिन करती घंटी बिलकुल उसके ऊपर ही बज रही थी।

'सुन्दरी... सुन... द... री... सुन्द... री-री। वह चीख उठा जब घंटी ऊपर से उसके पैरों के पास आ गिरी। उसके मुंह से तब एक शब्द भी न निकला और वह घंटी की ओर आंखें झपकाता हुआ देखता रहा।

कुएं के भीतर से देर तक कोई आवाज़ न आई तो भरत की दादी ने सोचा कि शायद बूढ़ा माली डर से बेहोश हो गया है।

"रामबचन, तुम ठीक तो हो न?" वह कुएं के पास जाकर भीतर झांकती हुई बोलीं। उसने ऊपर देखा कि उसके बारे में चिन्तित होने पर भी मां जी अपनी हंसी रोक नहीं पा रही थीं।

"माताजी, मुझे यहां से निकलवाइये," वह चिल्लाया। "यह सड़कू की बदमाशी है। देखो। अब मैं इसे मज़ा चखाऊंगा।"

गुस्से से लाल-पीले हुए रामबचन को खींच कर बाहर निकाला गया। उसने देखने वालों को घूरा। उसकी नज़र सड़कू को ढूंढ़ रही थी। लेकिन सड़कू अपनी जान बचाने के लिये आम के पेड़ों के बीच में से तेज़ी से भागा जा रहा था।

माली यदि उसे पकड़ने का प्रयास भी करता तो न पकड़ पाता। "कितनी दूर भागोगे?" वह चिल्लाया। "तुम्हें वापस तो आना ही पड़ेगा और फिर मैं तुम्हें ठीक करूंगा।" यह कहता हुआ वह नौकरों के कमरे की ओर चल पड़ा। सबके हंसने की आवाज़ अब भी उसके कानों में गूंज रही थी।

सड़कू ने पेड़ों के नीचे आराम किया और फिर घूमता-घामता वापस बंगले पर आ पहुंचा। भरत की किताबें बरामदे से हटा दी गई थीं और मास्टर साहब चले गये थे। अब वह अपनी दादी मां के साथ

दोपहर का भोजन कर रहा था। पीछे वर्दीधारी एक नौकर खड़ा था। उसकी पेटी का रंग चटक लाल था उसकी सफेद जाकेट पर पीतल के बटन चमक रहे थे। सड़कू इस भव्य दृश्य को आंखें फाड़-फाड़ कर देख रहा था।

"तुमने रामबचन का अच्छा मज़ाक बनाया," भरत ने हंसते हुए कहा। "लेकिन तुम खाना नहीं खाओगे क्या? इस समय माली भोजन करने के बाद सोयेगा। अब तो वह ड्यूटी पर चार बजे वापस आयेगा।"

"मैं भी जा रहा हूं," सड़कू ने उत्तर दिया। वह ऐसे चलने लगा कि वे अनुमान न लगा सकें कि उसके पास जाने का कोई स्थान नहीं हैं।

"तुम कहां रहते हो?" भरत ने पूछा।

"मैं अपने चाचा के साथ स्टेशन के निकट रहता हूं। दक्षिण टिम्बर डिपो उन्हीं का है।"

"यदि तुम्हारे चाचा टिम्बर डिपो के स्वामी हैं तो वह तुम्हें माली के सहायक का काम कैसे करने दे रहे हैं?" वृद्धा ने पूछा।

"उनके ख्याल में तो मैं स्कूल में हूं," सड़कू मुस्कराया। "वह मुझे भोजन के लिये पैसे देते हैं।"

उसने एक रुपये का सिक्का ऐसे दिखाया कि वह यह न देख सकीं कि वह खोटा है, किसी काम का नहीं। वह इसे सदा अपनी जेब में रखता। उसके साथ दो तीन टीन के बटन भी रखता और इन सबको ऐसे खनखनाता मानो उसकी जेब में काफी पैसे हैं।

सड़कू बाज़ार की ओर चल पड़ा जो बंगले से थोड़ी दूर था। वहां उसने एक सब्जी की गाड़ी में से दो रसीली गाजरें उठा लीं और उन्हें खाता हुआ मदारी का तमाशा देखता रहा। मदारी एक अखरोट निगल गया और मुंह में से गजों लम्बी डोरी निकाली। जब सब का

ध्यान मदारी की ओर था तो उसने पटरी पर लगी दुकान से चारखाने डिज़ाइन का रुमाल उठा लिया।

इसी रुमाल में वह रोज अपना दोपहर का भोजन लाता था—एक ईंट जो अखबार के कागज में लिपटी होती। वह उसे गैराज में छिपा देता। जब सब खाना खाते तो वह गैराज में चला जाता। जब वह बाहर निकलता तो रुमाल को ऐसे झाड़ता मानों रोटी के टुकड़े नीचे गिरा रहा हो और अपना मुंह हाथ के पिछली तरफ से पोंछता हुआ निकलता।

भरत पूछता, "तुमने खाना खा लिया?"

"हां, मेरी चाची बहुत अच्छा खाना पकाती है। उसके पराठों का क्या कहना।"

जब भरत उसे केला देता तो वह उसे खुशी-खुशी ले लेता। पेट में बाकी खाली स्थान को पानी पी कर भरता।

जिस दिन उसे उसके पहले वेतन के दस रुपये मिले उस दिन उसने एक गिलास लस्सी पी और एक प्लेट पकौड़े खाये। उसने ये सब कुछ पिछली गली में स्थित कबूतरी की दुकान से खाया।

एक दिलचस्प अजनबी

"मैं इसे बस एक बार और लगाऊंगा।" सड़कू ने भरत से कहा, "यदि इस बार भी तुमने कुछ नहीं पकड़ा तो हम फिर कोशिश नहीं करेंगे।"

वह घूम कर नीम के पेड़ के दूसरी ओर गया और डंडे पर बेंत की टोकरी और अच्छी तरह से लगा दी। फिर टोकरी के नीचे चावल के दाने बिखेर दिये और डंडे से लगी रस्सी का दोबारा निरीक्षण किया।

रस्सी पेड़ के दूसरी ओर वहां तक गई थी जहां उसका दूसरा सिरा पकड़े हुए भरत व्हील-चेयर में बैठा था। यदि कोई पक्षी चावल के दाने खाने टोकरी के नीचे आता तो भरत को सिर्फ रस्सी को झटका देना था और टोकरी उसके ऊपर आ गिरती।

लेकिन बंगले की छत से कबूतर झुण्ड बांधकर नीचे दाने खाने आ रहे थे। उनमें से प्रत्येक दानों के पास जल्दी से जल्दी पहुंचना चाहता था और इस धक्कम-धक्का में उन्होंने टोकरी ही लुढ़का दी थी और लड़कों का मज़ा बिगाड़ दिया था।

सड़कू वापस आकर भरत की कुर्सी के निकट ही घास पर उकड़ू बना बैठा था। करौदों की बाड़ में गौरैयों का एक जोड़ा चहचहा रहा था। उन्होंने चावल के दाने देखे तो थे मगर निश्चय नहीं कर पा रहे थे कि चुगें या नहीं।

उसी क्षण भरत ने बाड़ के नीचे कुछ चमकदार चीज़ देखी। "सांप। सांप।" वह चिल्ला उठा और डर व हड़बड़ी से रस्सी उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर पड़ी। सड़कू ने भी सांप देख लिया था। यह एक फुट लम्बा था। सड़कू अच्छी तरह जानता था कि यह घास का सांप है और किसी को काटता नहीं।

"मारो, मारो। सड़कू, उसे मार दो।" भरत चिल्लाया। "यह हमें काटने आ रहा है।"

"उसे मारूं? एक कीड़े को मारूं?" सड़कू ने उपेक्षा से पूछा और जहां बैठा था वहां से टस से मस न हुआ यद्यपि सांप उन्हीं की ओर बढ़ता दिखाई दे रहा था।

घबरा कर भरत ने कुर्सी दूर ले जानी चाही मगर पहिये घुमाने की कोशिश करने पर वह हिली नहीं, क्योंकि सड़कू ने पहियों के आगे पीछे पत्थर लगा दिये थे कि पंछियों को पकड़ते समय वे फिसल न जाएं। अपने को ऐसी असहाय स्थिति में पाकर भरत रोने लगा। "दादी, दादी।" बंगले की तरफ देखकर वह चिल्लाया।

"तुम रो क्यों रहे हो?" सड़कू ने अधीरता से पूछा। "रोने से क्या होगा? क्या सांप तुम्हारा रोना सुन कर भाग जायेगा?"

"तब सड़कू, तुम कुछ करो न," भरत ने रोते-रोते कहा।

"मैं ज़रूर करूंगा मगर पहले रोना बन्द करो," सड़कू बोला। जब भरत अपनी बात मनवाने के लिये रोता-चीखता, अपने कीमती खिलौनों को दीवार पर दे मारता तो सड़कू को बड़ा आश्चर्य होता। उसे यह भी महसूस होता कि वह भरत के मुकाबले में बहुत मज़बूत है।

उसे अब भी ऐसा ही महसूस हुआ जब वह भरत के सामने खड़ा यह इन्तज़ार कर रहा था कि कब वह अपने आंसू पोंछ ले। फिर वह दबे पांव वहां पहुंचा जहां सांप घास में अधछिपा सा पड़ा था। फुर्ती से उसने सांप को पूंछ से उठा लिया, उसका सिर नीम के तने से दे मारा और फिर उसे दूर फेंक दिया।

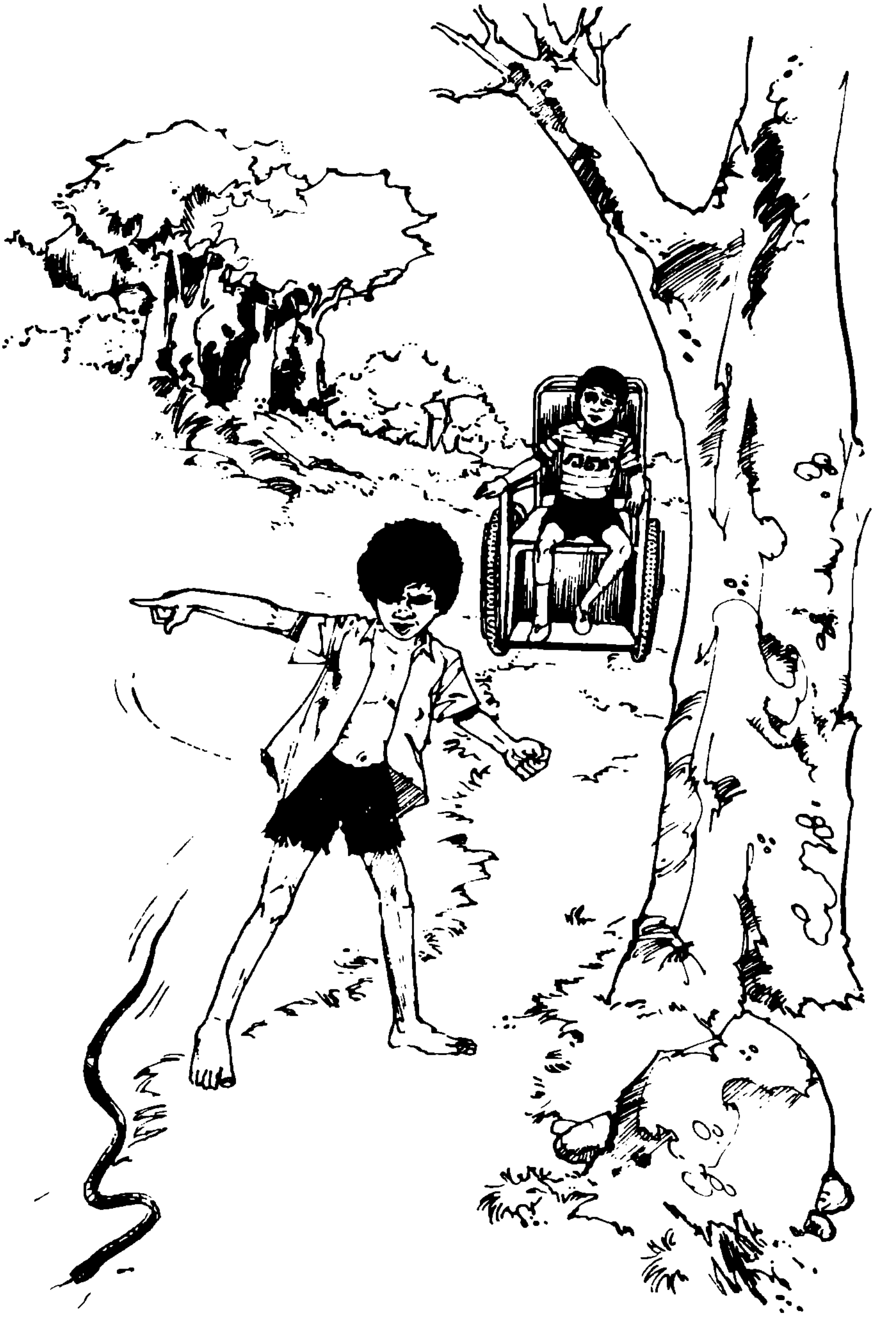
"तुम्हें भरोसा है कि सांप मर गया है?" भरत ने पूछा। वह यह विश्वास नहीं कर पा रहा था कि यह काम इतना आसान था। सड़कू को पक्का विश्वास था कि सांप मर गया है लेकिन उसने सोचा कि पता लगाऊं। भरत की तरफ पीठ कर के वह वहां पहुंचा जहां सांप पड़ा था।

"हाय । उसने मुझे काट लिया।" वह चिल्लाता व डगमगाता हुआ पीछे आया और अपने हाथ को देखने लगा।

"भाग कर घर जाओ। दादी से कहो। वह फोन करके डाक्टर को बुला लेंगी और वह तुम्हें इन्जेक्शन दे देगा," भरत घबराता हुआ बोला।

"ओह, मुझे तुम्हारे डाक्टर से भी अच्छी दवाई मालूम है। हमारे गांव में एक बाबा था जो कभी नमक नहीं खाता था। जब भी सांप उसे काटते तो वे उसके खून में पाये जाने वाले जहर से मर जाते।"

"क्या तुम्हारे खून में भी ऐसा ही ज़हर है।"



"कौन जाने? सबसे पहले यह पता लगाना चाहिये कि सांप जहरीला था भी या नहीं। ज़रा इनको चखो," सड़कू ने लटकी हुई टहनी से नीम के पत्ते तोड़ कर कहा।

"यह तो नीम है। बहुत कड़वे होंगे।"

"एक चबा कर देखो," सड़कू ने आदेश दिया। उसने एक पत्ता स्वयं मुंह में डाल लिया और चबाने लगा।

"छी ! छी ! यह तो कड़वा है," भरत ने मुंह बना कर थूकते हुए कहा। "मैंने तो पहले ही कहा था कि ये कड़वे होंगे।"

"लेकिन मेरे तो मीठे हैं," सड़कू बड़ा खुश होता हुआ बोला, "तुम्हें पता है भरत कि इस का क्या मतलब है? इसका मतलब है सांप जहरीला था। उसका जहर मेरे शरीर में फैल रहा है।"

यह प्रमाणित करने के लिये कि उसे वास्तव में ही जहर चढ़ गया है वह धीरे-धीरे डोलने लगा। उसकी आंखें शीशे जैसी दिखाई देने लगीं। उसने शराबी की तरह डगमगाते हुए भरत की कुर्सी और नीम के पेड़ के चक्कर काटे और फिर वहीं घास पर सीधा गिर पड़ा। अधखुली आंखों से वह ताक रहा था कि भरत उसे अपनी कुर्सी से झुक कर ताक रहा है। वह समझ नहीं पा रहा था कि इसे गम्भीरता से ले या मज़ाक समझे।

"सड़कू, तुम क्या मर रहे हो?" भरत ने ज़रा अविश्वास से पूछा।

"हां, बिलकुल," सड़कू ने उत्तर दिया। "तुम देख नहीं सकते क्या?" सड़कू ने अपने शरीर को कंपकंपाया और कुछ बड़बड़ाने लगा।

"तुम्हें डर नहीं लग रहा, सड़कू?"

"मैं डरूं क्यों?" सड़कू ने पूछा और इतना ठीक हो गया कि भरत पर एक ऐसी कड़ी दृष्टि डाल सके कि मानो ऐसा प्रश्न करते हुए उसे शर्म आनी चाहिये।

सड़कू ने तय किया कि मरना अच्छा है। ऐसा करके वह कुछ देर

झपकी ले सकता है। इस तरह से रामबचन द्वारा दिया गया काम कि फूलों की क्यारियों में खाद फैलाओ, जिससे वह उनमें नई पौध लगा सके, थोड़ी देर के लिये टल जायेगा। अभी उसने यह काम आरम्भ भी नहीं किया था यद्यपि पिछले दरवाजे के निकट बने गढ़े में से वह खाद की टोकरी ले आया था।

"जब रामबचन तुम्हें यहां आकर मरा हुआ देखेगा तो मैं उससे क्या कहूं?"

"उसे कहना कि उसने जितनी बार भी मुझे गिराया है मैंने उसे उसके लिये माफ कर दिया। यह भी कहना कि मुझे बहुत अफसोस है कि मैं क्यारियों में खाद नहीं फैला सका। अब उसे यह काम स्वयं ही करना पड़ेगा।"

बगीचे के दूसरे सिरे से एक गुस्सीली और रूखी आवाज़ आई। सड़कू के शरीर में फैलते जहर पर उसने आश्चर्यजनक असर किया। वह उछल कर खड़ा हो गया और कूदता-फांदता क्यारियों के पास जाकर खाद बिखेरने में व्यस्त हो गया। लेकिन जब वृद्ध माली फिर अपने काम में लग गया तो सड़कू टहलता हुआ भरत के पास आ पहुंचा।

"अरे सांप काटने से क्या होता है?" उसने बड़े गर्व से कहा। "मुझे कई बार सांप ने काटा है मगर मैं एक बार भी नहीं मरा। मेरे खून में एक खास प्रकार का जहर है। यह खास लोगों में होता है।"

"तुम्हारे ख्याल में क्या मुझमें किसी खास प्रकार का जहर है?" भरत ने पूछा। वह खास आदमी की श्रेणी में आने के लिये उत्सुक था। लेकिन सड़कू घास में मरा हुआ सां। ढूंढ़ रहा था। उसने सांप मिलने पर उसे उठा कर भरत के सामने पटक दिया। तब बड़ी सावधानी से छड़ी से उसका मुंह खोल कर उसमें खाद का ढेला डाल दिया।

"तुमने यह क्यों किया?" भरत ने पूछा

"जब यह स्वर्ग में जाकर भगवान से मेरी शिकायत करेगा कि सड़कू ने मुझे मार दिया, जबकि मैंने इसे कुछ नहीं कहा था, इसलिये इसे दण्ड दीजिए। लेकिन जब मेरे विरुद्ध यह मुंह खोलेगा तो भगवान देख लेंगे कि इसके मुंह में गोबर भरा है। वे सोचेंगे कि सड़कू ने इसलिये मारा क्योंकि यह गौशाला में घुस कर गड़बड़ करना चाहता था। देखो ! सांप मारने के बाद उसके मुंह में गोबर ज़रूर भर देना चाहिये।"

"क्या मैं कभी सांप को मार सकूंगा," भरत ने कहा। उसके स्वर में ईर्ष्या का पुट था।

सड़कू को बड़े बंगले में काम करते हुए तीन महीने हो गये थे। लेकिन वह अपना अधिकांश समय भरत के साथ बिताता और बहुत कम समय रामबचन का काम करता। वह भरत की कुर्सी धकेलता हुआ अहाते में इधर-उधर यहां तक कि कभी बाहर सड़क पर भी ले जाता।

भरत की दादी कहती कि उसे बाहर नहीं जाना चाहिये। "धूप में ज्यादा देर घूमना अच्छा नहीं। देखो। तुम कितने काले हो गये हो," वह गुस्सा करतीं।

लेकिन भरत के माता-मिता खुश थे कि वह बहुत स्वस्थ दिखाई दे रहा था। अब उसकी झल्लाहट भी कम हो गई थी और वह अधिकतर प्रसन्न रहता था। सड़कू के वहां रहने पर जैसे भरत का विवेक बना रहता था। श्री एवं श्रीमती दुबे, दोनों ही पारिवारिक व्यवसाय का काम देखते थे जिससे वे दिन का अधिकतर भाग बाहर बिताते। सड़कू भरत के लिये अच्छा संगी प्रमाणित हो रहा था। वे इस बात से खुश थे।

सड़कू को भरत की कुर्सी धकेलना बहुत अच्छा लगता था। यदि उसके पास चमकदार और भव्य रथ होता तो वह उसे भीड़ में से शूं

करके ले जाता और लोगों को बचने के लिये कूद कर रास्ते से हटना पड़ता।

बीरपुर से सतपुड़ा शृंखला में स्थित ग्वालीगढ़ पहाड़ियों तक जाने वाली सड़क दुबे साहब की सम्पत्ति के पीछे से गुज़रती थी। इस सड़क पर ज़रा दूर एक बस्ती बसी हुई थी। वहां के लोग भरत को मनमोहन सेठ का बेटा जानते थे। वह सड़कू से भी परिचित हो गये थे जो कुर्सी को धकेलते हुए कबूतरी के पुराने स्टाल तक ले जाता था। यदि सड़कू की जेब में पैसे होते तो वह कबूतरी से लेकर पकौड़े खाता।

भरत कभी बस्ती तक नहीं गया था। सड़कू उन लोगों के बारे में जो कहानियां सुनाता उनसे भरत सम्मोहित हो जाता। लेकिन सड़कू की कल्पना भी ऐसे अजनबी को नहीं घड़ सकती थी जैसा उन्हें एक दिन कबूतरी के स्टाल पर मिला।

यह अजनबी कुरता पायजामा पहने और कुरते पर साटिन की वेस्टकोट पहने कबूतरी की इकलौती कुर्सी पर जमा हुआ था। उसकी नाक तोते की चोंच जैसी थीं। उसके बाल व दाड़ी-मूंछ काली और चमकीली थी। मूंछे ऐंठी हुई थीं। खाना खा चुकने के पश्चात वह रूमाल से अपने हाथ पोंछ रहा था।

"मौसी, कितने पैसे हुए।" उसने वृद्धा से पूछा। कबूतरी के उत्तर देने से पहले ही उसने कई रुपये हवा से पैदा कर दिये। वे मेज़ पर गिरते हुए सिक्कों की तरह खनखना रहे थे।

"रेजगारी तुम रख लेना।" कह कर वह हंस पड़ा।

कबूतरी की नाक का करतब

भरत और सड़कू उस आदमी को ताकते रहे। वह आदमी जान गया कि उसने इन लड़कों को प्रभावित किया है। वह अब दिखावा करने लगा। उसने पूछा, "मौसी, आपको कितने सिक्के मिले?"

वृद्ध कबूतरी का झुर्रियों से भरा चेहरा मुस्कराहट से खिल उठा और वह पैसे गिनने लगी, "आठ रुपये।" पैसे एक चाय के प्याले और सेव की प्लेट के लिये-आठ गुना थे।

"आपको विश्वास है कि आपने ठीक गिना है," उसने पूछा। "ज़रा मुझे देखने दो।" उसने सिक्के लेकर पुर्तगाली में उन्हें गिनना आरम्भ किया—ऊन दोइस, त्रेस क्वार्तो इत्यादि। आठ गिनने पर उसने कहा, "ठीक है। अब अपना हाथ बढ़ाओ। मैं गिन कर तुम्हारी हथेली पर रखता हूँ।" इस बार उसने अंगरेजी में आठ तक गिना। "अब आप सिक्के मेज पर रख कर गिनो।" कबूतरी ने वैसा ही किया जैसा कहा गया था। "एक, दो, तीन, चार, पांच" केवल पांच रुपये थे। कबूतरी निराश हो कर हकलाने लगी।"

"ओह मौसीजी," आपने तीन सिक्कों का क्या किया?" उसने पूछा।

"मैं भगवान की सौगंध खा कर कहती हूं कि मुझे नहीं पता कि बाकी तीन कहां गये," उसने कहा। "मैं गरीब ज़रूर हूं पर बेईमान नहीं।"

उस अजनबी ने कहा, "मुझे पता है कि वे कहां छिपे हुए हैं। यहां।" और उसने उस की नाक को धीरे से थपथपाया। कबूतरी की नाक छोटी और चपटी थी। सड़कू और भरत यह सोच कर ही हंस पड़े कि वह उसमें तीन रुपये छिपा सकती थी।

"नहीं। नहीं। मैं सौगन्ध खा कर कहती हूं कि मैंने नहीं छिपाये," उसने विरोध करते हुए कहा।

वह अजनबी बोला, "अब छींक कर तुम्हें उन्हें निकालना पड़ेगा। अब मैं तुम्हारा सिर पकड़ कर मेज के ऊपर झुकाता हूं और तुम तीन बार आक्छी, आक्छी, आक्छी करो।"

कबूतरी ने तीन बार छींका और हर बार एक रुपया मेज पर उछल पड़ा। लड़के वृद्धा के चेहरे का भाव देखकर हंस पड़े।

आदमी ने आठ सिक्के उठा कर अपने बटुए में डाल लिये। लेकिन उनके बदले में उसने वृद्धा को दस रुपये का कड़क नोट थमा दिया। यह तीसरी बार थी जब वह उसकी दुकान पर आया था और हर बार उसने उसे दस रुपये का नोट दिया था। वह प्रसन्नता से हंस पड़ी।

"क्या तुम सर्कस में काम करते हो?" भरत ने पूछा।

यह प्रश्न सुन कर अजनबी को इतना मज़ा आया कि वह सिर को झटककर खूब हंसा। "बेटा। जिस सर्कस में मैं काम करता हूं वह तुम्हारे देखे हुए सर्कसों से बिलकुल अलग है," वह बोला।

"तुम्हारा नाम क्या है?" सड़कू ने पूछा।

"जुगनू। रोशनी वाली मक्खी।" वह फिर हंस पड़ा। "मेरी मां मुझे यही कह कर पुकारती थी, क्योंकि मैं इतना काला हूं।"

उसने अपने वेस्टकोट की जेब से एक कंघी निकाली और अपनी दाढ़ी और बालों में फिराई और अपनी मूंछों को एक बार फिर ऐंठा।

"तुम कहां रहते हो?" उसने पूछा।

"सड़क के सिरे वाले बड़े बंगले में," भरत ने उत्तर दिया।

"अरे, पूछो मत," कबूतरी ने प्याले-प्लेट मेज़ से उठा कर बाल्टी में डालते हुए कहा। "यह बहुत अमीर है। इसके पिता बीरपुर के राजा हैं। मनमोहन सेठ आधे शहर और कागज़ मिल के स्वामी हैं।"

"अच्छा, यह बात है।" जुगनू ने प्रभावित होकर कहा।

"यह करोड़पति है," कबूतरी ने फिर कहा।

आदमी की काली चमकीली आंखें एक क्षण के लिये भरत की टांगों पर रुकी और उसके चेहरे पर एक प्रश्न साफ दिखाई देने लगा। यह देख कर भरत ने फुर्ती से कहा, "जब मैं छोटा था तो मुझे बुखार हुआ था। लेकिन जब मैं बड़ा और मजबूत हो जाऊंगा तो मैं ऐसी कुर्सी लूंगा जिसे हाथों से नियन्त्रित किया जा सकेगा और मैं उसे कार की तरह चलाऊंगा। मेरे पिता कहते हैं कि वह मेरे लिये ऐसी कुर्सी विशेष तौर पर इंग्लैंड से मंगवायेंगे।"

"क्या तुम्हारे अन्य भाई-बहन भी हैं?" जुगनू ने पूछा।

"नहीं मेरे सिवाय और कोई नहीं है। लेकिन मेरे बहुत से चचेरे भाई-बहन बीरपुर में हैं।"

"तुम्हारी दादी तुम्हारे साथ रहती है?" प्रश्न से अधिक यह एक वक्तव्य था। भरत ने एक क्षण के लिये यह नहीं सोचा कि ये सब बातें इस व्यक्ति को कैसे पता हैं?

"हां, वह मेरी देखभाल करती हैं क्योंकि मेरे माता-पिता दोनों ही काम पर जाते हैं।"

"वह बड़ी धार्मिक स्त्री होंगी, है न?"

"हां। सप्ताह में एक बार वह तातवाले बाबा के दर्शन करने उनके आश्रम मेलाघाट जरूर जाती हैं।"

"मेलाघाट? मुझे इस स्थान का पता है। वह ग्वालीगढ़ की पहाड़ियों में है। बीरपुर से करीब ५६ किलोमीटर दूर है। वह किस दिन वहां जाती हैं?"

"हर बृहस्पतिवार को। उस दिन बाबा दर्शन देते हैं।"

"तुम स्कूल जाते हो क्या?" जुगनू ने पूछा।

"नहीं, अभी नहीं। लेकिन मैं अगले वर्ष से स्कूल जाऊंगा। अब सिन्हा साहब मुझे घर पर ही पढ़ाने आते हैं।"

"वह कब आते हैं?"

"नौ बजे।"

"तब तो तुम्हें देर हो गई है," अपनी घड़ी देखते हुए जुगनू बोला।

"अब तो नौ बज कर बारह मिनट हो गये हैं।"

सड़कू ने फुर्ती से कुर्सी घुमा दी। "रामबचन तो मुझे मार ही डालेगा," वह बोला। वह स्वयं को घर पहुंचने के बाद रामबचन का डंडा खाने के लिये तैयार कर रहा था।

"नमस्ते।" जुगनू ने पीछे से कहा। "मुझे एक सच्चे करोड़पति से मिलकर बहुत खुशी हुई।"

वे जब बंगले की ओर जा रहे थे तो उन्होंने उसे जोर से हंसते हुए सुना।

अपहरण

उस बृहस्पतिवार को बाबा के दर्शन के लिये भरत की दादी के मेलाघाट जाने के थोड़ी देर बाद ही सड़कू ने भरत की कुर्सी अगले फाटक से बाहर निकाली।

"सड़कू, फाटक को अच्छी तरह बन्द कर दो," भरत बोला, "नहीं तो पुथनिया धोबिन की बकरियां फिर बगीचे में घुस जायेंगी।"

जो सड़क सेठ साहब की सम्पति के सामने से गुजरती थी उस पर कोई ट्रैफिक नहीं था क्योंकि यह आम सड़क नहीं थी। यहां पर बड़े-बड़े पेड़ लगे हुए थे जिनकी छाया के कारण यह हिस्सा काफी ठंडा था। झाड़ियों पर छोटे नन्हे-मुन्ने पक्षी चहचहा रहे थे।

लेकिन भरत को तो कुछ और बड़ा शिकार चाहिये था। उसके पास सीट पर छोटे-छोटे पत्थरों का ढेर लगा हुआ था और हाथ में गुलेल थी। एक आंख बंद कर के उसने ऐसे दिखाया मानों किसी बड़े

पेड़ पर निशाना बांध रहा हो। गुलेल की रबड़ खींचने के परिश्रम से उसके बाजू कांपने लगे थे। इसलिये उसने गुलेल नीचे कर ली। "थोड़ा-सा और अभ्यास करने के बाद सड़कू, मैं तुमसे अच्छा निशानेबाज हो जाऊंगा," उसने कहा।

सड़कू पेड़ की शाखाओं पर कुछ ऐसी चीज़ ढूंढ रहा था जिस पर भरत निशाना लगा सके। कौवे बड़े चालाक हो गये थे। जैसे ही वे लड़कों को देखते उड़ जाते।

"कुछ दिखाई दिया?" भरत ने पूछा। एक बड़ा सा गिरगिट पलक झपकते ही पीपल के पेड़ पर चढ़ कर पत्तों में गुम हो गया।

"यह शायद उस टहनी पर आये," सड़कू ने संकेत करते हुए कहा।

"ज़रा इन्तज़ार कर के देखें। यदि वह बाहर नहीं आया तो मैं उसे निकालूंगा।" वह हाथ में पत्थर उठा कर तैयार खड़ा था।

वह दोनों अपने ध्यान में इतने मग्न थे कि किसी ने आती हुई कार की ओर तब तक ध्यान नहीं दिया जब तक वह निकट आकर खड़ी न हो गई। भरत ने चारों ओर देखा। उसे आशा थी कि परिवार का कोई मित्र मिलने आया होगा। उसने कार को बिलकुल नहीं पहचाना मगर जो व्यक्ति उसमें से बाहर निकला उसे वह जानता था।

"रघुवीर।" वह चिल्लाया, "तुम यहां क्या कर रहे हो? मैंने तुम्हें बहुत समय से नहीं देखा।"

रघुवीर मंझोले कद का व्यक्ति था। देखने में वह बड़ा धूर्त और चालाक लगता था। उसने कुछ दिन तक बड़े बंगले में ड्राइवर का काम किया था।

"अब मैं मिल में काम करता हूं," वह बोला। "यह इंजीनियर साहब की कार है और मैं उनका ड्राइवर हूं।" यह बात सही नहीं थी। अब उसका पेशा कारें व उनके पुर्जे चुरा कर बेचना था।

"घर पर तो कोई नहीं है?" भरत बोला, "लेकिन सिन्हा साहब अभी मुझे पढ़ाने आयेंगे।"

"मुझे पता है। लेकिन माताजी ने सेठ को फोन किया था और कहा था कि किसी के साथ तुम्हें बाबा के आश्रम पर भेज दें।"

"लेकिन जब दादी आज सुबह गई थीं तब तो उन्होंने इस बारे में कुछ नहीं कहा था," भरत ने आश्चर्य से कहा।

"क्योंकि उन्हें पता नहीं था कि आज आश्रम में विशेष उत्सव है। यह सब उन्हें रास्ते में मिली दूसरी औरतों ने बताया था। इसलिये उन्होंने तुम्हारे पिता को फोन किया और उन्होंने मुझे भेजा है।"

"दादी हमेशा कहती हैं कि वह मुझे बाबा के यहां ले जाएंगी और उनसे पूछेंगी कि क्या वह मेरी टांगों को ठीक कर देंगे," भरत ने प्रसन्न हो कर कहा। "शायद वह आज यह करेंगे। लेकिन सिन्हा साहब का क्या होगा?"

सड़कू ने कहा, "जब सिन्हा साहब आयेंगे तो मैं उनसे कह दूंगा।"

"अच्छा, तुम कह देना सड़कू। कह देना कि मैं तातवाले बाबा के पास गया हूं। वह मेरी टांगों को फिर ठीक कर देंगे," भरत ने हंस कर कहा। रघुवीर ने उसे गोद में उठा कर कार की पिछली सीट पर बिठा दिया।

"कुर्सी घर वापस ले जाओ," उसने पुकार कर कहा।

"ओह, लेकिन इसे भी तो साथ ले जाना है," ड्राइवर ने तुरन्त कहा।

"वास्तव में माताजी ने कहा था कि मैं इसे भी तुम्हारे साथ लेता आऊं।"

यह बात सुन कर सड़कू की आंखें खुशी से चमक उठीं। उसने दौड़ कर फाटक इतना खोला कि कुर्सी भीतर चली जाये। उसकी इच्छा थी कि वह भागकर कुर्सी को पोर्च में छोड़ आये, फिर वापस

कार में आ बैठे। लेकिन रघुवीर ने उसे कमीज से पकड़ कर कहा, "इसे यहीं छोड़ दो।"

"सिर्फ एक मिनट। ड्राइवर साहब मुझे केवल एक मिनट लगेगा। यदि कुर्सी यहीं रही तो उसे कोई चुरा ले जायेगा।" सड़कू ने उत्तर दिया। वह कोशिश कर रहा था कि कुर्सी को रगड़ लगे बिना फाटक के भीतर कर दे।

"मैं कहता हूं यहीं छोड़ दो इसे," उस आदमी ने फिर कहा। उसके कर्कश स्वर को सुन कर सड़कू ने चकित हो कर उसकी तरफ देखा।

"लेकिन मुझे इसे फाटक के भीतर तो कर लेने दो" सड़कू ने हठ किया। "रामबचन या कोई दूसरा इसे देख लेगा तो बंगले तक ले जायेगा। मैं फाटक इस तरह खुला नहीं छोड़ सकता। बकरियां बगीचे में घुस जायेंगी।"

"सड़कू, आओ, समय नष्ट मत करो," भरत चिल्लाया। उसी समय वृद्ध माली एक टोकरी और खुरपा लिये क्यारियों में घास-पात छीलने के लिये बंगले के सामने की ओर आता दिखाई दिया।

"अरे रामबचन...." सड़कू चिल्लाया। लेकिन वह अपनी बात खत्म नहीं कर पाया। रघुवीर ने उसके मुंह पर अपना मजबूत हाथ रख कर उसे बन्द कर दिया। उसे उठाया और पिछली सीट पर भरत के साथ धकेल दिया। जब तक वह आश्चर्य से उबरता कार तेजी से ग्वालीगढ़ की पहाड़ियों की ओर भाग चली।

रामबचन की आंखें अब इतनी अच्छी नहीं रह गई थीं जितनी जवानी में थीं। लेकिन जो कुछ थोड़ा बहुत उसने फाटक पर होते देखा वह अटपटा लगा था। उसने अपना खुरपा और टोकरी वहीं छोड़ी और आगे आया तो भरत की कुर्सी दिखाई दी जो फाटक के बीच में फंसी हुई थी। सड़कू इसे वापस बंगले के अंदर क्यों नहीं ले गया? सड़कू ने जब उसे पुकारा था तो वह क्या कहना चाहता था। वह कौन था जिसने सड़कू को जबर्दस्ती कार में धकेल दिया और उसे



अपना वाक्य भी खत्म नहीं करने दिया था?

"वह व्यक्ति कुछ जाना-पहचाना-सा लग रहा था," उसने स्वयं से कहा। और जब शाम तक दोनों लड़के नहीं आये तो यही बात उसने पुलिस से भी कही। "वह काले रंग की कार थी—ऐसी कार मैंने बंगले पर कभी नहीं देखी। लेकिन ड्राइवर कुछ जाना-पहचाना-सा लगता था, हालांकि मैंने उसका चेहरा साफ-साफ नहीं देखा। उसने सफेद कमीज और काली पतलून पहनी हुई थी। यह मैं पक्के तौर पर कह सकता हूं हालांकि मेरी आंखें कमज़ोर हैं।"

"क्या यह ड्राइवर फैक्टरी का था?" इंस्पेक्टर व्यास ने पूछा। वह परिवार का अच्छा मित्र था और उसने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि लड़के के गायब होने के रहस्य को खोल कर ही दम लेगा।

"इंस्पेक्टर साहब, यह मैं कैसे कह सकता हूं। मैं फैक्टरी के सब ड्राइवरों को नहीं जानता," रामबचन बोला। रामबचन को बहुत से आदमी, जो पेपर मिल में ट्रक आदि चलाते थे, दिखाये गये मगर वह बता नहीं सका कि इनमें से कोई आदमी था। उसने सिर हिलाते हुए कहा, "मेरी आंखें अब इतनी अच्छी नहीं हैं।"

पुलिस ने आसपास के लोगों से पूछताछ की और बस्ती में भी जांच की। उन्होंने कबूतरी से उसके ग्राहकों के बारे में पूछा।

"मैं तो एक गरीब विधवा हूं," वह भयभीत हो कर चिल्लाई। उसकी आंखें डबडबा आई थीं। "मैं इस सबके बारे में क्या जानूं? मेरे ग्राहक भी गरीब लोग हैं। वे मेरे यहां का भोजन पसन्द करते हैं क्योंकि दाम वाजिब हैं। ये लोग सड़क या खेतों में काम करते हैं। लेकिन यदि उन लोगों में से कोई नया या बाहर का हो तो उसे मैं एकदम पहचान लूंगी।"

"बाहर का?" इंस्पेक्टर ने दोहराया। "बीरपुर का नहीं कहीं और का?"

"हां, जैसे जुगनू। वह तीन बार यहां आया था मगर वह बीरपुर

का निवासी नहीं था। लेकिन वह सीधा-सादा आदमी था। हर वक्त हंसता, मज़ाक करता और अपना जादू दिखाता...."

"ओह, लेकिन हम जुगनू जादूगर को तो जानते हैं," भरत के पिता बोले।

"दोनों लड़के इस आदमी से मिल कर और उसके जादू के खेल देखकर बहुत उत्तेजित थे। हमने उन पर विश्वास नहीं किया और सोचा कि यह भी सड़कू की घड़ी हुई कहानी होगी।"

"यह लड़का सड़कू..." व्यास ने कुछ सोचते हुए पूछा, "यह कौन है?"

"वह तीन महीने से हमारे पास है। वह माली की मदद करता है और भरत की कुर्सी धकेलता है।"

"ठीक है, लेकिन वह है कौन? कहां का रहने वाला है?"

भरत के परिवार के लोग एक दूसरे को देखते हुए उसके बारे में कुछ याद करने का प्रयत्न करने लगे। "क्या उसके परिवार में कोई था? वह हर रात को यहां से जाने के बाद कहां जाता था?"

आखिर माताजी को कुछ याद आया लेकिन उन्होंने दक्षिण पथ का ऐतिहासिक विवरण छोड़ दिया। "वह कहता था कि उसका कोई चाचा है। वह स्टेशन के निकट स्थित दक्षिण टिम्बर डिपो का मालिक है," वह बोलीं।

"स्टेशन के पास तो कोई टिम्बर डिपो नहीं है। तो भी हम एक बार फिर देख लेते हैं," इंस्पेक्टर बोला। "यदि वह झूठ बोल रहा था तो हमें उसके बारे में कुछ और पता लगाना होगा।"

"मेरे ख्याल में सड़कू का इस में हाथ नहीं है," श्रीमती दुबे ने विरोध करते हुए कहा। "जो हमारे बेटे भरत को ले गया है वह सड़कू को भी ले गया है क्योंकि उस समय वह भरत के साथ था। अपहरण करने वाले व्यक्ति को भरत जानता लगता है नहीं तो वह उसके साथ जाने के लिये कभी सहमत नहीं होता। और रामबचन कहता है कि

भरत हंस रहा था और खुश था। एक बात और, जब सड़कू ने पुकारा था तो आदमी ने उसे रोका। यदि सड़कू उस गिरोह का होता तो माली को आवाज़ न लगाता।"

यह सब सुनने पर भी व्यास को विश्वास नहीं हुआ। "हमें जो भी सूत्र मिलें उनकी जांच करनी चाहिये। हम बीरपुर के आसपास की सब पुलिस चौकियों को सतर्क कर देते हैं और सड़कू के बारे में सूचना देने वाले व्यक्ति को पांच सौ रुपये के इनाम की घोषणा कर देते हैं। इस तरह हम शायद गिरोह तक पहुंच सकें। मुझे आशा है कि हमें इस बारे में अपहरणकर्ता से जल्दी ही कुछ सुनने को मिलेगा। वह भरत को इसलिये ले गया है जिससे आप पर ज़ोर डाल कर अच्छी रकम वसूल कर सके।"

जुगनू के बड़े बंगले पर

"उठो, उठो। महानुभावो, हम पहुंच गये हैं।"

कार की पिछली सीट पर लेटे सड़कू और भरत उनींदे से उठकर बैठ गये। उन्होंने देखा कि काला कलूटा जुगनू जादूगर उन्हें घूर रहा है। लेकिन वह अब हंस नहीं रहा था।

रात हो गई थी लेकिन आकाश में चांद चमक रहा था। जंगलों से भरी सतपुड़ा की पहाड़ियां चारों ओर से ऊपर उठती दिखाई दे रही थीं। सड़क से कुछ दूरी पर एक छोटी सी इमारत थी और पास ही थी रेल की लाइन।

जंगल के बीच एक जगह साफ करके साल तथा दूसरी किस्म की सख्त लकड़ियों के ढेर लगे हुए थे। लकड़ी वहां ट्रकों से लाई जाती थी

और फिर रेल द्वारा उसे बीरपुर की लुगदी मिलों में ले जाया जाता था।

"हम कहां हैं?" भरत ने क्षीण स्वर में पूछा। उसका सिर अभी भी भारी था और उसमें घूं घूं हो रही थी। उसे यात्रा के बारे में अगर कुछ याद था तो यह कि उसे और सड़कू को रास्ते के किसी कस्बे में रघुवीर द्वारा दिया शरबत पीने पर नींद-सी आ गई थी।

"तुम हमें कहां ले आये हो?" सड़कू ने पूछा। वह अब बैठ कर चारों ओर देख रहा था।

"बक-बक बन्द करो," जुगनू ने गुस्से से कहा। वह टिम्बर डिपो पर उत्सुकता से उनके आने का इन्तज़ार कर रहा था। उसने भरत को उठा कर अपने चौड़े कंधों पर बिठा लिया। "मेरे पीछे-पीछे चलो," उसने सड़कू से कहा और जंगल की ओर चल पड़ा। ड्राइवर ने कार को ताला लगाया और वह भी उनके पीछे हो लिया।

रास्ता चांद की फीकी चांदनी से प्रकाशित था, थोड़ा चलने पर चढ़ाई शुरू हो गई। लेकिन जुगनू ने अपनी गति कम नहीं की। सड़कू और ड्राइवर दोनो हांफ रहे थे। भरत के मुंह पर पेड़ों की टहनियां लग रही थीं लेकिन वह जुगनू के बालों को कस कर पकड़े रहा कि कहीं गिर न जाये। वे कहां थे, दादी कहां थीं। यह तातवाले बाबा का स्थान तो नहीं लग रहा? रघुवीर उसे यहां क्यों ले आया है। वह चुपचाप सिसकियां भरने लगा। उसकी छाती बार-बार ऊपर नीचे हो रही थी।

"क्या करोड़पतियों को रोना चाहिये?" जुगनू ने उपेक्षा से कहा। लेकिन भरत अपने पर नियन्त्रण नहीं रख सका।

"दादी। दादी।" वह सिसकियां भरने लगा। "मुझे मेरी दादी के पास ले चलो।" जंगली जानवरों की आवाज़ों से रात गूंज रही थी और सड़कू को डर लग रहा था। उन्होंने चैन की सांस ली जब वे पत्थर की सीढ़ियों के पास पहुंचे। ये सीढ़ियां ऊपर गुफा तक जाती थीं जहां

एक लालटेन टिमटिमा रही थी।

जादूगर का गुप्त स्थान पहाड़ी के ऊपर था जहां से टिम्बर डिपो अच्छी तरह से दिखता था। सब तरफ खड़ी ढलान थी। ऊपर तक पहुंचने का रास्ता वही सीढ़ियां थीं जो पत्थरों को काट कर बनाई गई थीं।

शताब्दियों पहले पूरी पहाड़ी को बौद्ध भिक्षुओं ने वन विहार का रूप दिया था। इसमें एक बहुत बडा हाल था जिसे चैत्य कहते हैं। चैत्य से सीढ़ियां विहार की कोठरियों को जाती थीं जहां भिक्षु रहते थे। कुछ सीढ़ियां बहुत संकरी और खड़ी थीं, और ऊपर छोटी-छोटी अन्धेरी और दमघोटू कोठरियों में जाती थीं। ऐसी ही एक ऊपर वाली कोठरी में भरत और सड़कू को रखा गया। उन्हें फर्श पर बिछाने के लिये पुआल का बन्डल दे दिया गया।

"सड़कू, अब हमारा क्या होगा?" भरत ने हाथ से अपनी आंखें पोंछी। इस बार सड़कू के पास कोई उत्तर नहीं था। जब उसने सोने के लिये फर्श पर पुआल बिछाई तो वह बहुत दुखी लग रहा था।

अगली सुबह उन्होंने ऊपर से बीच के हाल को देखा। जुगनू ड्राइवर से बातें कर रहा था। "यदि जैसा तुम कहते हो कि माली ने तुम्हें और कार को देखा है तो तुम यह कार छोड़ दो और दूसरी ले लो," जुगनू ने सलाह दी। "लेकिन जो भी हो वापस बीरपुर मत जाना। आसपास के शहरों में घूम कर देखो कि लड़कों के गायब होने की खबर कहां तक फैली है।"

ड्राइवर सीढ़ियों से नीचे उतरने के लिये मुड़ा। "रघुवीर। रघुवीर।" भरत ने विनती की। "मत जाओ। हमें यहां छोड़कर मत जाओ।"

"भरत मैं वापस आ जाऊंगा," उसने हंस कर कहा, "तुम्हें जैसा कहा जाये वैसा ही करोगे तो तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा।"

उनके आने के कुछ दिन तक कोई खास बात नहीं हुई। सड़कू एक कोठरी में खाना बनाने में व्यस्त रहता। लेकिन हर बार जब लट्ठे

लेकर गाड़ी डिपो से गुजरती तो जुगनू बाहर देखता मानो उसे किसी के आने की आशा हो। एक बार तो वह नीचे गया और उन व्यक्तियों से बातचीत की जो एक खुले डिब्बे में आये थे। लड़के उसे बिलकुल साफ देख सकते थे और वह लड़कों को देख सकता था क्योंकि वह छिपने के स्थान की ओर मुंह करके खड़ा था।

"अब मौका है यहां से भाग चलें," सड़कू ने जोश में आकर कहा। उसका आत्मविश्वास वापस आ गया था। और आखिर जुगनू इतना बुरा भी नहीं था। वह उन्हें भरपेट खाने को देता था और उसने उन्हें कभी मारा-पीटा भी नहीं था। "चलो भरत, यहां से भाग चलें।"

"भाग चलें? मैं कैसे भाग सकता हूं?" भरत ने दुखी होकर पूछा।

"मैं तुम्हें उठा लूंगा," सड़कू ने जोश में कहा, "एक बार हम जंगल में घुस जायें तो छिपना आसान होगा। पास में कोई गांव तो होगा ही। गांव वाले बीरपुर पहुंचने में हमारी मदद करेंगे।"

उसे पता नहीं था कि सतपुड़ा के इस तरफ कोई भी गांववाला उनकी मदद नहीं करेगा। जुगनू वहां एक निष्ठुर डाकू के रूप में मशहूर था। वे उससे डरते थे क्योंकि वह काला जादू जानता था। गांव के बच्चों को उनके बड़े यह कह कर डराते थे कि यदि तुम अच्छे नहीं बनोगे तो तुम्हें जुगनू उठाकर ले जायेगा।

"हम यहां से कैसे निकल सकते हैं?" भरत ने पूछा। "वह हमारी गुफा को देख रहा है।"

"कोई दूसरा रास्ता भी यहां से निकलने का होगा तो सही," सड़कू बोला और जांच-पड़ताल के लिये निकल पड़ा।

वह कई सीढ़ियों पर चढ़ा और कई गलियारों को उसने घुटने और हाथों के बल रेंग कर पार किया। सबसे ऊपर की कोठरियां अधबनी थीं और भिक्षुओं की छेनियों के निशान उन पर अभी तक दिखाई दे

रहे थे। वे खिड़कियां जिनसे चैत्य में प्रकाश आता था, टिम्बर डिपो की ओर खुलती थीं।

लेकिन सड़कू ने हार नहीं मानी। धुंधले प्रकाश में उसने साल का एक बड़ा सा-शहतीर देखा जो सीढ़ी जैसा लगता था। यह करीब आठ फीट लम्बा और खाचेंदार था और इस तरह रखा गया था कि उससे एकं कोठरी में जहां सीढ़ियां नहीं थी पहुंचा जा सकता था। कोठरी में से हल्का सा प्रकाश नीचे आ रहा था। शायद यही स्थान था उसे जिसकी खोज थी—वहां से बाहर निकलने का रास्ता।

वह सावधनी से ऊपर चढ़ा और स्वयं को ऐसी कोठरी में पाया जिसमें एक छोटी-सी खिड़की थी। पंजों पर खड़े होकर वह बस खिड़की तक पहुंच सकता था। उसके ऊपर घास उग आई थी। जब उसने घास निकाली तो सामने पेड़ों से भरी पर्वत श्रृंखला के पश्चिमी भाग का दृश्य नज़र आने लगा। नीचे देखने पर उसे लगा कि चट्टान बहुत खड़ी हैं। लेकिन उसमें दरारें और खांचे थे। उसे विश्वास था कि वह इनके द्वारा नीचे उतर सकता है पर भरत को पीठ पर लाद कर उतरना तो असंभव-सा ही था।

उसने कोठरी का निरीक्षण किया। एक संकरी ताक में जो पत्थर खोद कर ही बनाई गई थी उसने देवी की मूर्ति देखी। उसके सामने सूखे जंगली फूल पड़े हुए थे। दीवार के सहारे एक कुल्हाड़ी पड़ी थी। उसके फल पर कुछ गहरे रंग के धब्बे थे। कोने में दो बोरे पड़े थे। उसने एक बोरा खोल कर उसमें झांका। प्रकाश में उसमें पड़ी चीज़ें चमकने लगीं। आभूषण! बोरी गहनों से भरी थी।

उसने बोरी में हाथ डाला और जो कुछ हाथ में आया बाहर निकाला। कानों के कुंडल, नाक की लौंग, कड़े और पायल, हार, बाजूबन्द और मंगलसूत्र थे।

"तो यह जुगनू और कुछ नहीं एक चोर और डाकू है। यह सब पुलिस को बताना चाहिये।"



"सड़कू।" भरत का क्षीण स्वर नीचे से सुनाई दिया। "वह वापस ऊपर आ रहा है।"

सड़कू तुरन्त शहतीर से नीचे उतर आया और कई छोटी-छोटी सीढ़ियों से फुर्ती से उतर कर भरत के पास घास पर जा बैठा। "इतना सोना और गहने।" वह चिल्लाया, "बोरियों में आभूषण ऐसे पड़े हैं मानों कूड़ा-कर्कट हों। वहां एक देवी की प्रतिमा भी है। कोई उनकी पूजा पलाश के फूलों से करता है।"

"लेकिन कोई बाहर निकलने का रास्ता है या नहीं?" भरत ने पूछा।

"वहां एक खिड़की तो है मगर ढलान बड़ी सीधी है। मैं तुम्हें अपने साथ नहीं ले जा सकता। लेकिन मैं अकेला कोशिश कर सकता हूं। फिर मैं लकड़ी ढोने वाली माल गाड़ी से वहां तक चला जाऊंगा जहां वह रुकेगी। लोगों की मदद से मैं बीरपुर पहुंच जाऊंगा। तब मैं सेठ साहब को बता दूंगा कि तुम कहां हो।"

"सड़कू क्या तुम यह कर सकते हो? क्या सच में?" भरत अपने आंसुओं को नहीं रोक पा रहा था। जादूगर की परछाईं चैत्य के प्रवेश द्वार पर दिखाई दी तो उन्होंने बोलना बन्द कर दिया।

"हमें ताज़ा पानी चाहिये," जुगनू ने पुकार कर कहा। "घड़ा ले कर मेरे पीछे-पीछे आओ।"

सड़कू आज्ञाकारी नौकर की तरह डाकू के आगे-आगे निकट के झरने पर जा पहुंचा। जब घड़ा भर गया तो जुगनू ने उसे सड़कू के सिर पर रख दिया।

"काश, वह यह घड़ा इस आदमी के सिर पर दे मारता और जंगल में भाग जाता।" सड़कू सोच रहा था। लेकिन वह जुगनू से तेज़ नहीं दौड़ सकेगा। उसके पास चाकू भी है। उसे पिछली दोपहर की याद आई जब जुगनू कोने में पड़े एक शहतीर पर चाकू से निशाना लगा कर अपना मन बहलाव कर रहा था।

"सड़कू, चाकू को निकाल कर मेरे पास लाओ," उसने आदेश दिया था।

सड़कू अपना पूरा ज़ोर लगा कर ही चाकू का फल बाहर निकाल पाया था। जुगनू उसे देख कर हंस दिया था। "यदि यह चाकू आदमी में घुसा हो तो बहुत आसानी से निकल आता है," उसने हंस कर कहा था।

वह चाकू सदा अपने पास रखता था। उसके लिये इसे सड़कू पर फेंकना ज़रा भी मुश्किल न होगा। यह सोच कर ही सड़कू परेशान हो उठा। वह अपने कंधों के बीच वाले स्थान पर दर्द भी महसूस करने लगा। इसलिये वह चुपचाप इस आदमी के आगे-आगे गुफा की ओर चलने लगा।

"जुगनू भैया, क्या चाकू फेंकना आपने सर्कस में सीखा था?" उसने बहुत नम्रता से पूछा। सर्कस शब्द सुन कर जुगनू हंसने लगा।

उसने वायदा किया, "तुम जल्दी ही मेरा सर्कस देखोगे।"

एक अजीब सर्कस

रेलवे लाइन जो पहाड़ियों में से गुजरती थी करीब ५१ किलोमीटर लम्बी थी और इसका उपयोग वन विभाग लकड़ी के लट्ठे बीरपुर की कागज़ मिल तक पहुंचाने के लिये करता था। यह एक पुरानी लाइन थी जो अंगरेजों ने दूसरे महायुद्ध के समय जंगल से लट्ठे और शहतीर लाने के लिये बनाई थी।

एक दिन सुबह एक खुले माल डिब्बे में तीन व्यक्ति आये और छिपने के स्थान पर पहुंचे। जुगनू ने उनका बड़ा स्वागत किया।

"यह मेरा सर्कस है सड़कू बेटा," जुगनू हंस पड़ा। "नीचे आओ और इनसे मिलो।"

सड़कू ने भरत को पीठ पर उठाया और बीच के कमरे में आ गया और उसने बड़ी सावधानी से भरत को फर्श पर बिठा दिया। उन्हें यह देख कर निराशा हुई कि जुगनू के सर्कस के लोग बड़े सामान्य थे और गांव वालों की तरह कमीज-धोती पहने थे व सिर पर बड़ी-बड़ी पगड़ियां बांध रखी थीं। लेकिन जब उन्होंने देसी पिस्तौलें और चाकू अपने कुरतों में से निकाल कर फर्श पर फेंक दिये और फिर जुगनू के सामने बैठ गये तो वे सामान्य नहीं लगे।

उनके नाम तात्या, ओमाझी और हरि थे। जुगनू उनका नायक था। वे कभी सपने में भी उसकी इच्छा के विरुद्ध जाने की बात नहीं सोच सकते थे। ऐसी वफादारी उनके अपराधी गिरोह की परम्परा थी। लेकिन वे जुगनू से डरते भी थे और उन्हें विश्वास था कि उसके पास कुछ अजीब शक्तियां हैं। वे समझते थे कि जब वे उससे दूर होते हैं तो वह काले जादू द्वारा उन पर निगरानी रखता है।

तात्या ने हिन्दी में छपे कई विज्ञापन बाहर निकाले। जुगनू ने एक पढ़ा और हंसने लगा। "सड़कू, इसमें तुम्हें भी दिलचस्पी होगी और उसने एक विज्ञापन उसे पकड़ा दिया। सड़कू भरत की तस्वीर तो देख सकता था पर लिखा हुआ उसकी समझ में नहीं आया क्योंकि उसे पढ़ना-लिखना नहीं आता था।

"इसमें क्या लिखा है भरत?" उसने पूछा।

"उसमें लिखा है कि जो सड़कू नाम के लड़के के बारे में सूचना देगा उसे पांच सौ रुपया पुरस्कार मिलेगा," भरत ने पढ़ कर बताया।

सड़कू अविश्वास से यह सब सुनता रहा। उसके लिये पांच सौ रुपये? सड़कू के लिये। रामबचन को इस का पता लगना चाहिये। उसके चेहरे पर खुशी की झलक साफ दिखाई दे रही थी।

"हां, अचानक पुलिस को लगा कि तुम बहुत कीमती हो, सड़कू

बेटा," हरि यह कह कर हंस पड़ा। "यह जानने के लिये कि तुम इस समय कहां हो वे पांच सौ रुपया देंगे,"

सारे बदमाश हंस पड़े। सड़कू ने सोचा कि यहां से भाग कर स्वयं को पुलिस के हवाले कर दे जिससे पुरस्कार का दावेदार बन सके। "कोशिश करके देखो," जुगनू ने गम्भीर हो कर कहा।

जुगनू ने उन सबसे रिपोर्ट मांगी क़ि वह पिछले दिनों में क्या करते रहे थे। वे जानबूझ कर अपहरण के बाद बीरपुर में रहे थे जिससे अफ़वाहों से यह पता चल सके कि पुलिस का क्या इरादा है।

"तो बीरपुर के आसपास की सब चौकियों को सतर्क किया जा चुका है। अब और समय नहीं खोना चाहिये। हमें अपना अगला कदम उठाना चाहिये," जुगनू बोला।

उसने पेन्सिल का एक टुकड़ा अपनी वेस्टकोट की जेब में से निकाला और भरत को दे दिया। "अब तुम अपने पिता को एक पत्र लिखो। एक विज्ञापन की पिछली तरफ लिख लो।"

भरत को और कहने की ज़रूरत नहीं थी। वह कागज़ पर झुक कर उसी वक्त हिन्दी में लिखने लगा। पूज्य पिताजी....."

"अंगरेजी में लिखो। अंगरेजी में।" जुगनू ने आदेश दिया।

भरत ने पहला लिखा हुआ काट कर फिर शुरू किया। "डियर डैडीजी......."

फिर भरत बोला, "मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या लिखूं।" वह बहुत भावुक हो गया और उसकी आंखों में आंसू तैरने लगे थे। सड़कू को उसके लिये दुख हुआ।

जुगनू को आश्चर्य हुआ। "क्या तुम अपने परिवार के पास नहीं जाना चाहते?" उसने पूछा।

"हां, वह ज़रूर जाना चाहता है। कैसा सवाल पूछा है आपने," सड़कू चिल्ला पड़ा।

''ठीक है फिर। उसे सिर्फ यह लिखना है कि उस के पिता आकर उसे ले जायें।''

लड़के एक दूसरे की ओर देखने लगे। वे सोच रहे थे कि यह क्या सचमुच इतना आसान है।

''लेकिन इस स्थान का नाम क्या है? यह बीरपुर से कितनी दूर है? वे यहां कैसे पहुंचेगे?'' सड़कू ने पूछा।

''यह मेरा बड़ा बंगला है,'' जुगनू हंसा। ''लिखो कि मुझे सतपुड़ा की पहाड़ियों में से जुगनू जादूगर के बड़े बंगले से ले जाइये। चलो, काफी मज़ाक हो चुका। लिखो, मैं लिखाता हूं।''

भरत ने वही लिखा जो जुगनू लिखाता गया। हर वाक्य को वह अंगरेजी में अनुवाद करके लिखता गया।

''मैं बिलकुल ठीक हूं। मेरी चिन्ता मत करिये। मैं
घर वापस आ सकता हूं यदि आप इन आदेशों के
अनुसार काम करें। यह बड़ा आवश्यक है। जो कुछ
इस पत्र में लिखा है वह पुलिस को मत बताइये। यदि
आपने बताया तो आपको मेरे लिये आंसू बहाने
पड़ेंगे।''

''तुम्हें मेरे लिये आंसू बहाने पड़ेंगे—इसका क्या मतलब है?'' सड़कू ने पूछा।

''उन्हें रोना पड़ेगा,'' ओमाझी बोला।

''तो तुम हमें मार दोगे?'' सड़कू गुस्से से चिल्ला कर बोला।

''हमें मारना ही पड़ेगा। नहीं तो पुलिस हमें मार देगी,'' जुगनू ने हंस कर कहा।

उसने बाकी पत्र भी लिखा दिया।

उसने लिखवाया कि

रुपयों का थैला उस सड़क के २०वे मील के
पत्थर पर छोड़ दिया जाये जो मध्य प्रदेश में बीरपुर से

महाराष्ट्र की सीमा पर सतपुड़ा पहाड़ियों की ओर जाती है। ये पैसे अगले शुक्रवार को रात के नौ बजे तक पहुंच जाने चाहियें। पैसा लाने वाला आदमी बिना रुके गाड़ी को ड्राइव करता जाये। जब पैसे मिल जायेंगे तो परिवार को बता दिया जायेगा कि सड़कू और भरत उन को कहां मिलेंगे।

"लेकिन तुमने यह तो बताया ही नहीं कि कितना रुपया?" भरत ने कहा।

"तुम्हारे ख्याल में तुम्हारी क्या कीमत हो सकती है?" जुगनू ने कुछ सोचते हुए कहा।

"पुलिस मेरे लिये पांच सौ रुपया दे रही है," सड़कू बोला, "सेठ साहब भरत के लिये तो इससे बहुत ज्यादा देंगे।"

"मेरे पिता मुझे वापस लेने के लिये बहुत-सा रुपया देंगे," भरत बोला।

"बहुत अच्छे।" जुगनू बोला। "तब एक लाख रुपया लिखो।"

भरत लिखने लगा। उसने एक की संख्या लिख कर उसके साथ शून्य लगाने आरम्भ किये। तब वह रुक गया। एक लाख में कितने शून्य लगते हैं। उसने दो बार गिना। जुगनू सारा समय भरत को देख कर एक दबी-सी हंसी हंस रहा था।

"एक लाख। एक लाख।" वह चिल्लाया। "क्या तुम एक लाख नहीं लिख सकते? तुम्हारे सिन्हा साहब को हटा देना चाहिये। मैं मनमोहन सेठ को यह सुझाव दूंगा। शायद उसके बदले वह मुझे ही रख लें। जो चीज़ें जुगनू जादूगर तुम्हें सिखा सकता है वह तुम्हारे ज्यादा काम आयेंगी बनिस्बत सिन्हा साहब या पुस्तकों के।"

इस मज़ाक का उसके अनुयायियों ने हंस कर स्वागत किया।

भरत शरमिंदा सा हो गया। यह सोच कर कि उसने शायद कुछ गलत लिखा है। भरत ने संख्या में एक शून्य और लगा दिया। यह

ज़ुगनू के लिये कुछ ज्यादा ही हो गया।

"दस लाख। दस लाख।" वह गरजा। "यह अच्छा है, बहुत अच्छा है। अब देखें तुम्हारे पिता तुम्हें कितना प्यार करते हैं।"

भरत ने लज्जित होकर सिर नीचे कर लिया। क्या उसे वह ज्यादा शून्य काट देना चाहिये? लेकिन उसके गर्व ने उसे ऐसा न करने दिया। इतने में उसके मन में एक और विचार आया। क्यों न वह इस में अपने पिता को कोई संकेत दे दे जैसे रघुवीर से पूछो। वह जानता है?

लेकिन बाद में वह खुश हुआ कि उसने ऐसा नहीं किया क्योंकि जुगनू ने पत्र को उठाया और बिना कठिनाई के सारा पढ़ गया। तब उसने उसे तहा कर अपनी जेब में डाल लिया।

"तुमने अच्छा किया कि मुझे ठगने की कोशिश नहीं की," उसने भरत से कहा। "तुम देख रहे हो न कि मुझे अंगरेजी अच्छी तरह आती है। मुझे पुर्तगीज भी आती है क्योंकि मैं मांजम्बिक में रहा हूं और जिन दिनों मैं सेशेल्स में पोर्ट विक्टोरिया में रह रहा था तो मैंने फ्रेंच भी सीख ली। तुमने शायद इन स्थानों का नाम भी नहीं सुना होगा। मैं हिन्दी और कई अन्य भारतीय भाषायें भी जानता हूं।"

लेकिन जो भाषा चारों डाकू आपस में बोलते थे वह कोई उनकी अपनी गुप्त भाषा थी। लड़कों ने देखा कि जब रघुवीर गुफा में आया तो वे इसी भाषा में आपस में बात कर रहे थे। वे देख रहे थे कि रघुबीर उनकी भाषा नहीं समझ पा रहा है।

जब वे अपनी कोठरी में पुआल पर लेटे हुए थे और नीचे चैत्य में बैठे आदमियों को देख रहे थे तो सड़कू ने धीरे से भरत से कहा, "रघुवीर इनमें से नहीं है, वह दिखता भी अलग है। वे अगड़म-बगड़म बोल रहे हैं। केवल बदमाश ही अगड़म-बगड़म बोलते हैं।"

"हम जल्दी ही यहां से निकल जायेंगे सड़कू," भरत बोला। पत्र

लिखने के बाद वह ज्यादा खुश था। "जैसे ही मेरे पिताजी को पत्र मिलेगा, वह आकर हमें घर ले जायेंगे।"

पत्र रघुवीर को ले जाना था। पत्र को लिफाफे में डाल कर उस पर मनमोहन सेठ, बीरपुर लिखना था। लेकिन उसे स्वयं बीरपुर से दूर ही रहना था क्योंकि पुलिस उसको ढूंढ रही होगी।

लम्बी प्रतीक्षा

लड़के देख रहे थे कि रघुवीर चिढ़ा-सा हुआ था। वह दीवार के सहारे बैठा मुंह बना रहा था। "तो? मैं यह पत्र डाक में डाल दूं और वहां से दूर रहूं। तुम मुझे हमेशा दूर रहने के लिये कहते हो। यह मत भूलो कि लड़के को यहां लाने में मैंने तुम्हारी मदद की थी।"

उसके हाव-भाव से यह स्पष्ट था कि चारों डाकू जिस तरह काम कर रहे थे वह उनसे सहमत नहीं था। वह उन की उपेक्षा कर रहा था। वे अनपढ़ देहाती थे और किसानों की तरह ही कपड़े पहनते और बातें करते थे। जुगनू कहता था कि वह कई वर्ष विदेश में रहा है मगर उसकी दृष्टि में वह भी अपने साथियों से अधिक सुसंस्कृत नहीं था। वह शहरी था और अपने को उनसे ज्यादा होशियार समझता था।

रघुवीर को अच्छा नहीं लगता था कि वे उसकी उपस्थिति में अपनी विशेष बोली बोलते थे। उसे सन्देह हो रहा था कि जुगनू उसे फिरौती में हिस्सा नहीं देगा।

"क्या योजना है? और हिन्दुस्तानी में बोलो जिससे मैं भी समझ सकूं," उसने कठोरता से कहा।

जुगनू मुस्कराया और आराम से बैठा अपनी मूंछें ऐंठता रहा। वह देख रहा था कि रघुवीर डरा हुआ था। वह हर चीज़ को जल्दी-जल्दी

खत्म करना चाहता था। ऐसे मामले में जल्दी करना मूर्खता होती है।

"क्या योजना है," रघुवीर ने गुस्से से दोहराया।

"योजना यह है—तात्या बीरपुर से एक बैलगाड़ी लेकर आहवा जायेगा। वह शहर से ऐसे चलेगा कि वह बीसवें मील के पत्थर तक शुक्रवार शाम को पहुंचेगा तो रुपया वहां रख दिया गया होगा। घाटी में से एक उल्लू बोलेगा। इससे तात्या यह जान जायेगा कि रुपया वहां रख दिया गया है और उसके लिये उसे उठाना और गाड़ी में छिपाना सुरक्षित है।

"यह संकेत हरि और ओमाझी देंगे। उससे पहले वे बीरपुर से लेकर आहवा तक के फासले का पूरी तरह निरीक्षण कर लेंगे कि मनमोहन सेठ ने वहां कहीं पुलिस तो नहीं बिठाई है। फिर वे तात्या के साथ बैलगाड़ी में आ जायेंगे। यदि उल्लू की आवाज़ नहीं आती तो तात्या चलता रहेगा और आहवा पहुंच जायेगा जहां बाकी दोनों उसे मिलेंगे और वे यहां वापस आ जायेंगे।"

"और रुपया? यह दस लाख रुपया वहीं सड़क के किनारे पड़ा छोड़ आयेगा?" रघुवीर चिल्लाया।

"यदि उस क्षेत्र में पुलिस चौकसी कर रही है तो उस रुपये को कौन हाथ लगायेगा?" जुगनू ने पूछा।

रघुवीर को यह योजना बड़ी धीमी लगी। "मेरे पास एक अन्य कार है—एक नया माडल, जो मैंने खंडवा के एक सिनेमा हाल के बाहर से उठाई थी। मैं रुपया उठाकर तुरन्त अर्थात चुटकी मारते यहां आ सकता हूं। नई गाड़ी के आगे १२५ किलोमीटर की क्या औकात है? यदि पुलिस वहां निगरानी रख भी रही होगी तो भी वे मुझे नहीं पकड़ सकेंगे।"

"रघुवीर, तुम बच्चे हो। तुम हमें हमारा काम मत सिखाओ। हम काफी समय से यह काम कर रहे हैं," जुगनू ने तिरस्कार से कहा।

"और मेरा हिस्सा? मेरे हिस्से का क्या होगा?" ड्राइवर ने पूछा।

"तुम्हें मिल जायेगा, चिन्ता मत करो। तुम यहां और आहवा के बीच में कार लेकर खड़े हो जाओ और तात्या, हरि व ओमाझी से तय कर लो कि तुम उन्हें कहां मिलोगे और फिर उन्हें कार में यहां ले आओ। उसके बाद तुम लड़कों को ऐसे स्थान पर छोड़ देना जहां से उन का परिवार उन्हें उठा सके। सेठ को फोन करके बता देना। तभी तुम्हारा काम खत्म होगा और तुम्हें तुम्हारा हिस्सा मिलेगा। मैंने तुम से यही वायदा किया था जब तुम्हें अपना एजेंट बनाया था।

"लेकिन याद रखो यदि तुमने हमें धोखा दिया तो हम दुनिया के दूसरे कोने तक बदला लेने के लिये तुम्हारा पीछा करेंगे। मैं दादू महातो के परिवार का हूं। महातो उस व्यक्ति को कभी माफ नहीं करता जो उसका नमक खा कर उसे धोखा देता है।"

उस शाम गुण्डों ने काम पर निकलने से पहले ऊपर वाली कोठरी में काली की विशेष पूजा की जिससे कि वह उन्हें उनके काम में सफलता प्रदान करे। तात्या निकट के गांव से एक लाल मुर्गा भी लाया था। वह एक कोने में पड़ा था। उसकी टांगें बंधी हुई थीं और अपने पंख फड़फड़ा रहा था।

जुगनू ने मुर्गे को करवट से लिटा दिया और चॉक से एक रेखा खींची। यह रेखा उसकी चोंच से शुरू होकर फर्श पर खींची गई थी। सम्मोहित मुर्गा चुपचाप पड़ा था। जुगनू को यह देखकर खुशी हो रही थी कि सब बड़े प्रभावित थे।

यह एक गुप्त अनुष्ठान था। मुर्गे की बलि चढ़ा दी गई। उस का खून कुल्हाड़े के फल से लगा हुआ था। तब वे नीचे उतर कर रघुवीर के साथ डिपो तक गये जहां कार खड़ी थी।

उनके जाने के बाद दिन धीरे-धीरे गुज़रने लगे। जुगनू गुफा से लड़कों की चौकसी रखता। कभी-कभी वह लड़कों को नीचे बुला लेता जहां वह स्वयं बैठा होता।

"अपने जादू के करतब दिखाओ," सड़कू ने कहा।

वह कंकड़-पत्थरों को गायब कर देता और फिर पैदा कर देता। उसने वही रुपये फिर पैदा किये जिन्हें कबूतरी ने छींकों में निकाला था। लेकिन इस बार वे भरत के कान में पाये गये। उसने ताश निकाली और उसके पत्तों से कई तरह के करतब दिखाये। एक बार भी वे उसे पकड़ नहीं सके। उसने उन्हें यह भी दिखाया कि वह पैरों से भी चाकू फेंक सकता है। चाकू का फल उसके पैरों की उंगलियों में पकड़ा हुआ था। वह उनके चेहरे के भाव देख कर हंसने लगता। "यह सब मैंने स्कूल में नहीं सीखा," वह बोला।

"तुम स्कूल में पढ़े हो?" सड़कू ने पूछा।

"नहीं," जुगनू ने उत्तर दिया," लेकिन मैंने पढ़ना-लिखना सीखा था।" उसने चॉक का एक टुकड़ा उठाया और दीवार के निकट बैठकर उसे अपनी पैर की उंगलियों में पकड़ लिया। फिर उसने अपनी टांग फैला कर आकृतियां बना दीं।

"जुगनू भैया, कुछ लिखो," सड़कू फिर बोला।

पहले उसने हिन्दी में लिखा, "हरि ओ३म्, हरि ओ३म।" इसके पश्चात् उसने एक वाक्य अंगरेजी में लिखा जिसका अर्थ था" हम सब मित्र हैं।"

लड़कों को लगने लगा कि समय गुज़र ही नहीं रहा है। वे अपने छुटकारे के लिये अधीर हो रहे थे। "इतनी देर क्यों लग रही है?" सड़कू ने पूछा।

"क्योंकि हमें समय देना पड़ेगा कि पत्र मनमोहन सेठ को मिले और फिर उन्हें रुपया लाने के लिये भी समय चाहिये। वह किसी के द्वारा ठीक समय पर रुपया मील के पत्थर पर रखने का प्रबन्ध करेंगे...."

भरत बोला, "मुझे विशवास है कि वह यह स्वयं करेंगे। मेरे पिता बड़े बहादुर हैं। वह किसी डाकू से नहीं डरते।"

"वह डाकुओं से क्यों डरें? हम भी तो तुम्हारी तरह इन्सान ही

हैं, क्यों ठीक कह रहा हूं न मैं ?" जुगनू ने हंस कर कहा।

लेकिन शुक्रवार की शाम तक जुगनू में भी तनाव के चिन्ह दिखाई देने लगे थे। वह चैत्य में इधर-उधर घूम रहा था और जो भी लट्ठों से भरी मालगाड़ी जाती उसको ध्यान से देखता। यदि सब योजना के अनुसार हुआ तो उसके आदमियों को आज आधी रात तक यहां पहुंच जाना चाहिये।

भरत और सड़कू उस दिन काफी देर तक बैठे रहे। वे यह सोच कर खुश थे कि अब जल्दी ही उन्हें कैद से छुटकारा मिलेगा। लेकिन शनिवार की सुबह तक भी डाकू एवं रघुवीर कार में वापस नहीं आये थे।

"क्या बात हो सकती है ?" भरत ने सड़कू से पूछा। सड़कू ने खुशी-खुशी कहा,"हो सकता है कि उन्हें पुलिस ने पकड़ लिया है और सेठ साहब हमें छुड़ाने आ रहे हों।"

जुगनू का व्यवहार अब उनके प्रति कठोर हो गया था। वह गुस्से से लाल-पीला हो गया जब सड़कू ने दोपहर के खाने की रोटी जला दी। वह हर बात पर नाक भौं चढ़ा रहा था, गालियां दे रहा था और इधर-उधर अधीरता से घूमता हुआ जो कुछ उसके रास्ते में आता उसे ठोकर मारता। भरत और सड़कू चुपचाप अपनी कोठरी में जाकर सो गए।

"क्या वह अब भी नीचे है ?" भरत ने पुआल पर सड़कू के बाजू में लेटते हुए पूछा। उन्हें अचानक सन्नाटा होने से आश्चर्य हो रहा था।

सड़कू ने धीरे-धीरे दरवाजे पर जाकर नीचे देखा। "वह वहीं है," उसने फुसफुसाकर कहा। वह जुगनू की काली आकृति गुफा के मुंह पर देख सकता था जो चुपचाप वहां बैठा चौकसी कर रहा था।

रात के दो बजे होंगे जब किसी ने लड़कों को जगाया। "उठो। उठो। जल्दी करो," तात्या ने रूखे स्वर में कहा। वे आंखें मलते हुए उठकर पुआल पर बैठ गये।

"क्या हो रहा है? क्या हुआ?" भरत ने पूछा। वे जुगनू और उसके आदमियों को नीचे चीज़ें इकट्ठी करते सुन सकते थे और जुगनू बड़बड़ा रहा था। एक टार्च की सहायता से ओमाझी ऊपरी कोठरी में चढ़ा और दोनों बोरे नीचे फेंक दिये। लैम्प के प्रकाश में हरि ने इन चीज़ों को चार हिस्सों में बांट दिया। जुगनू का भाग उसने सबसे बड़ा रखा। फिर उन्हें गठरियों में बांध दिया जिससे सब अपनी-अपनी गठरी उठा सकें।

"तुम सबसे मूल्यवान बंडल को तो भूल ही गये हो," जुगनू ने तीखेपन से कहा। इसी समय सड़कू भरत को पीठ पर उठाये नीचे उतरा। "यह मेरा भार है—दस लाख की कीमत का।"

उसने भरत को अपने चौड़े कंधों पर उठा लिया और गुफा से निकल कर सीढ़ियां उतरने लगा। वे एक के पीछे एक चलते हुए अपने छिपने के स्थान से बाहर निकले। लड़के सोच रहे थे कि ये कहां जा रहे हैं। कोई उन्हें घर ले जाने के लिये क्यों नहीं आया? रघुवीर और उसकी कार का क्या हुआ है। वह नीचे डिपो पर भी इन्तज़ार नहीं कर रहा था।

अगली सुबह जब इंस्पेक्टर व्यास और मनमोहन सेठ जीप में सिपाहियों के साथ वहां पहुचें तो उन्होंने देखा कि गुफा में कोई नहीं है। पुआल इधर-उधर बिखरा हुआ था और एक कोठरी में बलि के चिन्ह भी थे। एक घड़ा भी टूटा पड़ा था।

"बदमाश कुछ घंटे पहले ही यहां से गये हैं," व्यास बोला। "पानी अभी तक सूखा नहीं है।"

भरत के पिता दीवार पर चाक से लिखे शब्द पढ़ रहे थे। "हरि ओ३म, हरि ओ३म," उन्होंने हिन्दी में पढ़ा। अंगरेजी में लिखा था, "हम सब दोस्त हैं।" "यह शायद भरत ने लिखा हो क्योंकि यह ठीक उस ऊंचाई पर हैं जहां तक वह पहुंच सकता है।"

बीसवें मील के पत्थर पर

डकैत रेल लाइन के साथ-साथ जा रहे थे। तात्या आगे-आगे लैम्प लिये चल रहा था और हरि सबसे पीछे टॉर्च चमकाता चल रहा था। सड़कू जुगनू के पीछे-पीछे चल रहा था। उसे खुशी थी कि वह बीच में था। चारों ओर बड़े-बड़े पेड़ अन्धकार को बढ़ा रहे थे।

बीच-बीच में जुगनू गालियां बकता। एक स्थान पर वह अचानक इस तरह रुक गया कि सड़कू उससे जा टकराया। जुगनू ने अपना गुस्सा उस पर निकाला और उसे गालियां बकने लगा।

"अरे जुगनू भैया।" सड़कू ने टोका, "मेरे कान सूख कर गिर जायेंगे।"

रात को लकड़ी लेकर कोई मालगाड़ी नहीं गुज़रती थी और वे जंगल के भीतर मीलों चल चुके थे। जंगली जानवर लैम्प की रोशनी देखकर और आदमियों की आवाज़ें सुन कर पेड़ों के बीच से भाग रहे थे। सड़कू ने ऐसी परिस्थिति में डाकुओं को पिस्तौल निकाले देखकर चैन की सांस ली। दोनों लड़के बड़े ध्यान से उनकी बातें सुन रहे थे। इन बातों से उन्हें पता चला कि रघुवीर ने बीसवें मील के पत्थर पर गुण्डों को धोखा दिया था।

पहले सब बातें योजना अनुसार हो रही थीं। ओमाझी और हरि आहवा से ब्रीरपुर तक के क्षेत्र में घूमे मगर ऐसा कोई संकेत नहीं मिला जिससे पुलिस के अधिक सक्रिय होने का पता चलता। भरत के पिता बहुत सर्तक रहे थे। घाटी में चुने हुए स्थान के पास छिपे हुए ओमाझी और हरि ने एक बार कार को गुजरते देखा जो रुपयों का थैला वहां फेंक गई थी।

जब तात्या बैलगाड़ी लेकर वहां से निकला तो हरि ने उल्लू की आवाज़ बोल कर संकेत किया। सड़क पर कोई नहीं था। इसलिये वे

अपने छिपने के स्थान से निकल कर बैलगाड़ी पर चढ़ने आये। लेकिन उनके मील के पत्थर तक पहुंचने से कुछ मिनट पहले रघुवीर अपनी मोटरकार में आया, थैला उठाया और वहां से तेज़ी से निकल गया।

"उसने जाते हुए हमें ज़रूर देखा होगा क्योंकि हम पर उसकी हैडलाइट सीधी पड़ रही थी। उसने तो हमें कुचल कर ही रख दिया था। हमारी बैलगाड़ी सड़क के बीचोबीच चल रही थी," हरि ने कहा।

सिर्फ इतना ही नहीं था। यदि वह निकल जाता तो भी हम उसका पता लगा लेते। जब वे तीनों आहवा पहुंचे तो देखा कि गांव वाले गैस लैम्प और लालटेनें लिये सड़क पर घूम रहे हैं।

"क्या हुआ?" उन्होंने पूछा।

"एक दुर्घटना," एक आदमी ने उत्तर दिया। "सड़क पर खड़े एक ट्रक और तेज़ रफ्तार से आती कार में आमने-सामने टक्कर हो गई थी और ड्राइवर बेहोश हो गया था।"

वह रघुवीर था। "लेकिन क्या तुम्हें पूरा विश्वास है कि वह रघुवीर ही था?" जुगनू ने सौवीं बार पूछा।

"बिलकुल। हमने उसे तो नहीं देखा मगर हमने कार देखकर पहचान ली थी," तात्या बोला। "पटेल और पटवारी ने एक अन्य ट्रक को रुकवा कर ड्राइवर से रघुवीर को बीरपुर के अस्पताल ले जाने के लिये कहा। उन्हें सीट पर नोटों से भरा थैला भी मिला। उनके अनुसार यह कोई डकैती का केस लगता था। इसलिये वे स्वयं रघुवीर के साथ गये और पुलिस में रिपोर्ट की व रुपया वहां जमा करा दिया।"

"और अब हमारा दोस्त रघुवीर पुलिस की सुरक्षा में है," जुगनू ने कठोरता से कहा। "खूब अच्छी तरह पट्टियों से बंधा पड़ा है और पुलिस की सेवा के लिये तैयार है। यदि वह चाहे भी तो वहां से भाग नहीं सकता। यदि वह जीवित रहा तो होश में आने पर सब बात

बतायेगा। या शायद अब तक सब कुछ बता ही चुका हो।''

इस विचार पर जुगनू को इतना गुस्सा आया कि वह फिर गालियां बकने लगा। वह कहता जाता कि यदि उसे कभी रघुवीर मिल गया तो वह उसका क्या करेगा।

जैसे समय गुजरता गया गुण्डे चुप हो गये। सड़कू को नींद आ रही थी और उसे अपनी गठरी भारी लग रही थी। यह जुगनू का लूट का हिस्सा था। रेल लाइन पर नुकीले पत्थर पड़े थे और उसके पैरों में गड़ रहे थे। केवल वही नंगे पैर चल रहा था। काश, उसके पास भी अन्य व्यक्तियों की तरह जूते होते।

अब वे सतपुड़ा ऋंखला के उस हिस्से में आ गये थे जो महाराष्ट्र में है। वे एक नदी पर पहुंचे जहां खाई पर पत्थरों का मेहराबदार रेल पुल बना था। उन्होंने लाइन छोड़ दी और टीक के घने जंगल में घुस गये। अब वे ऋंखला के साथ-साथ पश्चिम की ओर बढ़ रहे थे। दक्षिण में थी ताप्ती की घाटी।

सुबह होने पर वे रुक गये और जहां घास पर पेड़ों के नीचे आराम करने बैठे थे वहीं सो गये। जुगनू की आवाज़ ने उन्हें जगाया।

''चलो। चलो।'' वह चिल्लाया मानों उसे अचानक याद आया हो कि शायद पुलिस अब भी उनका पीछा कर रही हो। जब वह फिर चलने लगा तो उसने भरत को अपनी पीठ पर तात्या की पगड़ी से बांध कर बैठा लिया।

दोपहर तक वे एक पहाड़ी को पार कर एक आदिवासी गांव में पहुंच गये थे। आदमी तो वहां नहीं थे। औरतें अपनी झोपड़ियों के सामने बैठी थीं और बच्चे खेल रहे थे।

डाकू पेड़ों के पीछे छिपे रहे। ''सड़कू तुम्हें भूख लगी है?'' जुगनू ने पूछा।

''मेरे पेट में चूहे दौड़ रहे है,'' सड़कू ने क्षोभ से कहा।

''तब ज़रा जाओ और देखो कि वे तुम्हें खाने के लिये कुछ देतीं

हैं या नहीं। लेकिन ज्यादा बातें मत करना नहीं तो तुम पछताओगे।''

सड़कू के अचानक आने से बच्चे डर गये और चिल्लाने लगे। वे भाग कर अपनी माताओं के पास चले गये। वे संदेह की दृष्टि से उसे देखने लगीं। सड़कू को उनकी भाषा समझ नहीं आ रही थी।

''मुझे खाना चाहिये,'' सड़कू बोला। उसने अपने पेट पर हाथ फेरा, फिर मुंह की ओर संकेत किया। एक औरत भीतर गई और बाजरे की रोटी का एक टुकड़ा ले आई, ''यह तो काफी नहीं है,'' वह अपना सिर हिला का बोला। लेकिन वह समझ न पाई।

सड़कू ने अपने दोनों हाथों की उंगलियां फैला कर पेड़ों की ओर संकेत किया। लगा वे समझ गई हैं और भयभीत दृष्टि से उन्होंने जंगल की ओर देखा। उनको प्रभावित करने के लिये कि जो दस आदमी जंगल में हैं, निष्ठुर हैं, सड़कू ने अपने गले पर उंगली को फेरा और मुंह से गला काटने जैसी आवाज़ निकाली।

डकैत? हत्यारे? उन्होंने अपने बच्चे झोपड़ियों में घुसा दिये और रोटियां और जंगली फलफूल जो कुछ उनके पास था बाहर ले आईं। इन्हें सड़कू अपनी कमीज में रखकर दूसरों के पास ले आया।

होली का मेला

वे इसी तरह करीब-करीब एक सप्ताह चलते रहे—रात को चलते और दिन में सोते। सड़कू आदिवासियों से खाना लाने में चतुर हो गया था। लेकिन अपने जीवन में इतनी थकावट उसे शायद पहले कभी नहीं हुई थी। तब भी वह इतना नहीं थका था जब नामदेव

भट्ट कठपुतली वाले के साथ इधर–उधर घूमता था। उनके पकड़ने वाले खर्राटे भर रहे थे तो वह और भरत झाड़ियों में पड़े फुसफुसा कर बातें करने लगे।

"सड़कू , तुम्हारे ख्याल में हम कहां जा रहे हैं," भरत ने पूछा।

सड़कू ने लम्बी सांस लेकर कहा, "काश, मैं जान पाता। लगता है ये पहाड़ियां कभी खत्म ही नहीं होंगी—ऊपर-नीचे, ऊपर–नीचे। मेरे पैर तो चूर–चूर हो गये हैं।"

जब वे पर्वतमाला के पश्चिम की ओर पहुंच गये तो वे सुरक्षित और आराम से यात्रा करने लगे। यहां जुगनू जादूगर, डकैत और उसके साथियों के नाम कोई नहीं जानता था। अब वे ज़रा प्रसन्न हो गये। जुगनू के साथी उसके पीछे चलते हुए आपस में ऊंची–ऊंची आवाज़ में बातें करते। वह अपने कारनामों की कहानियां सुनाते। लड़के ये सब बड़े ध्यान से सुनते। उन्हें आश्चर्य होता कि क्या हत्या, डकैती आदि भी इतने हंसी मज़ाक का विषय हो सकते हैं।

उस क्षेत्र में कुछ हो रहा था। सब आदिवासी उत्सव के मूड में थे। जंगल की पगडंडियों पर चलते हुए लड़के ढोल और बांसुरी बजाते। बड़े–बूढ़े तीर–कमान एवं जंग लगी प्राचीन तलवारें उठाये हुए चलते। उनके पीछे महिलायें रंगबिरंगे घाघरे और फूलदार चोलियां पहने और चटक लाल ओढ़नियां ओढ़े हुए आतीं।

"यहां क्या हो रहा है ?" सड़कू ने पूछा।

तात्या बोला, "ये होली का उत्सव मना रहे हैं। पांच गांवों में अलग–अलग पांच दिन मेला होता है।"

सड़कू और भरत मेले का आनन्द लेने की कल्पना में अपनी थकावट भी भूल गये। शायद जुगनू किसी मेले में कुछ समय तक ठहरे। ऐसा लगता था कि सब लोग—आदिवासी और गांववाले मेले में जा रहे हैं।

एक खुशमिजाज किसान अपनी बैलगाड़ी में चला आ रहा था।

वह पीले रंग का नया कुरता और सफेद धोती पहने हुए थे। सिर पर हरे रंग की भारी-भरकम पगड़ी थी। उसने बैलों को चाबुक लगाया तो वे भाग निकले और भीड़ तितर-बितर हो गई।

"रोको। रोको।" जुगनू चिल्लाया। तात्या ने दौड़कर बैलों की लगाम हाथ में ले ली जिससे वे रुक गये।

गाड़ी वाले के चेहरे पर दुविधा का भाव था। "यह क्या है?" वह चिल्लाया। उसने घर से चलने से पहले महुए की थोड़ी शराब पी थी जिससे वह झूम रहा था।

"हम तुम्हारी बैलगाड़ी और बैल खरीदना चाहते हैं," जुगनू ने कहा।

"तुम मेरे बैल और गाड़ी खरीदना चाहते हो?" आदमी ने दोहराया, वह भ्रमित था। हरि गाड़ी में बैठ गया और आदमी की आंखों के सामने एक जंजीर घुमाने लगा। उसने जंजीर हाथ में ली। अपनी शराबी आंखों से वह देख सकता था कि जंजीर पीली और भारी है। क्या यह सोने की है? उसे विश्वास नहीं हो रहा था। वह अपने मन में निश्चय नहीं कर पा रहा था। इसलिये उसने मोल-तोल करने की बात सोची।

लेकिन डकैत तो जल्दी में थे। उन्होंने इस मामले का फैसला ऐसे किया कि वे गाड़ी में चढ़ गये। उस आदमी को उठा कर रास्ते के किनारे खड़ा कर दिया। उन्होंने अपने बंडल गाड़ी में रख लिये और आराम से बैठ गये। तात्या ने रास पकड़ी और वे फुर्ती से जंगल की कच्ची सड़क पर चल पड़े।

परेशान देहाती घास में बैठा उन्हें जाते देख रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह हंसे या रोये।

लड़कों ने चैन की सांस ली, जब जुगनू ने अगले गांव में मेले के लिये ठहरने का निश्चय किया। तात्या ने गाड़ी एक जामुन के पेड़ की छाया में ठहरा दी और वे सब नीचे उतर गये। सड़कू और भरत उन

बंडलों पर बैठे रहे जिनमें इतना सोना था कि यदि वे चाहते तो पूरा मेला खरीद सकते थे।

"यहां से हिलना मत," जुगनू ने कठोरता से कहा।

बीच के एक खुले स्थान पर एक घूमने वाले झूले के आसपास लड़के, लड़कियां, औरतें और बच्चे इकट्ठे हो रहे थे। चारों ओर छोटी-छोटी दुकानें थी जो तला हुआ खाना, तरबूज, शरबत और मिठाई बेच रही थीं। लेकिन जहां उनकी बैलगाड़ी खड़ी थी वहां सबसे ज्यादा भीड़ थी। यहां एक गढ़ा बनाया गया था और उसमें जलते कोयले डाल दिये गये थे। आदमी उसे नंगे पैर पार कर रहे थे।

सड़कू बोला, "यहां से सब कुछ दिखाई देता है।" वे दूसरे लोगों से ऊंचाई पर थे। उन्होंने एक वृद्ध को गढ़ा पार करते देखा। वह एक हाथ में बच्चा उठाये था और दूसरे हाथ में अपनी जंग लगी तलवार पकड़े था। उसके पीछे-पीछे और कई लोग थे। यह अनुष्ठान उस घटना के स्मरण में किया जाता था जब होलिका चिता की आग में से प्रह्लाद के साथ बैठी थी। वह स्वयं जल गई और प्रह्लाद सुरक्षित आग से निकल आये।

"देखो। वह रहा जुगनू।" सड़कू ने संकेत करते हुए कहा। आग पार करने के लिये तैयार अगला आदमी वही था।

"वह आग पर नहीं चल सकता," भरत ने चकित होकर कहा। "मेरी दादी कहती थी कि भक्त और शुद्ध आदमी ही आग पर चल सकता है नहीं तो वह जल जाता है। जुगनू अब जायेगा। ज़रा रुको और देखो।" लेकिन सड़कू को इस बात पर विश्वास नहीं था। यह आदमी जादूगर है न?

जुगनू ने अफ्रीका के एक ओझा से आग पर चलने का रहस्य सीखा था। उसने अपना पाजामा ऊपर चढ़ा लिया और ओमाझी एवं हरि ने उसे पैर धोने में मदद की। अन्य लोगों को तो यह अनुष्ठान

का ही भाग लगा। लेकिन जुगनू के लिये पैर न जलें इसके लिये यह सावधानी बरतनी ज़रूरी थी।

उसके पूरा तैयार होने से पहले ही आग के भरे गढ़े की दूसरी ओर से कोई गुस्से से चिल्लाया जिससे सब लोग उस ओर देखने लगे। एक आदमी गुस्से से भरा वहां खड़ा था।

"यह आदमी धोखेबाज और चार सौ-बीस है। इसे पवित्र आग को पार करके उसे अपवित्र मत करने दो," वह चिल्लाया।

"अरे, यह तो तात्या है," भरत ने चकित होकर कहा।

"कौन कहता है कि मैं चार सौ-बीस हूं," जुगनू ने गरज कर कहा। उसने अपना सिर झुकाया और ऐसे लगा कि गढ़े की दूसरी ओर जाकर उस पर आरोप लगाने वाले को नीचे गिरा कर वह उसे अपने बड़े-बड़े पैरों से जमीन में धंसा देना चाहता है। वह ऐसा इसलिये नहीं कर सका क्योंकि हरि और ओमाझी उसे पकड़े हुए थे।

"उसकी बात का विचार न करो," हरि ने जुगनू को शान्त करते हुए कहा। "याद रखो पवित्र आग को पार करने वाले को गुस्सा, घृणा और पापसे दूर रहना चाहिये।"

तात्या अब जुगनू की वंशावली का विवरण देने लगा। वह उसकी वंशावली को राक्षसों की पीढ़ियों से चलाता हुआ आधुनिक युग तक ले आया। जब उसने वंशावली का विवरण समाप्त किया तो जुगनू गुस्से से पागल हो उठा था। भीड़ को विश्वास था कि अब खून-खराबा ज़रूर होगा।

"पचास रुपये की शर्त रही कि जब यह धोखेबाज आग में उतरेगा तो अग्नि की लपटें ऊंची होकर इसे जला देंगी," तात्या ने उपेक्षा से कहा।

"एक सौ रुपये," जुगनू ने गरज कर कहा।

"शर्त पक्की रही," तात्या ने उत्तर दिया। उसके चेहरे पर एक क्रूर मुस्कराहट थी।



उनकी बहस की तेज़ी देख कर कई अन्य लोग वहां आ गये थे। भीड़ अब कोई करिश्मा देखना चाहती थी। जुगनू भी उन्हें निराश नहीं करने वाला था।

"इधर आओ," वह सड़कू को संकेत करता हुआ चिल्लाया।

"अरे, मर गये, भरत," सड़कू ने धीरे से कहा और बैलगाड़ी से नीचे कूद गया। जुगनू उसे उठा कर गढ़ा पार करना चाहता था। अब उसे विश्वास हो गया था कि जुगनू वास्तव में बुरा आदमी है इसलिये शायद वे दोनों ही जल कर मर जायेंगे।

जुगनू ने सड़कू को अपने कंधे पर बिठाया। डर कर सड़कू ने अपनी पतली टांगे उसके गले के चारों ओर इतनी जोर से कस लीं कि जुगनू का गला घुटने लगा। वह बहुत नाराज हो गया। आखिर सब कुछ तैयार हो गया। जैसे ही जुगनू गढ़े में उतरा सब ओर सन्नाटा छा गया। वह जलते अंगारों में से दूसरे किनारे पर बिलकुल ठीकठाक निकल गया। भीड़ गला फाड़ कर चिल्ला रही थी।

तात्या फिर बोला, "यह तो चालाकी है। उसे कहो फिर से गढ़ा पार करे। इसे फिर से अंगारों पर चलने को कहो। यदि यह दोबारा पार नहीं करेगा तो मैं रुपये नहीं दूंगा।"

इस पर भीड़ को गुस्सा आ गया। सब कुछ ठीक तरीके से हुआ था। वे इस बात के साक्षी थे। इस व्यक्ति को सौ रुपये देने पड़ेंगे जिसकी इसने शर्त लगाई थी।

"इसे रुपये दो," उन्होंने चिल्ला कर कहा। उन्होंने तात्या को घेर लिया था और उसे झकझोर रहे थे।

सड़कू वापस गाड़ी में चढ़कर भरत के पास बैठ गया था।

"वहां कैसा था? भरत ने पूछा।

"बस, जरा गर्मी थी," सड़कू ने स्वीकार किया। वास्तव में अपने जीवन में वह इतना शायद कभी नहीं डरा था।

"मुझे यह बात समझ नहीं आ रही कि ऐसा करने से तात्या का

क्या मतलब है," भरत ने टिप्पणी की। "वह ऐसे व्यवहार कर रहा था मानों जुगनू का सबसे बड़ा दुश्मन हो।"

कुछ देर में उन्हें पता चला कि यह सब क्या हो रहा है। तात्या गुस्से में था और उसने रुपये देने से मना कर दिया। हरि और ओमाझी ने उसे जामुन के पेड़ के साथ खड़ा कर दिया। एक ने उसका गला पकड़ा और दूसरे ने पगड़ी निकाली। इतने में जुगनू भीड़ को धक्का देते हुए आगे आया।

"जाने दो। जाने दो।" उसने कहा। "पैसे की क्या बात है। हाथ का मैल है। चूजे भी यह नहीं खाते। भगवान ने मुझे और मेरे भाई को आग से बचाया है—इस बदमाश के पैसे ने नहीं। हां, यदि वह रुपये देने का हठ करे तो मैं मना नहीं करूंगा।"

इस बात से भीड़ हंस पड़ी। फिर हरि और ओमाझी के कहने पर तात्या ने एक सौ रुपये का नोट निकाला और जुगनू को दे दिया।

जुगनू अब हीरो बन गया और यही वह चाहता था। इस लड़ाई की खबर चारों ओर फैल गई। इसके बाद गाड़ी के पास जादू के करतब देखने के लिये भीड़ इकट्ठा होने में देर नहीं लगी। भीड़ उसे प्रशंसा की दृष्टि से देखती हुई उसकी ओर पैसे फेंक रही थी।

सड़कू का काम था पैसे उठाना। जब डाकू करतब दिखाने में व्यस्त था सड़कू ने कुछ पैसे अपनी जेब में डाल लिये। फिर चुपचाप जाकर अपने और भरत के लिये पकौड़े-मुरमुरे वगैरह खरीद लाया। बाकी के तीनों आदमी भीड़ में खो गये थे।

जुगनू के दर्शक बदलते रहे। एक झुंड आगे बढ़ता तो उसका स्थान दूसरा दल ले लेता। हर बार जुगनू गाड़ी पर खड़ा होकर छोटा सा भाषण देता।

"यह एक पुरानी कहानी है, और पुराना करतब," वह बोला। "लेकिन दोहराने लायक है। होशियार रहो, होशियार रहो। सावधान यहीं कहीं जेबकतरे घूम रहे हैं। अपनी जेब और बटुये का ध्यान

कीजिए। होन्या डाकू की बात याद है न। जिस दाई ने उसे पैदा होने में मदद की उसने उस की उंगली से अंगूठी चुरा ली।''

इस बात से लोग हंस पड़ते। इसे क्षेत्र में होन्या डाकू की गाथा प्रसिद्ध थी। वह उन्नीसवीं शताब्दी का प्रसिद्ध डकैत था जिसे अंगरेजों ने पकड़ कर फांसी दे दी थी। उस दोपहर कई बार जुगनू ने गाड़ी पर चढ़ कर दर्शकों को अपनी सलाह दी थी। ''होशियार रहो। चोरों और जेबकतरों से सावधान रहो।''

अचानक एक नई उत्तेजना फैल गई। आदिवासियों का दल मेले में आया था। वे बहुत चटक रंग की जाकेटें पहने थे और उनकी कमर में घुंघरू बंधे हुए थे। अपने ऊंचे टोपों में उन्होंने मोर के पंख लगा रखे थे। उनके चेहरे मसखरों की तरह रंगे हुए थे और वे अपने ड्रम बजाते हुए मेले में नाच रहे थे।

अब समय आ गया था कि मेला अगले गांव में जाये। लोग जंगल के रास्ते पर नर्तकों के पीछे-पीछे चल पड़े थे।

एक अनोखे शहर में

जुगनू गाड़ी के पहिये का सहारा लेकर आराम करता रहा। कुछ देर में तात्या, ओमाझी और हरि भी आ गये थे। वे एक स्टाल से कुछ भोजन ले आये और गाड़ी में बैठ फिर चल पड़े। इस बार उन्होंने वह सड़क पकड़ी जो मैदानों और ताप्ती की घाटी को जाती थी।

एक मील जाने पर तीनों डकैत तरह-तरह के बटुए अपनी कमीजों की जेबों और धोती के ऊपरी हिस्से में से निकालने लगे। सड़कू और भरत आश्चर्य से देख रहे थे। पर्स प्लास्टिक, चमड़े, और कपड़े के थे जिन पर शीशे और मोतियों का काम हुआ था, आदमियों ने उनमें से चीजें निकालीं और बटुए सड़क पर फेंक दिये।

"ये सब बटुए, तुम्हें कहां से मिले?" सड़कू ने पूछा।

"तुमने मेरी बात नहीं सुनी थी क्या?" जुगनू ने हंस कर कहा। "मैं उन्हें बता रहा था कि वे कहां मिलेंगे—लोगों की जेबों में।"

जब जुगनू करतब दिखा रहा था तो बाकी तीनों भीड़ में व्यस्त थे। हर बार जब जुगनू सतर्क करता तो लोग अपने-अपने बटुए देखते। उस के बाद तीनों अपना काम आसानी से करते।

लेकिन जुगनू हंस रहा था क्योंकि उसने लोगों को सावधान किया था कि यह एक पुराना तरीका है। फिर भी लोग बेवकूफ बन गये थे।

उस शाम वे एक छोटे रेलवे स्टेशन पर जिसका नाम विरडल था, ठहरे। उन्होंने अपना शिविर एक टूटे-फूटे पुराने मन्दिर की दीवार के निकट लगाया। यहां उन्होंने फिर काली को बलि दी और रघुवीर से धोखे का बदला लेने की सौगंध खाई। तब ये लोग स्टेशन पर आ गये जहां जुगनू ने अपने और लड़कों के लिये टिकट खरीदे।

"तुम्हें पता है न कि अपना काम खत्म करने के बाद मुझ से कहां मिलोगे," जुगनू ने गाड़ी में बैठ कर अपने आदमियों से कहा। यह गाड़ी थोड़ी देर के लिये विरडल में रुकती थी।

गाड़ी उन्हें पश्चिम की ओर ले जा रही थी। अब गाड़ी पठार से उतर कर नदी के साथ-साथ तटीय मैदान में चल रही थी। सूरत में उन्होंने गाड़ी बदली और उत्तर की ओर चल पड़े। जब वे अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंचे तो आधी रात होने वाली थी। बड़ी-बड़ी चिमनियां ढेरों धुआं उगल रही थीं और फैक्टरियां रोशनी से चमचमा रही थीं। इस सबको लड़के आश्चर्य से देख रहे थे।

भरत ने टिप्पणी की, "यह बीरपुर की पेपर मिल से बहुत बड़ी हैं।"

"बीरपुर।" जुगनू ने नाक-भौ चढ़ा कर कहा, "वह गांव। अब तुम देखोगे कि असली शहर कैसा होता है। मेरे दोस्त यह वडोदरा है।"

वे तांगा लेकर ऐसी सड़कों और गलियों से निकले जहां चारों ओर ऊंची-ऊंची इमारतें खड़ी थीं। बड़े-बड़े सिनेमा के विज्ञापन और चौक पर जलती-बुझती लाइटें देखकर सड़कू दंग रह गया।

जुगनू ने तांगेवाले को एक खास स्थान पर चलने को कहा जहां की सब इमारतों में अन्धेरा छाया हुआ था क्योंकि लोग सो गये थे। वे एक पिछली गली में गए और एक आंगन की दीवार में लगे एक दरवाजे के सामने रुक गये। यहां वे उतर पड़े।

सड़कू ने भरत को अपनी पीठ पर उठा लिया। जुगनू ने बंडल उठा लिये। डाकू तांगे के जाने तक वहीं खड़ा रहा। तब दरवाजे पर जाकर उसने उसे एक खास तरीके से खटखटाया। उसने इस तरीके से दो बार दरवाजा खटखटाया तब जाकर किसी ने दरवाजा खोला। एक लम्बे तगड़े और डरावने व्यक्ति ने दरवाजा खोला और उन्हें भीतर आने का संकेत किया। यहां के रहने वाले अभी जग रहे थे।

अच्छी तरह प्रकाशित आंगन के एक सिरे पर एक सफेद बालों वाला व्यकित छड़ी का सहारा लिए खड़ा था। उसने एक अच्छा कुरता और धोती पहन रखी थी। यह व्यक्ति इस प्राचीन और भव्य घर में, उकेरे हुए लकड़ी के खम्भों और द्वारों के बीच काफी जंच रहा था।

उसके बिलकुल पीछे एक सुन्दर द्वार पर, जो घर के भीतर जाता था दो महिलायें खड़ी थीं। दोनों ने सुन्दर और कीमती कपड़े पहन रखे थे। इन मेहमानों को देख कर बड़ी औरत की त्योरियां चढ़ गईं।

लड़की करीब सोलह वर्ष की होगी। उसकी आंखें काली थीं और इस अजीब तिगड्डे को देख कर वह मुस्करा पड़ी। वे वास्तव में ही

अजीब लग रहे होंगे। दो नन्हें लड़के, एक दूसरे को उठाये हुए एवं अपने सलवट पड़े कपड़ों में और कन्धे पर गठरी उठाए जादूगर।

कुछ देर सब चुप रहे और फिर लम्बे सफेद बालों वाला व्यक्ति बोला, "मैं अभी सोया नहीं था, नहीं तो मैं सोचता कि दरवाजे पर दस्तक शायद सपना है। मेरे ख्याल में मैं बिलकुल जाग रहा हूं। क्या मैं जाग नहीं रहा देवकी?" उसने लड़की की ओर मुड़कर कहा और वह ज़रा सा मुस्करा पड़ी।

"हां, चाचा," उसने उत्तर दिया।

आदमी ने एक लम्बी सांस ली और मुड़ कर आने वालों को देखा।

"जुगनू, इस समय तुमसे ज्यादा अनचाहा मेहमान कोई नहीं हो सकता। तुम मुझे खराब चीज़ों की याद दिलाते हो– जिनों और भूतों की। तुम यहां क्यों आये हो? ये लड़के कौन हैं?"

सड़कू और भरत ने जुगनू की ओर देखा। उन्हें आशा थी कि इस अपमान पर जुगनू गुस्से से लाल-पीला हो जायेगा। उन्होंने चकित होकर देखा कि ऐसा कुछ नहीं हुआ। वह व्यक्ति जिसे जुगनू जादूगर कहते हैं और जिसके नाम से सतपुड़ा की पहाड़ियां कांपती हैं, इस समय मौन था।

यह निष्ठुर व्यक्ति अपने जैसे ही क्रूर लोगों, हरि, ओमाझी और तात्या, का नेता था। वे तीनों विश्वास करते थे कि वह हवा में उड़ सकता है और स्वयं को अदृश्य कर सकता है, लेकिन इस समय वह बिना कुछ कहे, मुंह लटकाये खड़ा रहा।

जुगनू के बारे में

"भरत देखो यहां जुगनू कैसा हो रहा है? भीगी बिल्ली की तरह," सड़कू ने टिप्पणी की। और यह सच था। यह व्यक्ति जैसे बिलकुल बदल गया था। अब वह ऐंठ कर नहीं चलता था और न शेखी बघारता था। न ही वह ऊंची आवाज़ में बातें करता था या दूसरों को आज्ञा देता था।

लड़कों को एक पिछले कमरे में रखा गया था। इस कमरे का द्वार आंगन में खुलता था। इकलौती खिड़की में सीखचे लगे थे और उसमें से केवल झाड़-झंखाड़ दिखाई देते थे। पेड़-पौधों का यह हाल यदि रामबचन देखता तो उसे बड़ा दुख होता। वे दरवाजे में से ही बहुत कुछ देखते और सुनते थे जिससे उन्हें इन लोगों के बारे में, जो उस मकान में रहते थे, काफी कुछ पता लग गया था।

मोदरया लाला, सफेद बालों वाला मालिक शाम को आगंन में बैठ कर हुक्का पीना पसन्द करता था। ऐसे समय वह अपने भतीजे जुगनू को सलाह भी देता था। जुगनू का असली नाम खेमू निकला। उनके बीच होने वाली लम्बी बातचीत से लड़कों को अपने पकड़ने वाले के बारे में कई बातें मालूम हुईं।

जुगनू के लिये अपराध करना आम बात थी। वास्तव में उसके पिता को डकैती और हत्या के लिये जीवन भर जेल में रहने की सजा मिली थी। लेकिन मोदरया को जुगनू का कार्य पसन्द नहीं था। वह उससे एक बिगड़े हुए बच्चे की तरह व्यवहार करता और जब उसका उपहास करता तो जुगनू झेंप जाता।

"तुम कहते हो कि शायद भरत के लिये पुलिस तुम्हारा पीछा कर रही है क्योंकि ड्राइवर रघुवीर पकड़ा गया है," मोदरया बोला, "लेकिन तुमने यह कैसे सोचा कि इस शहर में तुम सुरक्षित हो। क्या

मध्य प्रदेश में गहरे दर्रे नहीं, ऐसे घने जंगल नहीं जहां जंगली जानवर छिप सकते हैं?"

लड़के दरवाजे के पीछे उकडू बैठे सुनते और सुनकर एक दूसरे को देखकर मुस्कराते। उन्हें इस बदमाश को डांट पड़ते सुन कर बड़ा मज़ा आता था।

जुगनू उत्तर सदा नम्रता से देता। "तात्या पुलिस को गलत रास्ते पर ले जायेगा। वास्तव में पुलिस अब तक शायद हमें पटना या कलकत्ता में ढूंढ़ रही होगी। ज़रा सरगर्मी कम होगी तो मैं लड़के के पिता को फिरौती के लिये दूसरी चिट्ठी भेजूंगा।"

कुछ देर सब चुप रहे। मोदरया जब हुक्के से कश खींचता तो वह गुड़गुड़ाता। "मुझे यह ज़रा भी पसन्द नहीं है। यह मेरी लाइन नहीं है। लेकिन तुमने सयाने आदमियों की सलाह कभी नहीं मानी। तुम्हारी ही मूर्खता के कारण तुम्हारा पिता पकड़ा गया और आज जेल में सजा भुगत रहा है। जब मैंने तुमसे कहा था कि कुछ दिन छिपकर रहो और अहमदाबाद से बाहर चले जाओ, तब भी तुम खुले आम घूमते रहे और पुलिस की नज़रों में आ गए। मैंने तुम्हें अफ्रीका भेजने की व्यवस्था की थी। तुम हिन्दुस्तान क्यों लौट आए। तुम सदा से एक बेकार और बेवकूफ इंसान रहे हो। जादूगर वाले करतब दिखाते फिरते हो। फिर भी मुझे तुमसे हमदर्दी है। आखिर तुम मेरी बहन के बेटे हो।"

जुगनू सिर नीचा किये चुपचाप खड़ा रहा।

"कभी तो मुझे लगता है कि मैंने तुम पर दया कर के गलती की," मोदरया बोलता रहा। "जानते हो तुम्हारे पिता से जब मैं पिछली बार अहमदाबाद जेल में मिला था तो उसने तुम्हारे बारे में क्या कहा था। यह खेमू मेरा असली पुत्र नहीं है, शायद मेरे पहले जन्म का सबसे बड़ा दुश्मन है जिसने मुझे नष्ट करने के लिये मेरे यहां जन्म लिया है। और वह इसमें सफल भी हो गया है। उसकी बुरी

प्रकृति पहले से ही नज़र आ रही थी क्योंकि उसके जन्म के पश्चात् ही उसकी मां की मृत्यु हो गई। अब उसने मुझसे धोखा किया। सब के बीच में मेरा मज़ाक उड़वाया और सारी उम्र के लिये जेल में डलवा दिया।''

यह मोदरया लाला कौन था? लड़के इस बारे में सोचते रहते। वह एक उजड्ड क्रूर डकैत तो नहीं दिखता था लेकिन वह जुगनू का मामा था और जुगनू के काम को नापसन्द करता था।

''यह बिलकुल अच्छी बात नहीं। मुझे ज़रा भी पसन्द नहीं,'' वह बोला।

''सड़कू, तुमने इन की बात सुनी?'' भरत ने धीरे से कहा। ''अब वह हमें वापस बीरपुर भेजने का प्रबन्ध कर देगा।''

लेकिन उन्हें निराशा हाथ लगी। वृद्ध का चालाक दिमाग उनके लिये कुछ और ही योजना बना रहा था। मोदरया लाला जुगनू और उसके पिता जैसा साधारण चोर नहीं था।

जब वह युवा था तो उसने लोगों को लूटा था और हत्याएं भी की थीं। इसके उपरान्त उसने स्वयं को शिक्षित किया और एक विशेष प्रकार का अपराध करवाने लगा। मोदरया अब जवाहरातों का चोर था। रत्नों और जवाहरातों के बारे में ऐसी कोई बात नहीं जो वह न जानता हो। वर्षों के अनुभव ने उसे पारखी बना दिया था और इस विषय में उसे कोई धोखा नहीं दे सकता था।

अपने पेशे के चक्कर में वह देश के सब बड़े शहरों में घूम चुका था। वहां वह किसी छोटे होटल में ठहरता और जेवरों की दुकानों से अमूल्य आभूषण और कीमती जवाहरात उठाने में सफल होता और कभी पकड़ा न जाता। यदि उसे पता लगता कि पुलिस तेज़ी से उसका पीछा कर रही है तो वह उस स्थान को तुरन्त छोड़ देता।

वडोदरा में कोई पड़ोसी यह नहीं जानता था कि मोदरया लाला असल में क्या करता था। उसने लोगों में यह फैला दिया था कि वह

एक जौहरी है जिसकी दुकान ज़ावेरी बाज़ार, बम्बई में है जो अब उसके दो बेटे चलाते हैं। जब भी वह विमान द्वारा उनसे मिलने जाता तो एक ब्रीफ केस साथ ले जाता। उसके 'लड़के' चोरी का माल खरीदने और बेचने वाले लोग थे। वे केवल मोदरया द्वारा चुराई गई कीमती चीज़ें ही नहीं बल्कि अन्य लोगों द्वारा देश के भिन्न-भिन्न भागों से लाया गया चोरी का माल भी लेते थे।

वे चीज़ों पर छपे उनके नम्बर बदलने और कम्पनी का नाम बदलने में बड़े माहिर थे। इससे चीज़ों की पहचान ही खत्म हो जाती। वे जवाहरात और जेवरों के भी अच्छे पारखी थे। जो कुछ भी लेते उसके लिये अच्छी मार्किट थी और वे अच्छे लाभ पर उन चीज़ों को बेच देते।

जब जुगनू ने लूट के माल की अपनी गठरी खोली तो मोदरया की आंखों में चमक आ गई। यह माल जुगनू के अनुयायियों ने लूटा था। लेकिन मोदरया ने ऐसे दिखाया कि वह इन सबसे ज्यादा प्रभावित नहीं हुआ है।

"बहुत देहाती माल है," उसने टिप्पणी की और पायल, नाक की लौंग, कान के बुन्दे और गले में पहनने के लाकेट उलट-पुलट कर देखे। "इन्हें पिघला कर फिर से बनाना पड़ेगा, तभी ये बम्बई में बिक सकेंगे।"

मिटी हुई डाक मोहर

दिन धीरे-धीरे बीत रहे थे। कुछ भी नहीं हो रहा था। लड़कों की आशा कि वृद्ध जुगनू से कह कर उन्हें वापस भिजवा देगा, गायब हो गई थी। "काश, मैं अपने पिता को एक पत्र भेज सकता तब वह आकर हमें घर ले जाते," भरत ने कहा।

"ठीक है, मगर हमें पोस्टकार्ड कहां से मिलेगा और फिर उसे डाकघर में कौन डालेगा?" सड़कू ने पूछा। "मैं भी अपने चाचा को बताना चाहता हूं कि मैं राजी-खुशी हूं। इतनी देर तक मेरे घर न लौटने पर वह भी चिन्तित होंगे।"

"तुम कालिया से क्यों नहीं कहते कि हमें एक पोस्टकार्ड खरीद दे?" भरत ने सुझाव दिया। कालिया वही डरावना व्यक्ति था जिसने पहली रात दरवाज़ा खोला था। उन्होंने सोचा था कि वह नौकर है। मगर उन्हें अब पता लग गया था कि वह भी गिरोह का सदस्य था क्योंकि वह भी वही गुप्त भाषा बोलता था और मोदरया की कार चलाता था।

"बाप रे। तुमने वह चाकू देखा है जो कालिया अपने पास रखता है?" सड़कू बोला। वह कांपने का बहाना कर रहा था। "यदि मैं कार्ड के लिये कहूंगा तो वह मुझे चाकू घोंप देगा।"

लड़की देवकी उन से मित्रता करना चाहती थी। वह भीतर आकर उनके पास बैठ जाती। कभी-कभी मोदरया की गम्भीर चेहरे वाली पत्नी लक्ष्मी जब मिठाई बनाती तो देवकी थोड़ी-सी इनके लिये भी ले आती। रसोईघर आंगन के उस पार था।

पहले तो जुगनू को यह पसन्द नहीं आया। उसे संदेह था लेकिन बाद में देवकी की बेमतलब बकवास से उसने अन्दाजा लगाया कि लड़की मूर्ख है और यह कोई हानि नहीं पहुंचा सकती। वह खुश होता कि देवकी लड़कों के पास बैठी रहती है। वह स्वंय मकान के किसी अन्य हिस्से में चला जाता। वहां ट्रान्जिस्टर पर अपने मनपसन्द गीत सुनता हुआ सो जाता। देवकी ने एक दिन लड़कों को बताया, "मोदरया लाला मेरा असली चाचा नहीं है। जब मेरे पिता की मृत्यु हो गई तो उन्होंने मुझे अपने पास रख लिया। हमारी जाति में यदि कोई मर जाता है तो उसके परिवार या बच्चों की देखभाल पंच या अन्य लोग करते हैं।"

वह मोदरया और उसकी पत्नी से घृणा करती थी और यहां पर बिलकुल प्रसन्न नहीं थी। वह अभी स्कूल में पढ़ना चाहती थी और अन्य लड़कियों की तरह ही रहना चाहती थी। लेकिन मोदरया उसकी बात सुनने को तैयार नहीं था। "हमारी जाति की लड़कियों को किताबों से क्या सीखना है?" वह पूछता, "जो तुम्हें जानना चाहिये वह किताबों में नहीं मिलेगा।"

उसकी योजना के अनुसार देवकी का विवाह उसके एक बेटे से होगा।लेकिन अब वह उसे जवाहरातों की चोरी करने में प्रशिक्षण दे रहा था। वह उसे उसी समय बाहर ले जाता जब जेवरों की दुकान से उसे जेवर या जवाहरात उठाने में मदद चाहिये होती।

"लेकिन क्या तुम्हें डर नहीं लगता?" भरत ने पूछा। वह उसके दुख से दुखी था। "यदि कुछ गड़बड़ हो जाये और तुम पकड़ी जाओ?"

"हां, मुझे डर लगता तो है," उसने ईमानदारी से कहा, "तभी तो मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता। यदि मैं पकड़ी जाऊंगी तो मुझे जेल जाना पड़ेगा। मोदरया वकील वगैरह का इन्तज़ाम करेगा मगर फिर भी वह मुझे बचा नहीं सकेगा।"

देवकी को चोरी करने में बहुत डर लगता था। हर बार जब वह चोरी करने जाती तो उसे ऐसा ही महसूस होता। चोरी से कई दिन पहले उसका समय बड़े तनाव में निकलता। वापस आने पर मोदरया सदा अपनी होशियारी के गीत गाता और जौहरी की मूर्खता पर हंसता जिसे उन्होंने अभी-अभी लूटा होता। लेकिन देवकी इस खुशी में कभी भी भाग न ले पाती।

"तुम ऐसा करने के लिये राजी क्यों होती हो?" सड़कू ने पूछा।

"क्योंकि मुझे करना पड़ता है। यदि मैं इनकार करूंगी तो वह मुझे मारेगा। जब दो वर्ष हुए मैं यहां आई थी तो मैंने यह सब करने से इनकार कर दिया। मैं स्कूल में पढ़ना चाहती थी। मेरे पिता की भी

यही इच्छा थी। लक्ष्मी मुझे पीट कर इसी कमरे में बन्द कर देती। भोजन और पानी भी तब तक नहीं मिलता था जब तक मैं यह सब करने को राजी नहीं हो गई।"

"तुम भाग क्यों नहीं जाती?" भरत ने कहा। "चलो, हम सब भाग चलें, देवकी। तुम हमारे साथ बीरपुर चलो। मेरी दादी तुम्हारी सहायता करेंगी।"

"तुम्हारे ख्याल में मोदरया जब तक हमें ढूंढ़ नहीं लेगा क्या चैन लेगा? वह हमारे पीछे अपने आदमी लगा देगा। मैं उसके बारे में बहुत कुछ जानती हूं।"

यह बात सुन कर लड़के सोचने लगे। उन्हें याद आ गया कि ओमाझी, हरि और तात्या, रघुवीर के पीछे गये हैं क्योंकि वह उनके बारे में बहुत कुछ जानता था।

"यदि हम तुम्हें कुछ गुप्त बात बतायें तो वायदा करो तुम किसी को नहीं बताओगी?" भरत ने कहा।

"मैं कसम खाती हूं," वह ऊंगलियां गले को छुआ कर बोली।

"सड़कू यहां से भाग जाने वाला है," उसने धीरे से कहा। वह अपने स्वर की उत्तेजना को दबा नहीं पा रहा था।

"नहीं सड़कू, ऐसा मत करना, ऐसा मत करना।" वह डर कर बोली। "तुम कभी भाग नहीं सकोगे।"

"सड़कू काफी होशियार है," भरत बोला, "सड़कू जैसा होशियार और कोई नहीं है। जुगनू आजकल हमारा दरवाजा बिलकुल खुला छोड़ देता है क्योंकि अब गर्मी होने लगी है। सड़कू का विचार है कि वह दीवार पर चढ़ कर दूसरी ओर कूद जायेगा। तब वह बीरपुर जाकर मेरे पिता को बतायेगा कि मैं कहां हूं।"

"यह सोचना भी मूर्खता है," देवकी बोली।

"हम और कितनी देर यहां बैठे इन्तज़ार करें?" भरत ने जोश से कहा। "यदि मैं चल सकता तो मैं सड़कू के साथ चला जाता। मगर

वह मुझे उठा कर ले जाये तो पीछा करने पर वह तेज़ नहीं भाग पायेगा। जब हम जंगल में थे तो वह भाग सकता था मगर वह मेरे कारण नहीं गया। अब वह जाकर मेरे पिता से बतायेगा कि मैं वडोदरा में हूं।"

"बीरपुर कहां है? सड़कू, तुम्हारे पास गाड़ी की टिकट के लिये पैसे हैं क्या?" उसने पूछा।

"मैं स्टेशन पर किसी से पूछ लूंगा कि कौन सी गाड़ी बीरपुर जाती है और उसमें चढ़ जाऊंगा," सड़कू ने बड़े आत्म विश्वास से कहा। "टिकट किसलिये चाहिये। जब मैं नामदेव कठपुतलीवाले के साथ था तो हमने कभी टिकट नहीं खरीदा था लेकिन फिर भी यात्रा तो करते ही थे।"

"तुमने जो योजना बनाई है वह खतरनाक और मूर्खतापूर्ण है," देवकी ने बल देकर कहा। "यदि तुम भाग जाओगे तो तुम्हारे विचार से जुगनू यहां पर भरत के पिता के आने का इंतजार करता रहेगा। वह भरत को तुरन्त यहां से ले जायेगा। तब तुम क्या करोगे? भरत को कहां ढूढ़ोगे। यदि तुम बीरपुर जाना चाहोगे तो देखोगे कि ये लोग तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं—घर पर इंतजार करेंगे। गाड़ियों में आते जाते लोगों को देखेंगें और तुम्हें वहां पहुंचते ही पकड़ लेंगे।"

बहुत देर सब चुप रहे। भरत ने एक लम्बी सांस ली। "मेरी दादी बूढ़ी हैं। वह मेरे बारे में सोच-सोच कर बीमार हो जायेंगी," उसने रूंघे गले से कहा। "काश मैं उन्हें यह बता पाऊं कि मैं ज़िन्दा हूं।"

"मेरे चाचा-चाची भी मेरे लिये फिक्र कर रहे होंगे," सड़कू बोला। दोनों लड़कों की दृष्टि में एक विनती का भाव था। देवकी को उन पर दया आ गई। अभी तक सड़कू के भाग जाने की योजना को लेकर वे बहुत उत्तेजित हो रहे थे लेकिन अब उन्हें अपने छुटकारे का कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था।

"क्या मैं अपने परिवार वालों को लिख भी नहीं सकता—केवल

कुछ शब्द?" तब उसके माथे पर बल पड़ गये और वह फर्श को ताकने लगी। इससे क्या नुकसान हो सकता है भला? यदि वह पत्र में, कोई पता या शहर का नाम नहीं देते तो क्या हानि हो सकती है। "ठीक है। मैं तुम्हें एक पोस्टकार्ड ला दूंगी," वह बोली। "किन्तु तुम्हें लिख कर पहले मुझे दिखाना होगा और जुगनू को किसी तरह का शक मत होने देना।"

कुछ दिनों बाद भरत के घर के लोग उसका पोस्टकार्ड पाकर बहुत खुश हुए। वह कुछ अजीब तरह से लिखा हुआ था मगर इससे एक बात प्रमाणित होती थी कि वह जीवित था।

"मैं ठीक हूं। सड़कू अब भी मेरा सबसे अच्छा
दोस्त है। हम घर आना चाहते हैं मगर हमारे पास
टिकट के लिये पैसे नहीं हैं। सड़कू के पास मेले से
बचे पचास पैसे अभी भी हैं। वह कहता है कि यदि
हमें सोना या जवाहरात मिल जायें तो हम टिकट
खरीद सकते हैं। कृपा कर के दादी से कहिये कि मेरे
बारे में चिन्ता न करें। मैं अच्छी तरह से खाता हूं
और मुझे कभी बुखार नहीं हुआ। सड़कू के चाचा से
भी कह दीजियेगा कि परेशान होने की जरूरत नहीं।"

पोस्टमार्क मिटा हुआ था। लेकिन एक विशेषज्ञ की सहायता से उन्होंने पता लगा लिया कि पोस्ट कार्ड वडोदरा, गुजरात, से दो दिन पहले भेजा गया है।

बीरपुर में कुछ नई घटनायें घटीं थी जिनको यदि जुगनू जानता होता तो अवश्य डर जाता। रघुवीर दुर्घटना के बाद सारा दिन बेहोश रहा था। उसने होश आने पर इंस्पेक्टर व्यास को काफी कुछ बता दिया था। तभी वह मनमोहन सेठ के साथ जुगनू के छिपने के स्थान पर पहुंचे थे। लेकिन डकैत कुछ घंटे पहले ही वहां से निकल गये थे।

ड्राइवर को जुगनू का एजेंट बन कर काम करने की अपनी मूर्खता पर काफी खेद हो रहा था। वह पुलिस से माफी पाने के लिये पूरी तरह उनकी मदद करने को तैयार था।

"मुझे इन अपराधी लोगों के मामलों पर काम करने का काफी अनुभव है।" व्यास ने भरत के पिताजी को बताया। "रघुवीर ने फिरौती की रकम उड़ाकर उनसे विश्वासघात किया है। वे उसे इसके लिये कभी माफ नहीं करेंगे। मुझे विश्वास है कि वे उसका पीछा कर रहे हैं। मैं उसे छोड़ रहा हूं। लेकिन मेरे चार जासूस सारा समय उसकी चौकसी रखेंगे। इस तरह वह भाग भी नहीं सकेगा और यदि डकैतों ने उस पर हमला किया तो वे उसकी रक्षा भी करेंगे।"

उसने अपनी योजना रघुवीर को बता दी। यद्यपि ड्राइवर छूट जाने पर खुश था मगर ऐसा महसूस कर रहा था मानों वह बाघ के लिये जिन्दा चारा हो। वह कई सप्ताह परेशान रहा और डरता रहा था कि किसी समय भी कोई उस पर हमला करेगा।

एक शाम जब वह अपने रहने के स्थान पर वापस आया तो उसने तात्या, हरि और ओमाझी को घर की सीढ़ियों पर इन्तज़ार करते पाया। उसके चीखने पर सादे कपड़ों वाले सिपाही तुरन्त नीचे से ऊपर भागे आये। आकर उन्होंने गुण्डों को पकड़ लिया। लेकिन इससे पहले उन्होंने रघुवीर को चाकू से घायल कर दिया था जिससे वह फिर वापस अस्पताल पहुंच गया।

तीनों डाकुओं ने कुछ भी नहीं बताया कि जुगनू कहां है? न ही वे यह पक्की तरह बताने को तैयार थे कि दोनों लड़के अभी तक जीवित हैं। व्यास को जो कुछ रघुवीर ने बताया था उससे ज्यादा कुछ पता नहीं लगा। लेकिन अब पोस्टकार्ड से उन्हें एक महत्वपूर्ण सूत्र हाथ लग गया था।

जुगनू अपने आदमियों के लौटने का इन्तज़ार करता रहा। उसे यह भी पता नहीं था कि बीरपुर के इंस्पेक्टर व्यास ने वडोदरा में

इन्स्पेक्टर जगत को, जो क्रिमिनल इनवेस्टीगेशन विभाग में काम करते थे, भरत और सड़कू पर एक फाइल खोलने के लिये कहा है। इस फाइल में बच्चों का और उन्हें उठानेवाले का विस्तृत वर्णन था।

जाल धीरे-धीरे कसता जा रहा था।

मोदरया की खरीदारी

यदि गर्व और आडम्बर जुगनू की कमज़ोरी थी तो यह कमज़ोरी उस सारे परिवार में ही थी। मोदरया को भी अपनी चालाकी पर बड़ा घमंड था कि किस तरह वह लोगों को धोखा देकर उनके नाक के नीचे से चीज़ें उड़ा लेता है।

जब जुगनू और लड़के मोदरया के पास पहुंचे थे तो वह अपनी एक योजना पर काम कर रहा था जिससे उसे कई दोपहर घर के बाहर जाना पड़ता था। वह बड़ी सावधानी से कपड़े पहनता—चूड़ीदार पाजामा, अच्छे कपड़े का सफेद कुरता और खादी की जाकेट और एक काली टोपी। हाथ में छड़ी लेता। अब वह मध्यम वर्गीय भद्र पुरुष की तरह लगता था। उसके ड्राइवर के रूप में कालिया नई कलफ लगी सफेद वर्दी पहनता। मोदरया की कार का रंग स्लेटी था लेकिन उसका रंग जल्दी-जल्दी बदल जाता था और उसकी नम्बर प्लेट तो हर सप्ताह बदल जाती थी।

जो दुकान उसने चुनी थी वह शहर के एक अच्छे धनी इलाके फतहेपुरा में थी। दुकान के सामने शीशे लगे थे और शीशे के शेल्फों पर जामुनी और लाल रंग की मखमल लगे केसों में जेवर रखे हुए थे। जहां भी आंख ठहरती कीमती रत्नों की चमक और सोने-चांदी की दमक दिखाई देती।

मोदरया को यह देखकर खुशी हुई कि दुकान में एक काउंटर था जहां दो व्यक्ति ग्राहकों को जेवर दिखाने के लिये खड़े रहते थे। यह बड़ी महत्वपूर्ण बात थी। काऊंटर के अगली तरफ का थोड़ा-सा हिस्सा बाहर निकला हुआ था। इसके बिना वह अपनी योजना पूरी नहीं कर सकता था।

वह कई बार इस दुकान में गया। कई चीज़ें देखीं और अंगूठियों को देखने में काफी समय लगाया।

"अभी मेरा मन खरीदने को तैयार नहीं हुआ है।" उसने जौहरी को बताया, "मेरी बेटी की शादी होने वाली है। उसके लिए मैं कुछ उम्दा चीज़ों की तलाश में हूं। किसी दोपहर मैं अपनी पत्नी को ले आऊंगा जिससे वह इनमें से जो उसे चाहिये, चुन लेगी।"

सेल्समैन उसे अच्छी तरह जान गया था। वे लोग वृद्ध के रत्नों की परख से काफी प्रभावित हुए थे। वह हर अंगूठी को देखता, उसमें रत्नों की जड़ाई पर राय देता और यह बताता कि जवाहरात किस तरह काटे गए हैं। उससे पता लगता था कि उसे आभूषणों के बारे में बहुत जानकारी है।

मोदरया का दिल उन दो अंगूठियों पर, जो हीरे और माणिक से जड़ी हुई थीं, आ गया। यदि वे बम्बई में किसी धनी अरब को पसन्द आ गई तो वारे न्यारे हो जाएंगे। चुनाव करने के पश्चात मोदरया अंगूठियों को चुराने के लिये योजना बनाने लगा।

जब लक्ष्मी और देवकी कुछ दिनों बाद दुकान पर गईं तो जौहरी को वे दूसरे मध्यवर्गीय ग्राहकों जैसी लगीं। उन दोनों ने काफी आभूषण और कीमती साड़ियां पहन रखी थीं। बड़ी महिला जिस तरह हर आभूषण लड़की को दिखा रही थी उससे सेल्समैन को विश्वास हो गया कि वह उसके विवाह के लिये ही जेवर ढूंढ़ रही है।

देवकी कुछ अंगूठियां देखना चाहती थीं। उसने कई पहन कर देखीं। उन्हें पहन कर उसने अपने हाथ फैला कर देखे। उसके माथे

पर बल पड़ रहे थे। ऐसा लगता था कि वह लाड़-प्यार से बिगड़ी हुई लड़की है क्योंकि किसी भी चीज़ को वह पसंद नहीं कर रही थी। उसने मुंह बिचकाया, तरह-तरह के हाव-भाव दिखाए कि उसे कुछ भी पसंद नहीं आया।

काऊंटर छोटे बक्सों से भर गया था, जिनमें से निकाल कर सेल्समैन उसे तरह-तरह की अंगूठियां दिखा रहा था। सामने कई केस खुले पड़े थे जिनमें अंगूठियां थीं।

मोदरया ने, जो दो अंगूठियां उसे चाहिये थीं, उनका सही विवरण दे दिया था। देवकी को उन्हें पहचानने में ज्यादा देर नहीं लगी थी। पहला काम उसने यह किया था कि वह उस डिब्बे के सामने खड़ी हो गई जिसमें कि दोनों अंगूठियां रखी थीं। और काऊंटर के बाहर निकले हुए भाग के नीचे की तरफ मोम चिपका दी। उसके हाथ की गर्मी से मोम नरम और चिपचिपा हो रहा था। एक ऐसे क्षण का लाभ उठाकर, जब सेल्समैन की नज़र लक्ष्मी पर टिकी थी, उसने दोनों अंगूठियां उठाकर वहां चिपका दी थीं।

एकाएक देवकी ने सामने पड़ी अंगूठियों में रुचि लेनी बंद कर दी। इससे लक्ष्मी को पता चल गया कि चोरी का काम पूरा हो गया है। लड़की अब दुकान में यूं ही इधर-उधर देख रही थी। "क्योंकि तुम कुछ तय नहीं कर पा रही हो तो हम कुछ चूड़ियां और कड़े ही देख लें," लक्ष्मी ने कहा।

दोनों महिलायें काऊंटर के दूसरे हिस्से में पहुंचीं जहां जौहरी ने उन्हें दिखाने के लिये कुछ और डिब्बे निकाले। यद्यपि वे ये सब चीज़ें बड़े ध्यान से देखने का दिखावा कर रही थीं मगर उन्हें पता था कि पहला सेल्समैन सब अंगूठियों को उनके केसों में रख रहा है। वह हर अंगूठी को कागज़ में लपेट कर उसके डिब्बे में रख रहा था। वे इस इन्तजार में थीं कब उसे उन दो अंगूठियों के गुम होने का पता लगता है। इस में ज्यादा देर भी नहीं लगी।

उसने फिर से सारे बक्से निकाले और उनमें ढूंढ़ने लगा कि कहीं उसने गलती से किसी एक डिब्बे में दो तो नहीं डाल दीं। उसने फिर ज़रा ज्यादा ध्यान से अंगूठियों की खोज की। उसे गलतफहमी नहीं हुई थी। अंगूठियां वास्तव में ही खो गई थीं।

वह कुछ शर्मिन्दा और घबराया-सा लग रहा था, वह फुर्ती से अपने पीछे के दरवाजे में घुसा जहां एक आदमी बही-खातों पर काम कर रहा था। कुछ ही शब्दों में पहले आदमी ने दूसरे को स्थिति बता दी। दोनों आदमियों ने उन दोनों महिलाओं को देखा, जो चूड़ियां पहन कर देख रही थीं।

एक क्षण के लिये जौहरी कुछ तय नहीं कर पाया। तब वह आदमी बही-खातों को छोड़ कर काउंटर पर आ गया। उसने बोलने से पहले खंखार कर गला साफ किया। वह मोटा और नाटा था। सच तो यह है लक्ष्मी उससे लम्बी लगती थी। उसने लक्ष्मी से बात की, "बहनजी, ज़रा बात सुनिये," वह बोला, "कुछ गलती हो गई लगती है। दो अंगूठियां मिल नहीं रही हैं। शायद आप उन्हें पहन कर देखने के बाद उतारना भूल गई हैं....."

दोनों महिलाओं ने तुरन्त अपने हाथ फैला कर दिखाये कि वे कौन सी अंगूठियां पहने हुए हैं। उसने अपना सिर हिलाया, "तो शायद वे गिर कर आपकी साड़ी में फंस गई हैं...." वह हकला कर बोला।

लक्ष्मी ने सीधी होकर कड़ी नज़र से उसे देखा। "आपका क्या मतलब है? क्या आप हमारी तलाशी लेना चाहते हैं?" उसने गुस्से से चिल्ला कर कहा। उसकी आंखों से जैसे चिनगारियां निकल रही थीं।

"अरे नहीं, नहीं। मैंने यह तो नहीं कहा...."

"आप हमारे बैग देखना चाहते हैं, क्यों?"

"बहनजी, मैंने यह कब कहा....?"

"आप पुलिस बुलाना चाहते हैं न? बुलाइये। जाइये। बुला लाइये।"

"अरे सुनिये तो.... " जौहरी चिल्लाया, "मैंने तो सिर्फ इतना कहा..."

"तुमने सिर्फ इतना कहा।" गुस्से से भरी महिला ने दोहराया। "मैं जानती हूं कि आपने सिर्फ क्या कहा था।"

एक स्लेटी रंग की कार दुकान के सामने आ खड़ी हुई। वर्दी वाले ड्राइवर ने दरवाजा खोला तो कार का मालिक उतरा। मोदरया लाला अपनी छड़ी का सहारा लेते हुए दुकान में घुसा। उसे अपनी पत्नी और बेटी को जौहरी और सेल्समैनों से बहस करते देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ।

"इसका क्या मतलब है?" उसने पूछा। दोनों महिलायें अपमानित होने पर गुस्से से भरी हुई थीं। उन्होंने पूरी कहानी उसे सुना दी।

"यह हमारी और हमारे बटुओं की तलाशी लेना चाहता था। उसने यह भी कहा कि वह पुलिस भी बुलायेगा," लक्ष्मी ने चीख कर कहा।

"क्या सच?" मोदरया ने ज़ौहरी की ओर मुड़कर सख्ती से पूछा। आदमी ने इस आरोप का विरोध किया। "महोदय, मैंने तो सिर्फ..."

"क्या इसी तरीके से, आप सम्मानित ग्राहकों से बर्ताव करते हैं? मैंने आपसे स्वयं कहा था कि मैं अपनी पत्नी और बेटी को जेवर खरीदने लाऊंगा। लेकिन अब मैं यहां आया हूं तो क्या देखता हूं? हम पर दो बेकार-सी अंगूठियों की चोरी का आरोप लगाया जा रहा है।"

बेचारा जौहरी क्षमा मांगने लगा, "शायद कुछ गलतफहमी हुई है।

हो सकता है मेरा सेल्समैन ही लापरवाह हो.....” वह बोला। “मैं आपसे क्षमा चाहता हूं।”

लेकिन मोदरया इस तरह से क्षमा स्वीकार नहीं करने वाला था। पहले वह सारी बात जान लेना चाहता था। वह काउंटर पर उस स्थान पर आ गया जहां अंगूठियां दिखाई गई थीं । “तुम कहां खड़ी थीं ?” उसने देवकी से पूछा।

“बिलकुल यहीं,” उसने उत्तर दिया और उस स्थान की ओर संकेत किया जहां उसने अंगूठियां मोम पर चिपकाई थीं। मोदरया उसी जगह जा खड़ा हुआ। अब वह और सेल्समैन ठीक आमने-सामने थे। “अब तुम बताओ कि क्या हुआ,” उसने पूछा।

जब सेल्समैन याद करने लगा कि कौन सी अंगूठी उसने पहले दिखाई थी और कौन सी बाद में, तो महिलायें उसे बीच-बीच में टोकने लगीं। इस बहस के दौरान मोदरया के लिये आसान था कि वह मोम और दोनों अंगूठियों को अपने वेस्टकोट की जेब में डाल ले।

जब सारी कहानी दोहरा दी गई तो वह दुकान के स्वामी की ओर मुड़कर बोला, “आपको पहले अपने सेल्समैन की तलाशी लेनी चाहिये थी न कि आप भद्र महिलाओं को तंग करने लगे।”

युवक सेल्समैन का चेहरा लाल हो गया। यह युवक जौहरी का भतीजा था और उसे विश्वास था कि उसने गलती नहीं की है।

मोदरया ने एक कार्ड काऊंटर पर फेंका। जौहरी ने कार्ड उठाया। नाम तो परिचित नहीं था मगर उसके साथ प्रभावित करने वाली ढेर सारी डिग्रियां थीं। जौहरी कुछ परेशान-सा लगा। इसके साथ ऐसा लगा कि यह भव्य बूढ़ा पहले नागपुर हाईकोर्ट का जज था। उसका वर्तमान पता अलकापुरी का था, जो शहर का सबसे धनाढ्य क्षेत्र था।

“मुझे बहुत खेद है,” जौहरी ने कहना आरम्भ किया। लेकिन मोदरया ने चुप रहने का संकेत करते हुए अपना हाथ उठाया। वह



धीरे-धीरे बोलने लगा, "हमने सारी खरीदारी तुम्हारी दुकान से करना तय किया था क्योंकि आपके पास अच्छी चीज़ें हैं। लेकिन आज आपने एक अच्छा ग्राहक खो दिया। और यह भी याद रहे कि इस बात की खबर मैं अपने सारे दोस्तों को भी दे दूंगा।"

इस समय लक्ष्मी ने जो अभी भी गुस्से से लाल दिखाई दे रही थी, ने अपना बड़ा बटुआ खोल कर उसकी सारी चीज़ें बाहर निकाल कर काउंटर पर रखीं। देवकी ने भी वैसा ही किया।

"हां, हां, अच्छी तरह से देख लो। शायद तुम्हारी बेकार की अंगूठियां इन चीज़ों में मिल जायें," लक्ष्मी चिल्लाई। उसने गुस्से में अपनी चीज़ें अलग-अलग कर दीं। दोनों महिलाओं के बटुओं से निकले सौ-सौ रुपये के नोटों के बंडल देखकर जौहरी को काफी आश्चर्य हुआ। अब इसमें कोई शक नहीं था कि वे दोनों उस दिन हजारों के जेवर खरीदना चाहती थीं।

दोनों औरतों ने अब सारी वस्तुयें अपने-अपने बटुओं में डाली और मोदरया के पीछे बाहर निकल गईं जहां वर्दीधारी कालिया उनके लिये कार का दरवाज़ा खोले खड़ा था।

घर पहुंच कर वृद्ध बहुत खुश था। उसने यह कहानी इतनी बार सुनाई कि हंसते-हंसते उसकी आंखों से आंसू निकल आये। "तुमने उनके चेहरे देखे थे जब उन्होंने इतना रुपया देखा। उनकी आंखें बाहर निकली पड़ रही थीं।"

जौहरी को क्या पता था कि हर गड्डी में केवल ऊपर और नीचे के नोट असली थे। उनके बीच में सफाई से काटे हुए कागज रखे थे।

"अब," उसने भरत और सड़कू से कहा, जो दरवाज़े में खड़े सब कुछ दिलचस्पी से सुन रहे थे। "अब हम तुम्हारा प्रशिक्षण आरम्भ करेंगे।"

इंस्पेक्टर जगत सुराग की खोज में

इन दिनों जौहरियों की दुकानों में चोरियों की बड़ी रिपोर्टें आ रही थीं। यह आश्चर्य की बात भी नहीं थी क्योंकि यह विवाहों का मौसम था। लेकिन इनमें से कोई भी चोरी, सेंधमार कर, शटर तोड़कर या ताला तोड़कर नहीं हुई थी। वे उठाइगिरी के मामले थे।

मुख्य आफिस में बैठे हुए इंस्पेक्टर जगत ने उन क्षेत्रों को नोट किया जहां से शिकायतें आई थीं और उसने शहर के नक्शे में उन क्षेत्रों पर चिन्ह लगा दिये। फतेहपुरी की बड़ी दुकानों से भी चोरियों की कई शिकायतों आईं थीं। अब चोरियां घड़ियाली पोल के पुराने बाज़ार में होने लगीं थीं। यहां की दुकानें परिवार चलाते थे। कारीगर दुकान में ही जेवर बनाते और घर का बड़ा-बूढ़ा ग्राहकों को निपटाता। वह एक तख्त पर बैठता जिस पर चादर बिछी होती और तिजोरी के ऊपर कांटा रखा होता।

गांव वालों के दल शहर में जेवर और कपड़ा खरीदने आते। उनकी औरतें शहर की औरतों से अलग ही पहचानी जाती थीं क्योंकि वे पूरी बाहों के ब्लाऊज, घाघरे और ओढ़नियां पहने रहतीं। इनमें से कुछ अपराधी भी हो सकती थीं जो खरीदारी के बहाने कुछ जेवर अपने घाघरे की चोर जेब में डाल लेती हों। और किसी को पता लगे बिना वे भाग जाती हों।

लेकिन नियमित रूप से होने वाली चोरियों से सुनार चिन्तित होने लगे थे। उन्हें विश्वास था कि इन चोरियों के पीछे कोई बहुत चालाक दिमाग काम कर रहा है। यह काम किसी गिरोह का था।

गिरोह और संगठित अपराध, जगत के विभाग में आते थे। उसने निश्चय कर लिया था कि वह विवाहों का मौसम समाप्त होने से पहले ही इस कूट योजना का भंडा फोड़ कर देगा।

जगत इस विभाग में सबसे कम उम्र का इंस्पेक्टर था और सम्भावना थी कि वह बहुत उन्नति करेगा। लम्बे समय तक जांच विशलेषण ने उसे एक विशेषज्ञ बना दिया था। कभी-कभी तो वह कोई केस केवल सहज बुद्धि से ही हल कर देता। जब पूछा जाता कि उसने यह कैसे किया तो वह हंस देता मगर समझा न पाता। वह कहता, "मुझे पता नहीं।" लेकिन वह इसलिए जानता था क्योंकि वह हर समय जानने का प्रयास करता था। दूसरों को यह बुद्धिमत्तापूर्व अनुमान लगता था। मगर इसके पीछे बहुत परिश्रम, सावधानी एवं ध्यान से सूत्रों और सुरागों की खोज का प्रयास था।

साधारण व्यक्तियों की वेशभूषा में वह घड़ियाली पोल क्षेत्र में घूमा और अन्य बाज़ारों और गलियों में भी गया जहां से चोरी की रिपोर्टें आई थीं। उसने देखा कि सुनारों की अच्छी बिक्री हो रही है। दुकानों में औरतों की भीड़ होती। वह यूंही सोच रहा था कि हर शादी के मौसम में न जाने कितने किलो सोने की खरीद-फरोख्त हो जाती होगी।

कुछ इमारतें पुरानी थीं। छज्जे झुक गये थे और टूटी सीढ़ियों द्वारा व्यक्ति ऊपर की मंजिलों में पहुंचते थे। इनसे उसे कुछ भी पता नहीं चला। उसने सड़कें पार की और सुनारों की दुकानों को अच्छी तरह से देखने के लिये उनके सामने खड़ा रहा। उसने उन दुकानों को भी देखा जो दोनों तरफ सुनारों की दुकानों से लगी हुई थीं– कपड़े, मनियारी और अत्तारों की दुकानें। इनसे भी उसे कुछ पता नहीं चला।

जैसे इन सबसे उकता गया हो इस तरह वह दीवारों, लैम्प के खम्भों को देखने लगा और उन पर लगे चुनाव के विज्ञापन और नारों को पढ़ने लगा। तब उसने कुछ ऐसा देखा जिससे वह रुक कर उसे घूरता रहा। उसने वे शब्द सावधानी से पढ़े और तेजी से दूसरी सड़क पर पहुंचा जहां से चोरी की एक रिपोर्ट आई थी।

यहां पर सुनार की दुकान के आगे कोई दीवार न थी मगर उसने शब्द पटरी पर लिखे देखे। वे आते-जाते लोगों के पैरों से करीब-करीब मिट चुके थे मगर उसने उन्हें पहचान लिया। उसने पांच अन्य स्थानों का भी निरीक्षण किया जहां चोरियां हुई थीं। और उसे ये शब्द कहीं निकट में ही लिखे मिले। मगर वह उन शब्दों का कोई अर्थ न लगा सका। 'हरि ओ३म् हरि ओ३म्,' हिन्दी में लिखा होता था और अंगरेजी में लिख होता था "वी आर आल फ्रेंड्स।"

ये शब्द चाक से लिखे होते। जहां ये शब्द किसी दीवार पर लिखे होते तो उनकी ऊंचाई इतनी होती जहां तक बच्चा ही पहुंच सकता था। लेकिन किसी बच्चे के लिखे शब्दों और सड़क पार की दुकान से सोने के जेवरों की चोरी का आपस में क्या संबंध था भला?

जगत ने वह सुबह अन्य बाज़ारों में भी, जो कुछ लिखा हुआ था पढ़ने में बिताई। लेकिन उन स्थानों पर ये खास शब्द नहीं मिले।

उसने निश्चय किया कि वह इस बारे में सुनारों के बाजू वाली दुकानों से पूछेगा और उसने इस काम के लिये एक घड़ीसाज की दुकान को चुना। एक वृद्ध आदमी स्टूल पर बैठा हुआ अपने काम करने वाली टेबल पर झुका हुआ आंखों पर आई ग्लास लगाये बैठा था।

उसने जगत के प्रश्न के उत्तर में गुर्रा कर कहा, "कौन सी दीवार और क्या लिखावट?" मैगनीफाइंग ग्लास के पीछे उसकी आंखें ऐसी लग रही थीं मानों बहुत बड़ी मछली की आंखें हों।" वडोदरा की दीवारों और पटरियों पर बहुत कुछ लिख रहता है। तुम्हारे ख्याल में मेरे पास क्या इतना समय है कि जो कोई राम या श्याम लिखे वह पढ़ूं?"

"मैंने सोचा शायद आपको पता हो," जगत ने नम्र स्वर में पूछा।

"यदि तुम्हारी घड़ी खराब हो तो मैं उसकी मरम्मत कर दूंगा। लेकिन मेरा समय मत खराब करो।" उसने अपनी चिमटी उठाई और

मुड़ कर सामने खुली पड़ी घड़ियों के भीतर झांकने लगा।

जगत ने चलते हुए लम्बी सांस ली। यह बात रोचक थी– देखने और ताकने में कितना फर्क था, उसने सोचा। एक तरह से वह भी वृद्ध घड़ीसाज की श्रेणी में ही था। दोनों ढूंढ़ रहे थे इसलिये दोनों को दिख रहा था। लेकिन जगत जो ढूंढ़ रहा था और देख रहा था वह नहीं था जो घड़ीसाज नन्ही घड़ी के भीतर देख रहा था।

अगले स्थान पर जगत को ज्यादा काम की बातें मिलीं। यह एक रेडियो मरम्मत करने वाले की दुकान थी। एक आदमी काउंटर के पीछे जँभाई ले रहा था। वह एक ऐसा लड़का था जो कुछ ज्यादा मोटा हो गया लगता था और खाली बैठा बाहर बाज़ार में गुज़रने वालों को देख रहा था। या तो काम कम था, या मालिक यह देखने के लिये वहां नहीं था कि मरम्मत का काम हो रहा है या नहीं।

"कौन सी लिखावट?" उसने पूछा। जब जगत ने सड़क के पार दीवार पर लिखे शब्दों की ओर संकेत किया तो उसने कहा, "अजीब बात है कि आप पूछ रहे हैं। यह एक सड़कछाप जादूगर ने पिछले हफ्ते ही लिखे थे।"

"वह दिखने में कैसा था?"

"उसके दाढ़ी-मूंछे नहीं थीं—सिर भी घुटा हुआ था। उसका सिर बड़ा, गोल और चमकीला था। रंग बहुत काला और तोते की चोंच जैसी नाक और बड़े-बड़े कान थे। बहुत ही निर्दयी लगता था। मैं उस पार से यहां उसकी आवाज़ सुन सकता था क्योंकि उसकी आवाज़ बड़ी ऊंची और तीखी थी। मैं उसे देखने के लिये वहां गया। खेल ज्यादा अच्छा नहीं था। वही सामान्य करतब-चीज़ों का आना और गायब हो जाना। वह किसी विदेशी भाषा में गिनता था और फिर ताश के साथ उसने करतब दिखाये थे?"

"और यह लिखाई? इस लिखने के बारे में कुछ?" जगत ने पूछा।

"उसके शो में यही तो एक दिलचस्प चीज़ थी। वह अपने पैर की उंगलियों के साथ अनोखे काम करता था—ताश के पत्ते उठाना और यहां तक कि सिगरेट जलाना। उसने ये शब्द अपने पैरों द्वारा लिखे थे।"

जगत ने सोचा सुबह तो अच्छी बीती। वह सोच रहा था यह सड़क छाप जादूगर कौन है? उसका जेवर चोरों से क्या संबंध है?

जगत की सहज प्रेरणा का परिणाम

"मैं चाहता हूं घड़ियाली पोल के उन बाज़ारों में जहां अभी कोई चोरी नहीं हुई है आदमी लगा दिये जायें," जगत ने आदेश दिया। "मुझे सेंधमारों और उठाइगीरों में दिलचस्पी नहीं। मुझे एक जादूगर की तलाश है। यदि वह तुम्हें किसी सुनार की दुकान के सामने करतब दिखाता दिखाई दे तो उसी समय रिपोर्ट करो।"

देखने में यह एक अजीब आदेश लगता था। लेकिन सी.आई.डी. के जो आदमी काफी समय से उसके साथ काम कर रहे थे, वे जानते थे कि इस आदेश के पीछे कोई अच्छा कारण अवश्य होगा।

एक सप्ताह बीत गया। रिपोर्ट आई कि तीन दुकानों से काफी कीमत का माल उठ गया है। सब एक ही बाज़ार में थीं। इस बाज़ार में दुर्भाग्य से कोई जासूस तैनात नहीं था।

लेकिन जगत ने उस क्षेत्र का निरीक्षण किया। उसे वही शब्द पटरी पर लिखे दिखाई दिये। अब उसे विश्वास हो गया था कि उसकी खोज ठीक चल रही है। गिरोहों के साथ अनुभव ने उसे सिखाया था कि वे वही तरीका, जो पहली बार सफल हो जाता है, बार-बार इस्तेमाल करते हैं।

एक टेढ़ामेढ़ा कटोरा था। कटोरा काफी बड़ा था और वह भीख के लिये गुजरने वाले लोगों के सामने कर देता।

''मालिक, लंगड़े के लिये दस पैसे। दस पैसे मालिक, दस पैसे।'' बड़ा लड़का गाड़ी खींचता हुआ चिल्ला रहा था।

उसका स्पष्ट और तीखा स्वर ट्रैफिक की आवाज़ से ऊंचा सुनाई दे रहा था। जुगनू ने सुना मगर वह भविष्यवाणी करने में वयस्त रहा। वैसे ही मोदरया ने भी इस ओर ध्यान नहीं दिया। वह गली के दूसरे छोर पर पान की दुकान से पान खरीद रहा था। सड़कू का चिल्लाना इस बात का संकेत था कि देवकी जौहरी की दुकान में घुस गई है।

''ठहरो। ठहरो। तुम बहुत तेज़ जा रहे हो, सड़कू?'' भरत ने चिन्तित हो कर कहा। ''हम तो आधा रास्ता पार भी कर आये हैं। सड़कू, थोड़ी देर रुक जाओ।''

पहले भी कितनी बार ऐसा कर चुकने से वे अच्छी तरह जानते थे कि जब देवकी बाहर निकले तो उन्हें जौहरी की दुकान से ज़रा दूर होना चाहिये। इस चीज़ का अभ्यास उन्होंने घर के पिछले आंगन में खूब किया था। पिछली शाम को मोदरया उन्हें कार में बाज़ार लाया था जिससे वे सब दुकानों से परिचित हो जायें और उन्हें पता चल जाये कि कहां पर उन्हें देवकी का इन्तज़ार करना होगा।

सड़कू गाड़ी को खड़ा करके वहीं रुक गया। अब वे एक बर्तनों की दुकान के सामने खड़े स्टेनलेस स्टील के ढेरों चमकीले बर्तनों को देख रहे थे। '' क्या तुम जुगनू को सुन सकते हो?'' उसने धीरे से भरत को कहा। '' वह कितना शोर मचाता है।''

''ऊम, दोयज, त्रेस, क्वार्तो,'' जुगनू पुर्तगीज में गिन रहा था। वे जानते थे कि अब वह रुपयों वाला करतब कर रहा होगा। वे उस समय से, जब कबूतरी से जुगनू ने रुपये छींक कर निकलवाये थे, कितनी दूर आ गये थे। भरत सोचने लगा, 'क्या वे फिर कभी बीरपुर देखेंगे' उसने अपने कटोरे में पड़े पैसे देखकर एक लम्बी सांस ली।

"जुगनू हमेशा हम से ज्यादा पैसे कमाता है," वह बोला।

मोदरया लड़कों को वे पैसे अपने पास रखने देता था जो वे मांग कर कमाते थे। भरत उन्हें बीरपुर के लिये टिकट खरीदने के लिये जमा कर रहा था। ये तभी हो सकता है यदि वे कभी जुगनू से पीछा छुड़ा सकें। लेकिन इस तरह तो इस काम को पूरा करने के लिये काफी समय लगेगा।

"सेठ," सड़कू ने एक मोटे आदमी को सम्बोधित किया जो उनके पास से गुजर रहा था, "लंगड़े के लिये दस पैसे।"

सेठ, केवल दस पैसे।" भरत ने अपना कटोरा ऊपर उठाया और उस आदमी ने उसमें सिक्का डाल दिया।

"भगवान आपका भला करे। आपको ढेर सारा पैसा और बेटे दे," सड़कू उसके पीछे मुंह चिढ़ाता हुआ बोला।

"तुम उसे इतने आर्शीवाद किसलिये दे रहे हो," भरत ने गुस्से से कहा।

"उसने कितने पैसे दिये?"

"केवल दो पैसे," भरत बोला।

सड़कू ने उदास होकर कहा, "दुनिया का दिल पत्थर का है।"

उसने रस्सी खींची जिससे गाड़ी कुछ आगे बढ़ गई। लोग पास से निकले जा रहे थे। सड़कू भीख मांगता और भरत कटोरा आगे बढ़ा देता। कुछ ही लोगों ने कटोरे में पैसे फेंकने के पश्चात उन्हें ध्यान से देखा या उन पर दूसरी दृष्टि डाली थी।

लेकिन एक आदमी था जो उन्हें बड़े ध्यान से देख रहा था। यह जगत था जो सड़क के दूसरी ओर खड़ा उन्हें घूर रहा था।

एक अजीब संयोग

जगत के मन में कुछ खटका। यह रहा एक और अनोखा संयोग–एक जादूगर और दो लड़के जो दस और नौ वर्ष के हैं। उनमें से एक विकलांग है। और ये सब एक साथ उस बाज़ार में दिखाई पड़े थे। क्या उसे बीरपुर में हुए अपहरण का सूत्र मिल रहा है जिस का विवरण मध्य प्रदेश से व्यास ने उसके पास भेजा था।

"सड़कू, तुम ध्यान नहीं दे रहे हो," भरत ने एकाएक कहा।

सड़कू ने देखा कि देवकी जौहरी की दुकान से निकल रही है। उसने अपने कदम तेज़ किये और साथ में गाड़ी भी खींचता हुआ देवकी की ओर चल पड़ा। जब वे उसके निकट पहुंचे तो उसने ऊंची आवाज़ में कहा, "बहनजी, लंगड़े के लिये दस पैसे। सिर्फ दस पैसे।"

जुगनू ने उनको सड़क के उस पार सुना। यह संकेत था कि लड़की माल उठा कर दुकान से बाहर निकल आई है। अब समय आ गया था कि वह अपना प्रदर्शन बन्द करे। वह ताश के पत्ते अपने पैर की उंगलियों से उठाने लगा। फिर हंसते हुए उसने अपनी जेब से माचिस और सिगरेट निकाली और उसे जला कर लम्बा कश खींचा। दर्शक समझ गये थे कि प्रदर्शन समाप्त हो रहा है और उन्होंने जुगनू के लिये कुछ पैसे फेंके। फिर वह पैर की उंगलियों में चाक पकड़ कर दिखाने लगा कि वह इस तरह लिख भी सकता है– "हम सब दोस्त हैं।"

"दस पैसे। सिर्फ दस पैसे।" सड़कू चिल्लाया। देवकी ने ज़रा रुक कर उसके कटोरे में भीख डाली और आगे बढ़ गई। सड़कू अब गाना गाने लगा। "गरीबों की सुनो, वो तुम्हारी सुनेगा।" वह अपने सबसे ऊंचे स्वर में चीख रहा था। वह बाज़ार की दूसरी ओर जाते हुए गा रहा था और गाड़ी भी खींच रहा था। लेकिन अब वह इतनी तेज़ रफ्तार से जा रहा था कि जगत को हंसी आ गई। ऐसा लग रहा था कि वह और भी तेज़ जाना चाहता है।

मोदरया ने चैन की सांस ली। सड़कू के गीत का मतलब था कि लड़की ने चीज़ों को जहां रखना था रख दिया है। अब वह लड़कों को पिछली गलियों से ले जाते हुए लूट का सामान निकाल कर उसे कार द्वारा घर ले जायेंगे। कार पहले से ही निश्चित स्थान पर खड़ी थी और कालिया उसका ड्राइवर था।

वह आशा कर रहा था कि लड़की ने काफी माल उठाया होगा। कभी-कभी ऐसा लगता था कि वह इस काम में पूरा मन नहीं लगाती थी। वह आराम से अपने आप घर पहुंच जायेगी। बाद में जुगनू भी लड़कों के साथ आ जायेगा।

जगत ने पवन से कहा, "उन भिखारी लड़कों का पीछा करो। उन्हें और उनकी गाड़ी को थाने ले आओ। कुणाल, तुम उस जादूगर को पकड़ो। लेकिन ध्यान से। यदि यह वही आदमी है जो मैं समझ रहा हूं तो वह ज़रा सख्त ग्प्रहक साबित होगा। उसे भी थाने ले आना मगर लड़कों के साथ मत रखना। मैं थोड़ी देर में आया।"

केवल एक छोटी-सी चीज़ पर सारा दारोमदार था। यह चीज़ सिर्फ जगत के ध्यान में आई थी। उसने देखा था कि जब युवती ने विकलांग लड़के को भीख दी तो उसने अपना कटोरा आगे नहीं बढ़ाया था जैसे कि वह दूसरों से भीख लेते वक्त करता था। बल्कि उसने कटोरे को जरा टेढ़ा कर दिया था, जिससे जो कुछ भी उसने दिया था वह विकलांग लड़के की टांगों के बीच से गाड़ी में जा गिरा था।

जगत ने फुर्ती से सड़क को पार किया। उसकी इच्छा यह थी कि युवती के भीड़ में खो जाने से पहले उसे रोका जाये। वह उस लड़की के निकट पहुंच पाता इससे पहले ही कुरते-धोती में एक सुनार लपक कर दुकान से बाहर निकला और युवती के पीछे भागा।

"दो अंगूठियां, एक चैन और कानों के चार जोड़ी बुन्दे।" जगत ने उसे हांपते-हांपते कहते सुना, जब उसने मज़बूती से लड़की का

बाजू पकड़ कर उस पर आरोप लगाया। "मैं लुट गया चीज़ें चोरी हो गईं। मैंने उन्हें स्वंय देखा था कि ये चीज़ें वहां थीं और फिर एकाएक गायब हो गईं। तुम्हीं वहां उन चीज़ों के सबसे निकट बैठी थीं...."

लोग रुक कर सुनार के चारों ओर जमा हो गये। वह उसे बाजू से पकड़े रहा।

"यह झूठ है," वह अपना बाजू छुड़ाने की कोशिश करती हुई बोली। जगत भी उस भीड़ में शामिल हो गया। यह देख कर उसे आश्चर्य हुआ कि लड़की बहुत छोटी उम्र की थी—ज्यादा से ज्यादा सोलह वर्ष की होगी।

"मैं चाहता हूं कि इस की तलाशी ली जाये," सुनार चिल्लाया। "समय आ गया है कि इस तमाशे को बन्द किया जाये और इन बेशर्मों को जेल भेजा जाये।"

जगत आगे बढ़ा। "मेरे ख्याल में इसका फैसला थाने में होगा," उसने दृढ़ता से कहा।

"तुम कौन हो?" लड़की ने पूछा। वह सोच रही थी कि कोई राहगीर यूं ही अपना रौब दिखा रहा है।

"सी.आई.डी. इंस्पेक्टर जगत," उसने कहा। वह विस्मित सी चुपचाप उसके पीछे चल दी।

मोदरया ने देवकी को सुनार के साथ थाने जाते तो नहीं देखा, लेकिन उसने इतना अवश्य देख लिया था कि वह वहां से नौ दो-ग्यारह हो गया।

पहले उसने लड़कों को देखा था—एक आदमी भरत को उठाये था और सड़कू चुपचाप गाड़ी घसीटता आगे चल रहा था।

उसके बाद जुगनू। उसने काफी सामना किया था। अपने पकड़ने वाले को उसने सिर नीचा करके मारने की कोशिश भी की थी। लेकिन बहुत से लोगों ने आखिर उसे नीचे ज़मीन पर गिरा ही दिया था। वे उसे तब तक पकड़े रहे थे जब तक कुणाल ने उसे हथकड़ी नहीं पहना

दी। तब वह उसे आधा उठाये, आधा घसीटते हुए थाने ले गये और जाकर कोठरी में बन्द कर दिया।

मोदरया पिछली गलियों में से घूमता-घामता वहां आ पहुंचा जहां कालिया कार के साथ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। "जल्दी चलो," चालाक वृद्ध ने कहा। वह परेशान था और हांपता हुआ कूद कर कार में बैठ गया। "लड़के पकड़े गये हैं। जुगनू भी पकड़ा गया है।"

"देवकी कहां है?"

"मुझे पता नहीं। मेरे ख्याल में वह स्वंय ही घर आ जायेगी। लेकिन कालिया, तुम यहां से फटा-फट भाग चलो।"

कई प्रश्नों के उत्तर मिले

पुलिस थाने के एस.एच.ओ. ने एक छोटा-सा कमरा जगत को काम करने के लिये दे दिया। ज्यादा चोरियां उसके क्षेत्र में ही हुई थीं। इसलिये अपराधियों के पकड़े जाने पर उसे प्रसन्नता हुई।

"क्या मैं नोट्स लूं?" पवन ने पूछा।

"मेरे ख्याल में इसकी ज़रूरत नहीं होगी," जगत ने इनकार में सिर हिलाते हुए उत्तर दिया। वह बैठ गया। उसने पैड और पैन्सिल उठा ली। "लड़के कहां हैं?"

"यहीं पर, उस दरवाज़े के पीछे वाले कमरे में," उसने भीतरी दरवाज़े की ओर संकेत करते हुए कहा।

"ठीक है। सुनार को कुछ देर बाहर ही रखो और लड़की को भीतर भेज दो। पहले मैं उससे बात करूंगा।"

देवकी गंदे प्रतीक्षालय में एक बेंच पर बैठी थी। लोग और सिपाही इधर-इधर आ-जा रहे थे। उसने जुगनू की आवाज़ पहचान

ली थी। वह बरामदे में दूर वाले कमरे में बन्द गाली-गलौज बकता झींक रहा था। वह कब पकड़ा गया? लड़के कहां है? क्या मोदरया और कालिया भी पकड़े गये हैं?

एकाएक उसे ऐसे लगा मानों वह बहुत थकी है। वह चाहती थी यह सब जल्दी से खत्म हो जाये। पिछले दिन उसके लिये तनाव और दुख के थे। मोदरया अपने कार्य की सफलता से इतना खुश था कि वह ज्यादा महत्वाकांक्षी होता जाता था। वृद्धावस्था में वह जैसे कुछ पागल हो गया था। वह अपने कार्य के दौरान दुस्साहसी होता जाता था और बहुत खतरा उठाने को तैयार हो जाता था। वह उस पर, और लड़कों पर अपनी योजना के अनुसार कार्य करने के लिये जबरदस्ती करता था।

जब उसे बुलाया गया और वह इंस्पेक्टर के सामने जाकर बैठी तो वह मन ही मन निश्चय कर चुकी थी कि अपने को बचाने की ज्यादा कोशिश नहीं करेगी। उसे आश्चर्य हुआ जब इंस्पेक्टर सख्ती से पेश नहीं आया और न ही उसने उसे अपना अपराध स्वीकार करने के लिये कहा। "मैं तुम्हारी तलाशी नहीं लूंगा और न ही तुम्हें अपना बटुआ उलटने के लिये कहूंगा, क्योंकि मैं जानता हूं जेवर तुम्हारे पास नहीं हैं।"

"सुनार को शायद भ्रम हो गया था," उसने कहा, "उसकी दुकान में और औरतें भी तो थीं या उसने जेवर अन्य जेवरों के साथ रख दिये होंगे।"

"नहीं, मेरे ख्याल में उसे गलतफहमी नहीं हुई," जगत ने दृढ़ता से कहा। "जेवर उसकी दुकान से उठाये गये हैं। मैंने यह कहा था कि जेवर इस समय तुम्हारे पास नहीं है।"

उसकी आंखें पैड पर लगी हुई थीं जिस पर वह पेन्सिल से कुछ लिख रहा था। वह सोच रही थी शायद जो वह बोल रही है, इंस्पेक्टर उसे नोट कर रहा है।

लेकिन जो बात उसने कही थी उससे वह दुविधा में पड़ गई थी। इंस्पेक्टर को विश्वास था कि जेवर चोरी हुए हैं और उसे इस बात का भी विश्वास था कि वे उसके पास नहीं है। उसे कैसे पता चला? शायद यह एक चालाकी भरा अनुमान है।

"हम तुम्हें यहां ज्यादा देर नहीं रख सकते क्योंकि हम तुम्हारे विरुद्ध कुछ प्रमाणित नहीं कर सकते," वह बोला। उसका हाथ पैड पर ऐसे रखा हुआ था कि उस पर क्या लिखा हुआ है वह देख नहीं पा रही थी।

"हम सुनार से कह देंगे कि उसने तुम्हें पकड़ने में गलती की है क्योंकि जेवर तुम्हारे पास नहीं हैं।"

"यह कैसा खेल था?" देवकी सोच रही थी। उसके लिये यह सब नया था। पुलिस उसे पकड़ लेगी यह विचार उसे सदा भयभीत करता रहा है। लेकिन उसने ऐसी कल्पना नहीं की थी। वह उसके झुके सिर को परेशान आंखों से देख रही थी और फिर उस कागज़ को देखा जिस पर वह इतने ध्यान से लिख रहा था।

उसी क्षण जगत ने ऊपर देखा और कागज़ से अपना हाथ उठा लिया। वह कुछ लिख नहीं रहा था। उसने पैड पर भरत की गाड़ी का बड़ा अच्छा चित्र बनाया था।

जगत अब उसे शेड करने लगा। कभी वह कागज़ को दूर रख कर देखता और फिर कोई रेखा ठीक कर लेता।

"तुम्हारे जाने से पहले मैं तुम्हारी मदद चाहता हूं," उसने मुस्करा कर कहा। "इससे हमें घड़ियाली पोल की सब चोरियों का सुराग लग जायेगा।"

वह बहुत उत्सुकता और परेशानी से उसे देख रही थी और वह चित्र बना रहा था।

"उस दरवाजे तक जाओ," उसने अन्त में कहा, "उस दरवाजे में ऊपर एक छेद है जिससे तुम भीतर आराम से देख सकती हो मगर



भीतर के लोग तुम्हें नहीं देख सकते। ज़रा झांक कर देखो और यह बताओ कि क्या तुम इन लोगों को जानती हो।"

उसने वैसा ही किया। उसे आशा थी और विश्वास भी कि वह मोदरया और कालिया को देखेगी। भीतर झांक कर वह तुरन्त दूर हट गई। पर जगत ने उसके चेहरे के भाव देख लिये थे। फर्श पर गाड़ी के साथ सड़कू और भरत बैठे थे। उनके चेहरों पर ऐसी निराशा और उदासी थी कि जिसने उसके मर्मस्थल को छू लिया और उसे बहुत अफसोस हुआ।

"क्या तुम उन्हें जानती हो?" उसने अपने चित्र की ओर देखते हुए पूछा, "क्या तुमने उन्हें पहले कहीं देखा है?"

"दो भिखारी लड़के, इंस्पेक्टर साहब?" उसने कहा, "भला मैं उन्हें कैसे जानूंगी?"

"मैंने सोचा कि शायद तुम्हें याद आ जाये कि तुमने उन्हें कहीं देखा है। क्या तुम्हें याद है कि थोड़ी देर पहले बाज़ार में लंगड़े को तुमने भीख दी थी। सुनार की दुकान से निकलते ही।"

उसका हृदय धक से रह गया। वह जानता है क्योंकि उसने देखा था। अब क्या करूं?

जगत ने पैंसिल नीचे रख दी और एक लम्बी सांस लेकर उठ खड़ा हुआ। "चलो, बाहर चल कर सुनार को समझा दें कि तुम शायद असली अपराधी नहीं हो और चीज़ें तुम्हारे पास नहीं हैं।"

वह उस दरवाज़े से बाहर निकला जो हाल में खुलता था लेकिन वह उसके पीछे जाने के लिये नहीं उठी। लड़कों का क्या होगा? वह सोचने लगी, "क्या वह उन्हें यहां छोड़ कर चली जाये?"

"इंस्पेक्टर साहब, अब आप क्या करेंगे," उसने पूछा।

"हम उस आदमी या आदमियों को गिरफ्तार करके चार्ज लगायेंगे जिनके पास से जेवर मिलेगें," उसने उत्तर दिया।

सड़कू, भरत? क्या वह उनके साथ ऐसा व्यवहार कर सकती है?

जगत ने उसके चेहरे पर अनिश्चय के भाव देखे। कोई अन्य औरत चुपचाप बाहर निकल जाती। यह अलग बात थी कि वह उसे दूर न जाने देता। लेकिन यह लड़की उनसे अलग थी।

सच तो यह था कि देवकी मोदरया लाला के भय और लड़कों के प्यार के बीच उलझ गई थी। "इंस्पेक्टर साहब, मैं . . ." उसने आरम्भ किया और फिर रुक गई।

यह सोच कर कि वह शायद कुछ सहायता चाहती है जगत उसे फिर भीतरी दरवाजे पर ले गया और खोल कर धीरे से उसे भीतर की ओर धकेला।

"देवकी," सड़कू और भरत साथ-साथ चिल्लाये। फिर उन्होंने एकदम हाथ अपने मुंह पर रख लिये। उन्होंने मोदरया का सख्त निर्देश तोड़ दिया था। 'सदा याद रखो,' जब वे बाहर कार्य करने जा रहे थे तो वह बोला था, "घर के बाहर न वह तुम्हें जानती है और न तुम उसे जानते हो। न ही देखने या शब्द से कोई यह जान पाये कि तुम सब साथ-साथ काम कर रहे हो। यदि एक पकड़ा जाये तो उसे दूसरों के बारे में नहीं बताना चाहिये नहीं तो उसे पछताना पड़ेगा।"

जगत भी लड़की के पीछे-पीछे भीतर आ गया था और दीवार से लगी एक बैंच पर बैठ गया था।

"हां, अब ठीक है।" उसने मुस्करा कर कहा। "अब हम एक दूसरे से परिचित हो जायेंगे। यह देवकी है। मैं सी.आई.डी. इंस्पेक्टर जगत हूं और तुम शायद भरत और सड़कू हो?"

"तुमने इन्हें बताया?" सड़कू ने देवकी की ओर मुड़ कर कहा। लेकिन उसने सिर हिला कर 'न' कहा। उसके चेहरे पर आश्चर्य के भाव स्पष्ट थे। इंस्पेक्टर कैसे जानता है?

"इसने मुझे नहीं बताया," जगत बोला, "मुझे बीरपुर के इंस्पेक्टर व्यास ने बताया है।"

"क्या आप इंस्पेक्टर व्यास को जानते हैं," भरत ने खुश होकर

पूछा, "वह और मेरे पिता जी इकट्ठे शिकार करने जाते हैं। वह मेरे पिता जी के दोस्त हैं।"

"मैं उन्हें व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता हूं लेकिन अब तुम मिल गये हो तो यह भी संभव हो जायेगा। उन्होंने मुझे, सड़कू और तुम्हारा अपहरण होने की रिपोर्ट भेजी थी। लेकिन जो तस्वीर उन्होंने भेजी थी अब उससे तुम बहुत भिन्न लगते हो भरत।"

भरत हंस पड़ा। उसके बाल लम्बे थे और वह गन्दा लग रहा था। भरत और सड़कू दोनों ही चिथड़े पहने हुए थे, जिससे वे भिखारी दिखाई दें।

"लेकिन इंस्पेक्टर व्यास को कैसे पता चला कि हम वडोदरा में हैं?" उसने पूछा।

"उस पोस्टकार्ड की मोहर से जो तुमने घर लिखा था," जगत ने उत्तर दिया।

"हमें डाकखाने की मोहर का तो ख्याल ही नहीं आया," भरत ने कहा, "देवकी ने कहा था कि शहर का नाम मत लिखना और यह भी मत लिखना कि हम किसके पास हैं लेकिन हमें मोहर का तो ख्याल नहीं आया।"

"हमारा काम है लोगों की इन छोटी-छोटी भूलों का फायदा उठाना," जगत ने मुस्करा कर कहा। "व्यास ने जुगनू का भी हमें अच्छा विवरण भेजा था।"

उस बदमाश के नाम पर लड़कों का मुंह उतर गया। उन्हें डर था कि इस समय भी जुगनू बाहर खड़ा कहीं उनकी राह देख रहा होगा। वह उन्हें ज्यादा बातें करने के लिये सजा देगा।

"अब तुम्हें उससे किसी बात का डर नहीं है," जगत ने उन्हें विश्वास दिलाया। "वह इसी थाने में बन्द है। और बीरपुर से मिली हाल की रिपोर्ट से हमें पता चला है कि उसके दोस्त तात्या, हरि और ओमाझी भी पकड़े गये हैं।"

"हां, लेकिन अभी भी..." भरत ने बोलना शुरू किया और फिर देवकी की ओर देखता हुआ चुप हो गया। सब कुछ देर चुप रहे।

"इन्हें बता दो," देवकी ने अन्त में कहा।

"मोदरया लाला और कालिया," दोनों लड़कों के मुंह से निकला और उन्होंने चैन की सांस ली।

"वे कहां है?" जगत ने तुरन्त पूछा।

"मेरे ख्याल में वे कार में हमारा इन्तज़ार कर रहे हैं," सड़कू ने अनिश्चित सा उत्तर दिया। जगत तत्काल खड़ा हो गया। उसने पवन और कुणाल को बुलाया और लड़कों से कार का विवरण पूछा। देवकी ने उन्हें उस गली का नाम भी बताया जहां वह खड़ी होगी।

"लेकिन अब तक तो वे चले गये होंगे," जगत बोला। "वे कहां रहते हैं?" तब देवकी ने फतेहगंज के घर का पता दे दिया।

"कुछ और आदमी ले जाओ और उन्हें तुरन्त गिरफ्तार करके लाओ," जगत ने आदेश दिया। जासूस जल्दी-जल्दी बाहर चले गये।

"इंस्पेक्टर साहब, क्या अब हम बीरपुर वापस जा सकेंगे?" सड़कू ने पूछा।

"ज़रूर। लेकिन एक आखिरी समस्या है जिसके हल के लिये मुझे तुम्हारी ज़रूरत है।"

"हां, हम मदद करेंगे," सड़कू ने झट से कहा।

"देखो लड़को, बाहर एक सुनार बैठा है जो तुम्हारी दोस्त देवकी को अपनी दुकान से गहने चोरी करने के लिये दोषी ठहराता है। वह वृद्ध बहुत ही गुस्से में है। वह चाहता है कि उसकी तलाशी ली जाये और इसे उठाइगिरी के लिये गिरफ्तार कर लिया जाये। मुझे पूरा विश्वास है कि गहने देवकी के पास नहीं है। लेकिन वह मुझसे पूछेगा कि वे कहां हैं। मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं उसे क्या उत्तर दूं।"

एक उलझन भरी चुप्पी छा गई। इस खुशी में कि अब जुगनू से उनका पीछा छूट गया है और वे बीरपुर जा सकेंगे, लड़के सुबह जिस

कार्य के लिये निकले थे उसे भूल ही गये थे। अब उन्हें फिर घर नहीं जाने दिया जायेगा। बल्कि अब इंस्पेक्टर जगत उन्हें चोरी के लिये जेल में डाल देंगे।

वे फिर देवकी की ओर मुड़े कि वह क्या कहती है। यदि वह पूरी बात बता दें तो उसे उनके साथ जेल जाना पड़ेगा। लेकिन देवकी ने अनुभव किया कि अब कोई बहाना बनाना बेतुका है। भरत की गाड़ी का चित्र बना कर जगत ने संकेत तो कर ही दिया था कि वह उनके रहस्य को जानता है।

"इन्हें दिखा दो," उसने धीमे से कहा।

बात को फटाफट खत्म करने के लिये सड़कू ने गाड़ी को अपनी ओर खींचा। उसने उसके निचले हिस्से से एक पेनल हटाई और सोने के जेवर बाहर निकाले।

"यह काफी दिलचस्प बात है," कहकर जगत ने गाड़ी का निरीक्षण किया। उसने देखा कि तला डबल है और खिसकने वाली पेनल के ठीक ऊपर भरत की टांगें आती थीं। जो कुछ भी देवकी उसकी गोद में डालती वह फिसल कर नीचे तले में चला जाता।

"इसके लिये मुझे बहुत अभ्यास करना पड़ा तभी ठीक हुआ," भरत ने कहा। "जब देवकी गुज़री तो पेनल खुली थी और मैंने कटोरे से वह छिपा लिया जो कुछ उसने उसमें डाला था। जब कोई देख नहीं रहा था तो मैंने फुर्ती से पेनल खिसका दी थी।"

"यह जुगनू का विचार था? क्या उसी ने यह योजना बनाई थी?" जगत ने पूछा।

"नहीं," सड़कू ने उत्तर दिया।"जुगनू तो केवल सड़क पर हमारे निकट रहता था और अपने करतब दिखाता था। चोरियों की यह सारी योजना मोदरया ने बनाई थी। उसने ही हमें सिखाया था कि क्या करना है। उसने हमसे कहा था कि यदि हमने उसकी आज्ञा न मानी या पुलिस को सूचना दी तो वह हमें मार डालेगा।"

बीरपुर में वापसी

इंस्पेक्टर ने उस दिन दो केस किये—जौहरियों की दुकानों से चोरी और बीरपुर अपहरण कांड। लेकिन जब पवन और अन्य सिपाही मोदरया के घर पहुंचे तो पता चला कि बदमाश वहां से भाग चुका है।

सारा स्थान ऐसे था मानो भूकम्प आया हो। देगची में खाना भी गर्म था क्योंकि लक्ष्मी रसोईघर में खाना बना रही थी। लेकिन जगत ने शहर की सब चौकियों को सन्देश भेज दिया की वे वडोदरा से बाहर जाने वाली सड़कों पर एक सलेटी कार का, जिसमें मोदरया, लक्ष्मी और कालिया हैं, ध्यान रखे। उसकी नम्बर प्लेटें झूठी हैं।

जगत ने बड़े आत्मविश्वास से कहा, "हम उन्हें पकड़ लेंगे।" उसने उन्हें एक होटल में ठहरा दिया और दो सिपाही सादे कपड़ों में उनकी रक्षा के लिये तैनात कर दिये। बीरपुर फोन करने पर भरत के माता-पिता पहले आने वाले विमान से वडोदरा आ पहुंचे।

"लेकिन अब देवकी क्या करेगी? इंस्पेक्टर साहब?" सड़कू ने पूछा, "वह कहां जायेगी।"

"देवकी, जुगनू और मोदरया के विरुद्ध हमारे केस की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। उसकी साक्षी ज़रूरी है। मैं ध्यान रखूंगा कि उसकी अच्छी तरह देखभाल हो।"

जगत का ख्याल था कि वह उसे इस प्रांत से निकाल कर दिल्ली के रिमांड होम में भेज देगा। उसका नाम भी बदल दिया जायेगा जिससे कोई जान नहीं पायेगा कि वह कौन है। इससे उसके गिरोह के लोग उसका पीछा नहीं कर पायेंगे। वह फिर से पढ़ सकेगी और अपना जीवन अपनी इच्छानुसार ढाल सकेगी।

जब भरत के माता-मिता ने उसे फिर देखा तो उनके आंसू बहने लगे। भरत ने अपने आंसुओं को रोकने की बहुत कोशिश की, मगर

असफल रहा। सड़कू सोच रहा था कि इन आसुंओं के लिये उसे क्षमा किया जा सकता है। वैसे उसकी अपनी आंखें भी डबडबा आई थीं। वह खुश था कि वह वापस बीरपुर जा रहा था।

"ज़रा अपनी हालत तो देखो," श्रीमती दुबे ने कहा। उन्होंने उसी समय लड़कों के बाल काटने के लिये होटल के नाई को बुला भेजा। जब वे नहा रहे थे और मल-मल कर अपने को साफ कर रहे थे, मनमोहन सेठ बाज़ार जाकर उनके लिये नये कपड़े ले आये।

सड़कू को अपने लिए भरत जैसे कपड़े देखकर आंखों पर विश्वास नहीं आ रहा था। लेकिन सबसे अधिक खुशी उसे चमड़े के काले जूतों पर हुई। उसने ऐसे जूते लेने का सदा सपना देखा था। खासकर जब वह सतपुड़ा की पहाड़ियों को पैदल पार कर रहा था, तो उसने कई बार सोचा था—'काश मेरे पास जूते होते।' अब वह होटल के बाहर गलियारे में जूते पहन कर चहलकदमी कर रहा था। जो आदमी वहां चौकसी के लिये खड़ा था उसे यह देख कर हंसी आ रही थी।

जब वे बीरपुर वापस आये तो कागज़ मिल के मजदूरों को एक दिन की वेतन सहित छुट्टी दी गई। जिस दिन लड़के आये उस दिन बड़े बंगले के लॉन पर बहुत बड़ी दावत हुई। शहर के सब महत्वपूर्ण व्यक्ति और भरत के सब संबंधी उसमें शामिल हुए।

सड़कू को भरत की व्हील चेयर के पास मुख्य स्थान मिला। मनमोहन सेठ ने एक छोटा-सा भाषण दिया जिसमें सड़कू की तारीफ की।"मैं इस साहसी लड़के को इसकी वफादारी का योग्य इनाम दूंगा। वह सारा समय भरत के साथ रहा जब कि वह आसानी से वहां से भाग सकता था। मैं इसे छात्रवृत्ति दूंगा और इसकी पढ़ाई का पूरा खर्चा उठाऊंगा। उसके बाद वह हमारी मिल में किसी अच्छे पद के लिये प्रशिक्षण पायेगा।"

इस घोषणा का लोगों ने ताली बजा कर स्वागत किया। भरत ने सड़कू की ओर मुस्करा कर देखा।

"स्कूल जाऊं?" सड़कू ने सोचा। उसे लग रहा था कि यह विचार उसे शायद ज्यादा पसन्द नहीं आया। क्योंकि इसमें कोई खास पैसे मिलने वाले नहीं थे। रामबचन के सहायक के रूप में उसे फिर भी दस रुपये मिलते थे। भरत के पिता ने सबसे पहली बात यह की कि उसे उसके पिछले चार महीनों के वेतन के रूप में पचास रुपये का कड़क नोट दिया जो उसकी नई निकर की जेब में पड़ा था। साथ में उसका खोटा रुपया भी था जो इस घटना में सारा समय उसके साथ रहा था।

उसे चालीस की जगह पचास मिले तो उसने सेठ साहब से कहा था, "सेठ साहब, मेरे पास इस का छुट्टा नहीं है...."

"कोई बात नहीं," दुबे साहब हंस पड़े थे। "वह भी अपने पास रख लो।"

भाषणों के बाद सब उठकर खाने-पीने लगे थे। सड़कू भरत की कुर्सी के पीछे खड़ा था। "सड़कू, जाना नहीं," भरत ने कहा। उसने अपने दोस्त को स्वादिष्ट चीज़ों से भरी प्लेट दिलवाई।

आडम्बर प्रिय लोग वहां रुकते और सड़कू का सिर थपथपाते। इत्र आदि लगाये महिलायें भरत के इधर-उधर चक्कर काट रही थीं। सड़कू इन सबसे उकता गया। उसने तब चैन की सांस ली जब भरत ने कहा, "यहां से चलो, सड़कू।"

सड़कू भीड़ में से कुर्सी लेकर निकलने लगा। इसमें कुछ समय लगा क्योंकि वे बार-बार रोक लिये जाते। कौतूहली लोग उन्हें घेरे हुए थे और इस दुर्घटना के बारे में जानना चाहते थे। "भरत, तुम वापस आ गये हो तो कैसा लग रहा है। वहां तुम्हें डर नहीं लगता था।"

"हां, मुझे डर लगता था," भरत ने स्वीकार किया, "लेकिन सड़कू भी मेरे साथ था। कभी-कभी हमें आनन्द भी आता था।"

उसे अच्छा लगा कि वह अपना असहायपन और डर बिना किसी

लज्जा के याद कर रहा था। इंस्पेकटर जगत ने कहा था कि वे दोनों बहुत बहादुर लड़के हैं।

बंगले का पोर्च भरत के चचेरे और ममेरे भाई-बहनों से भरा हुआ था। वे सड़कू को इर्ष्या से देख रहे थे। ये लोग डाकुओं के साथ रहे थे। वे इच्छा कर रहे थे कि काश वे इससे आधे ही भाग्यशाली होते।

"हमें उन के बारे में बताओ," एक ने कहा।

भरत ने शुरू किया मगर उसे कहानी सुनाने की कला नहीं आती थी। जब सड़कू ने सुनाना शुरू किया तो वह खुश हुआ।

सड़कू की बातें विशेषतया पनिबर के होली मेले का वर्णन , सुन कर सब बहुत खुश हुए। जब वह कहानी सुनाता तो उसके हाथ-पैर और उसका दुबला-पतला शरीर भी उसमें शामिल हो जाता। वह कूदता, छलांग लगाता, अभिनय करता। अभी वह हरि था, अभी तात्या, अभी ओमाझी और अभी तोते की सी नाक वाला दुष्ट जुगनू जादूगर।

जब दावत खत्म हो गई, लोग चले गये और अन्धेरा हो गया तो सड़कू सोचने लगा कि अब क्या करूं? हीरो होटल में उसका स्थान किसी और ने ले लिया होगा। फिर इन अच्छे कपड़ों में वह वहां जाना भी नहीं चाहता था। रसोईघर के कूड़ा-कर्कट से उसकी कमीज और नये जूते खराब हो जायेंगे।

भरत का परिवार सामने के बरामदे में इकट्ठा था, जहां भरत बैठा हुआ था। रामबचन अपने स्थान पर खम्भे के सहारे बैठा था।

माताजी बोली, "सड़कू, अब पूरी कहानी सुनाओ–उस क्षण से जब रघुवीर तुम्हें कार में ले गया।"

"लेकिन माताजी, मैं अपने चाचा-चाची के पास नहीं गया। उन्हें बताया भी नहीं कि मैं वापस आ गया हूं," सड़कू ने उत्तर दिया।

रामबचन बोला, "अबे जा, तेरा कोई चाचा नहीं है? स्टेशन के पास कोई टिम्बर डिपो नहीं है।"

"कौन कहता है?" सड़कू चिल्ला उठा।

"पुलिस ने पता लगाया था, जब वो जांच पड़ताल कर रही थी। स्टेशन के पास कोई दक्षिण टिम्बर डिपो नहीं है।"

"वे गलत सड़क पर चले गये होंगे," सड़कू ने कहा। "मेरे चाचा-चाची हैं। मुझे घर जाकर उनसे मिलना है और अपने दूसरे दोस्तों से मिलना है।"

"तुम कल चले जाना, सड़कू," भरत बोला।

"नहीं, मैं अभी जाऊंगा," उसने उत्तर दिया।

सड़कू फाटक की ओर चल पड़ा था जब रामबचन ने उसे पुकारा। "जरा ठहरो, तुम कुछ भूल गये हो।" उसने छत की कड़ी में हाथ डाल कर कुछ निकाला।

"क्या है?" सड़कू ने कौतूहल से पूछा। वह वापस आकर बरामदे की सबसे निचली सीढ़ी पर खड़ा हो गया था। उसने देखा कि माली ने उसके दोपहर के खाने का पैकेट मेज के बीचोंबीच रख दिया। यह ईंट का वही टुकड़ा था जो रोज की तरह वह उस दिन भी लाया था जिस दिन भरत व उसका अपहरण हुआ था।

रामबचन ने इसे गैराज में शेल्फ पर छिपा हुआ देखा होगा और वह उसे बंगले पर ले आया होगा।

"चार महीने तक खाना ऐसे ही पड़ा रहे यह ठीक नहीं," रामबचन ने मुस्करा कर कहा। "तुम्हारी चाची के परांठे अब तक तो सड़ भी गये होंगे।"

"रामबचन, उसे मत छेड़ो," माताजी बोलीं, जब माली रुमाल की गांठ खोलने की कोशिश कर रहा था।

सड़कू समझ गया कि वह जानती हैं कि पैकट में क्या है। वह उस हंसी की आवाज़ कल्पना से सुन सकता था जब गांठ खुलेगी। लेकिन क्या भरत भी हंसेगा?" वह सोचने लगा।

इससे पहले कि वृद्धा मेज तक पहुंचतीं सड़कू लपक कर पांचों

सीढ़ियां चढ़ गया। उसने पैकेट छीना, और मुड़कर फाटक की ओर भाग लिया।

"क्या था? रुमाल में क्या था?" उसने मनमोहन सेठ को पूछते सुना। मगर वह रामबचन का उत्तर सुनने के लिये वहां रुका नहीं।

उसके जूते सड़क पर चूं-चूं कर रहे थे। उसे यह बुरा लगा। रुक कर उसने उन्हें उतार लिया। रुमाल से ईंट निकाल कर झाड़ियों में फेंक दी और रुमाल गले में बांध लिया। जूते दोनों हाथों में उठा कर उसे जुर्राबों में भागना ज्यादा आरामदेह लगा। सड़क के आसपास के पेड़ों के अन्धकार में वह अजीब-सा लग रहा था। वह चक्कर काटता, कूदता हुआ जा रहा था। एक स्वतन्त्रता का भाव जिसे वह इतने दिनों बाद महसूस कर रहा था।

"सड़कू। सड़कू।" उसने भरत की पुकार सुनी। वह कह रहा था, "कल सुबह आना मत भूलना।"

उपसंहार

बिना किसी चीज़ पर ध्यान दिये सड़कू भागता चला गया। वह सीधा स्टेशन पर गया। गाड़ियां आ-जा रही थीं। वे पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण को जा रही थीं।

उसके कपड़े बिलकुल नये थे। कीमती जूते थे जिन्हें वह किसी काम की चीज़ से बदल सकता था और जेब में था पचास रुपये का नोट। इससे तो वह सारी दुनिया देख सकता है। वह अपने रुपयों में से टिकट पर पैसे बिगाड़ने वाला नहीं था। वह यात्रा बिना सामान और बिना टिकट करेगा।

बीरपुर में सड़कू फिर कभी नज़र नहीं आया। लेकिन शायद जब हम यह पढ़ रहे हैं तो हो सकता है किसी छोटे शहर में एक लड़का किसी धनी के बंगले पर आया है और कह रहा है, "मैंने सुना है कि आपको माली चाहिये। मैं बगीचे के बारे में सब कुछ जानता हूं। मैंने बीरपुर के राजा के महल में काम किया है।"

वह पतला-दुबला लड़का टांगें और बाजू का पुलिंदा भर लगता है। उसके कपड़ों ने कभी अच्छे दिन देखे हैं। वे सब हंसते हैं जब वह अपना नाम बताता है। लेकिन वह इसका आदी है। उसकी मुस्कराहट एक कान से दूसरे कान तक फैल जाती है। वह कहता है, "यह मेरे परिवार का नाम है। अब आप बाकी कहानी सुनिए. . . ."

फिर वह नामदेव भट्ट कठपुतलीवाले की आवाज़ में एक सड़कू राजा के बारे में बताता है जिन्होंने बीरपुर के राजा के लड़के की जान क्रूर जुगनू जादूगर के गिरोह से बचाई।

शब्द उसके मुंह से निकलते आते हैं। कभी कहानी तेज़ी से चलती है और कभी धीमी और धमकियों के डर से भारी हो जाती है।

उसका स्वर ऊंचा हो जाता है जब फांसी का रस्सा जुगनू आदि के गले में पड़ता है। फिर उनकी हड्डियां गिर जाती हैं, जो कौवे आदि गिद्धों ने साफ कर दी हैं। कभी वह जुगनू है तो कभी हरि है तो कभी ओमाझी।

उसके सुनने वाले सोचते हैं, "क्या खूब कहानी गढ़ी है। कमाल का गप्पी है।"

वैसे ऐसी कहानी का होना असंभव है। यह कभी हो नहीं सकती थी। और इसका माली के काम से कोई संबध नहीं है। लेकिन वे उसे काम दे देते हैं क्योंकि उन्हें उसका आत्मविश्वास पसन्द आया है। ऐसा लगता है कि वह अपने साथ एडवैन्चर लायेगा। सड़कू जैसे आदमी के आसपास होने से कुछ भी हो सकता है।

दस वर्ष का सड़कू एक शेखीबाज़ और हंसमुख बालक था। वह डाकुओं के पंजे से आसानी से भाग सकता था। मगर भरत के प्रति उसकी वफादारी उसे वहां से भागने नहीं देती। उसकी हर बात में अच्छाई देखने की आदत भरत को डाकुओं की कैद में भी प्रसन्न रखती है। जब वे डाकुओं के साथ सतपुड़ा की दुर्गम पहाड़ियों को पार कर के बडोदरा पहुंचते हैं तभी पुलिस को उनका सुराग लगता है।

किशोरों के लिए एक रोचक और मनोरंजक पुस्तक।

Rs. 11.00 H 161 ISBN 81-7011-310-5